काली सिद्धि



काली सिद्धि

अमित पाकेट बुक्स

महाकाली सिद्धि

(अनेकों यक्षिणी, योगिनी साधनाओं सहित)



लेखक

पंडित वाई.एन.झा तूफान

विश्व विख्यात ज्योतिषाचार्य एवं तांत्रिक

प्रकाशक: 2212696

महामाया पब्लिकेशन्स

नज़दीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर शहर।

जालन्धर-8

मूल्य 50/-

प्रकाशक :

महामाया पब्लिकेशन्स
नज़दीक चौक अड्डा टांडा,
जालन्धर शहर -144008
फोन : 0181-2212696, 3251696

AMIT POCKET BOOKS

Sakhuja Market, Near Chowk Adda Tanda, Jalandhar City.
☎ (S) 212696 (R) 261421

Typesetting by : *Sunshine Computers* SC

Printed By : Yojana Printing Press, Jalandhar

Writer :

पंडित वाई.एन.झा तूफान

विश्व विख्यात ज्योतिषाचार्य एवं तांत्रिक
मकान न० 61, टोबरी मुहल्ला,
टांडा रोड, (नजदीक देवी तालाब मंदिर)
जालन्धर शहर-144 004 (पंजाब)
फोन न० 0181-490311

विषय सूची

3. माता महाकाली षोड़षोपचार पूजन एवं साधना खण्ड

भूमिका

जगदम्बा महाकाली की सिद्धि करने वाले साधको ! ''आद्या शक्ति'' महाकाली ही ''परमात्मा'' हैं, जो विभिन्न रूपों में विविध लीलाएँ करती हैं। आप ही अंशावतार के भाव से ''ब्रह्मा'' और पालन कर्त्ता के रूप में ''विष्णु'' तथा संहार कर्त्ता के रूप में ''रूद्र'' बन जाती हैं। यही महादेवी दस महाविद्या रूप में सृष्टि के कण—कण में संचार करती हैं। यही आदि के तीन जोड़े उत्पन्न करने वाली ''महालक्ष्मी'' हैं।

शास्त्रों में वर्णित है कि ''महाकाली शक्ति के बिना—शिव शव के समान होते हैं।'' यही परमेश्वरि राजाओं की राज लक्ष्मी, वणिकों की सौभाग्य लक्ष्मी, सज्जनों की शोभा लक्ष्मी हैं। सारांश यह है कि जगत में तमाम जगह परमात्मा रूप महाशक्ति काली ही विविध शक्तियों के रूप में खेल रही हैं।

मातेश्वरी महाकाली के अनेकों रूप हैं, इनमें से किसी भी रूप की सिद्धि यदि मनुष्य कर लेता है तो संसार के श्रेष्ठतम शिखर पर पहुँच जाता है। परन्तु इन महाशक्ति की सिद्धि प्राप्त करना आसान नहीं, भगवती को प्रसन्न करना भी आसान नहीं। फिर साधक उन्हें प्रसन्न करने हेतु मार्ग ढूंढता है, तब उसे—शक्तियों की सिद्धि साधना की आवश्यकता पड़ती है, और वही सिद्धि रहस्य इस छोटी सी अनुपम महाकाली सिद्धि पुस्तक में छुपी हुई है।

आपके कर कमलों में यह पुस्तक प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है क्योंकि इसमें वर्णित सभी सिद्धि विधियाँ व मंत्र मूल प्राचीन महाकाली ग्रन्थ से प्राप्त हुआ है, जिनमें से अनेकों सिद्धियों का स्वयं रिसर्च किया है। सिद्धि विधि और मंत्र का प्राचीन संस्कृत श्लोक का हिन्दी·अनुवाद रूप अक्षरसः किया है। जो साधक संस्कृत भाषा नहीं पढ़ना जानते हैं, वे ''हिन्दी अनुवाद'' रूप पढ़कर ही सिद्धि सम्पन्न करें।

इस परम दिव्य ''महाकाली सिद्धि'' पद्धति में, सिद्धि के अनेकानेक चमत्कारिक विधियों, मंत्रों, यंत्रों, तंत्रों एवं स्तोत्रों का विस्तृत वर्णन वर्णित है, साथ ही महाकाली की ''षोड़शोपचार पूजन'' भी प्राचीन शास्त्रों से लिया है। महाकाली के विविध स्वरूपों की साधना के अलावा अनेकों यक्षिणी, योगिनी साधना तथा दत्तात्रेय तंत्र से प्राप्त अनेकों मारण, उच्चाटन, वशीकरण तंत्र ने इस पवित्र ग्रन्थ में चार—चाँद लगा दिया है, क्योंकि इस प्रयोग में साधक को साधना नहीं करनी पड़ती है।

इस ग्रन्थ में वर्णित यंत्र—मंत्र—तंत्र की सिद्धि महाकाली के किसी भी रूप की सिद्धि हेतु—''सिद्ध गुरू कवच यंत्र'' प्राप्त करना चाहें, या साधना में कोई परामर्श प्राप्त करना चाहें अथवा किसी भी समस्याओं से उबरने हेतु हमारे कार्यालय से सिद्ध यंत्र प्राप्त कर सकते हैं। जीवन का पूर्ण ''भाग्यफल'' प्राप्त करना चाहें तो पत्राचार करें। मैं आपके सभी पत्रों का उत्तर देने हेतु कृत संकल्पित हूँ। **''जय महाकाली''**

लेखक
पंडित वाई० एन० झा ''तूफान''
[विश्व विख्यात ज्योतिषाचार्य व तांत्रिक]
H.No. 61, टोबरी मुहल्ला, टांडा रोड़,
[नजदीक देवी तालाब मंदिर]
जालंधर—144 004 पंजाब, [भारत]
फोन नं० : 0181—490311

1



महाकाली अवतार खण्ड

सृष्टि जगत के सभी देवि देवता एक ही महाशक्ति परमेश्वरि के विविध स्वरूप

आद्या महाशक्ति परमेश्वरि महाकाली के उपासको ! सिद्धि और साधना प्रारम्भ करने से पूर्व यह अच्छी तरह से समझ लें कि सर्वोपरि, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, सर्वाधार, सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता, संहारकर्ता, सगुण, निर्गुण, साकार और निराकर "परमात्मा" वस्तुतः एक ही हैं। वे एक ही अनेक भावों और अनेक रूपों में लीला करते हैं।

हम अपने समझने के लिए मोटे रूप से उनके आठ रूपों का भेद कर सकते हैं। एक–नित्य, विज्ञाना, नन्दधन, निर्गुण निराकार, माया रहित–एक रस ब्रह्म, दूसरे–सगुण, सनातन, सर्वेश्वर, सर्वशक्तिमान, अव्यक्त निराकार परमात्मा, तीसरे–सृष्टिकर्ता प्रजापति ब्रह्मा, चौथे–पालन कर्ता भगवान विष्णु, पाँचवें–संहार कर्ता भगवान रूद्र, छठे–श्री राम, श्री कृष्ण, श्री दुर्गा, श्री काली आदि साकार रूपों में अवतरित रूप, सातवें असंख्य जीवात्मा रूप से विभिन्न जीव शरीरों में व्याप्त और आठवें–विश्व ब्रह्माण्ड रूप विराट। ये आठों रूप एक ही परमात्मा के हैं।

इन्हीं समग्र रूप प्रभु को रुचि वैचित्र्य के कारण संसार में लोग ब्रह्म, सदाशिव, महाविष्णु, ब्रह्मा, महाशक्ति, राम, कृष्ण, गणेश, सूर्य, अल्लाह, गॉड आदि भिन्न–भिन्न नाम रूपों में विभिन्न प्रकार से पूजते हैं। वे सच्चिदानन्द धन अनिवर्चनीय प्रभु एक ही हैं, लीला भेद से उनके नाम रुपों में भेद है। और इसी भेद–भाव के कारण सिद्धि–साधना और उपासना में भेद है।

यद्यपि सिद्धि करने वाले साधकों को अपने इष्टदेव के नाम रूप में अनन्यता रखनी चाहिए तथा उसी की पूजा–साधना शास्त्रोक्त पूजन पद्धति के अनुसार करनी चाहिए, परन्तु इतना निरन्तर स्मरण रखना चाहिए कि शेष सभी रूप और नाम भी उसी के इष्ट देव के हैं। उसी के प्रभु इतने विभिन्न नाम रूपों में समस्त विश्व के द्वारा पूजित होते हैं। उनके अतिरिक्त अन्य कोई है ही नहीं। तमाम जगत

में वस्तुतः एक वही फैले हुए हैं। जो विष्णु को पूजता है वह अपने आप ही शिव, ब्रह्मा, राम, कृष्ण आदि को पूजता है और जो राम, कृष्ण को पूजता है वह ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि को। एक ही पूजा से स्वभाविक ही सभी की पूजा हो जाती है, क्योंकि एक ही सब बने हुए हैं, परन्तु जो किसी एक रूप से अन्य समस्त रूपों को अलग मानकर औरों की अवज्ञा करके केवल अपने इष्ट एक ही रूप को अपनी ही सीमा में आवद्ध रखकर पूजता है वह अपने परमेश्वर को छोटा बना लेता है, उनको सर्वेश्वर के आसन से नीचे उतारता है। इसलिए उसकी पूजा सर्वोपरि सर्वमय भगवान की न होकर "एक देश निवासी स्वरूप" देव विशेष की होती है और उसे वैसा भी उसका अन्य फल भी मिलता है। अतएव पूजो एक ही रूप को परन्तु शेष सब रूपों को समझो उसी एक के वैसे ही सर्वशक्ति सम्पन्न अनेक रूप।

असल में वह एक "महाशक्ति" ही "परमात्मा" हैं जो विभिन्न रूपों में विविध लीलाएँ करती हैं। परमात्मा के पुरुष वाचक सभी रूप इन्हीं अनादि, अविनाशिनी, सर्ववर्चनीया, सर्व शक्तिमयी, परमेश्वरी आद्या शक्ति के ही हैं। यह महाशक्ति अपनी माया शक्ति को जब अपने अन्दर छिपाए रखती हैं, उससे कोई क्रिया नहीं करती, तब निष्क्रिय, "शुद्ध ब्रह्म" कहलाती हैं। जब उसे विकासोन्मुख करके एक से अनेक होने का संकल्प करती हैं तब स्वयं ही पुरुष रूप से मानो अपनी ही प्रकृति रूप योनि में संकल्प द्वारा चेतन रूप बीज स्थापन करके सगुण निराकार परमात्मा बन जाती हैं। इसी की अपनी शक्ति से, गर्भाश्य में वीर्य स्थापना से होने वाले विकार की भाँति उस प्रकृति में क्रमशः सात विकृति होती है।

[महतत्त्व–समीष्ट बुद्धि, अंहकार और सूक्ष्म पञ्चतन्मात्राएँ–मूल प्रकृति के विकार होने से इन्हें विकृति कहते हैं, परन्तु इनसे अन्य सोलह विकारों की उत्पत्ति होने के कारण इन सातों के समुदाय को प्रकृति भी कहते हैं।]

फिर अंहकार से मन और दस [ज्ञान कर्मरूप] इन्द्रियों और पञ्चतन्मात्रा से पञ्च महाभूतों की उत्पति होती है। [इसीलिए इन दोनों के समुदाय का नाम प्रकृति विकृति है। मूल प्रकृति के सात विकार, साप्तधा विकार रूपा प्रकृति से उत्पन्न सोलह विकार, और स्वयं मूल प्रकृति–ये कुल मिलाकर चौबीस तत्व हैं] यों वह महाशक्ति ही अपनी प्रकृति सहित चौबीस तत्वों के रूप में यह स्थूल संसार बन जाती है और जीव रूप से स्वयं पच्चीसवें तत्व रूप में प्रविष्ट होकर खेल खेलती है। चेतन परमात्मा रूपिणी महाशक्ति के बिना जड़ प्रकृति से यह सारा कार्य कदापि सम्पन्न नहीं हो सकता।

इस प्रकार महाशक्ति विश्व रूप विराट् पुरुष बनती हैं और इस सृष्टि के निर्माण में स्थूल निर्माता प्रजापति के रूप में आप ही अंशावतार भाव से ब्रह्मा और पालन कर्ता के रूप में विष्णु तथा संहार कर्ता के रूप में रूद्र बन जाती है। और ये ब्रह्मा, विष्णु, शिव प्रभृति अंशवतार भी किसी कल्प में दुर्गा रूप से होते हैं, किसी महाविष्णु रूप से, किसी में महाशिव रूप से, किसी में श्रीराम रूप से और किसी में श्रीकृष्ण रूप से। एक ही शक्ति विभिन्न कल्पों में विभिन्न नाम रूपों से सृष्टि रचना करती है। इस विभिन्नता का कारण और रहस्य भी उन्हीं को ज्ञात है। यों अनन्त

ब्रह्माण्डों में महाशक्ति असंख्य ब्रह्मा, विष्णु, महेश बनी हुई है। और अपनी माया शक्ति से अपने को ढँककर आप ही जीव संज्ञा को प्राप्त हैं। ईश्वर, जीव, जगत तीनों आप ही हैं। भोक्ता, भोग्य और भोग तीनों आप ही हैं। इन तीनों की अपने ही से निर्माण करने वाली, तीनों में व्याप्त रहने वाली भी आप ही हैं।

परमात्मा रूपा यह महाशक्ति स्वयं अपरिणामिनी हैं, परन्तु इन्हीं की माया शक्ति से सारे परिणाम होते हैं। यह स्वभाव से ही सत्ता देकर अपनी माया शक्ति को क्रीड़ाशीला अर्थात् क्रियाशीला बनाती हैं, इसलिए इनके शुद्ध विज्ञानानन्द धन नित्य अविनाशी एक इस परमात्म रूप में कदापि कोई परिवर्तन न होने पर भी इनमें परिणाम दीखता है। क्योंकि इनकी अपनी शक्ति माया का विकसित स्वरूप नित्य क्रीड़ामय होने के कारण सदा बदलता ही रहता है और यह माया शक्ति सदा इन महाशक्ति से अभिन्न रहती है। वह महाशक्ति परमेश्वरि की ही स्व-शक्ति है, और शक्तिमान से शक्ति कभी पृथक नहीं हो सकती, चाहे वह पृथक दीखे भले ही। अतएव शक्ति का परिणाम स्वयमेव ही शक्तिमान पर आरोपित हो जाता है, इस प्रकार शुद्ध ब्रह्म या महाशक्ति में परिणाम वाद सिद्ध होता है।

और चूँकि संसार रूप से व्यक्त होने वाली यह समस्त क्रीड़ा महाशक्ति की अपनी शक्ति माया का ही खेल है और माया शक्ति उनसे अलग नहीं, इसलिए यह सारा उन्हीं का ऐश्वर्य है। उनको छोड़कर जगत में और कोई वस्तु ही नहीं। दृश्य, दृष्टा और दर्शन तीनों वह आप ही हैं, अतएव जगत को मायिक बतलाने वाला माया वाद भी इस हिसाब से ठीक ही है। इसी प्रकार माया शक्ति ही अपने माया रूप दर्पण में अपने विविध श्रृंगारों और भावों को देखकर जीव रूप से आप ही मोहित होती हैं। इससे आभाशवाद भी सत्य है।

परमात्मा रूप महाशक्ति की उपर्युक्त माया शक्ति को अनादि और शान्त कहते हैं। सो उसका अनादि होना तो ठीक ही है, क्योंकि वह शक्तिमयी महाशक्ति की अपनी शक्ति होने से उसी की भाँति अनादि है। परन्तु शक्तिमयी महाशक्ति तो अविनाशिनी है, फिर उसकी शक्ति माया अन्तवाली कैसे होगी ? इसका उत्तर यह है कि वास्तव में वह अन्तवाली नहीं है। अनादि, अनन्त, नित्य, अविनाशी परमात्मरूपा महाशक्ति की भाँति उसकी शक्ति का भी कभी विनाश नहीं हो सकता, परन्तु जिस समय वह कार्य करण विस्तार रूप समस्त संसार सहित महाशक्ति के सनातन अव्यक्त परमात्म रूप में लीन रहती है, क्रियाहीन रहती हैं, तब तक के लिए वह अदृश्य या शान्त हो जाती हैं और इसी से उसे शान्त कहते हैं। इस दृष्टि से उसको शान्त कहना सत्य ही है।

कोई-कोई परमात्म रूपा महाशक्ति की इस ''माया शक्ति'' को ''अनिवर्चनीय'' कहते हैं, सो भी ठीक है। क्योंकि यह शक्ति उस सर्वशक्तिमती महाशक्ति की अपनी ही तो शक्ति है। जब वह अनिवर्चनीय है, तब उसकी अपनी शक्ति अनिवर्चनीय क्यों न होगी ?

कोई-कोई कहते हैं कि इस माया शक्ति का ही नाम महाशक्ति, प्रकृति, विद्या, अविद्या, ज्ञान, अज्ञान आदि है, महाशक्ति अलग वस्तु नहीं है। सो उनका

कथन भी एक दृष्टि से सत्य ही है। क्योंकि मायाशक्ति परमात्मरूपा महाशक्ति की ही शक्ति है, और वही जीवों को बाँधने के लिए अज्ञान या अविद्या रूप से और उनकी बन्धन मुक्ति के लिए ज्ञान या विद्या रूप से अपना स्वरूप प्रकट करती है, तब इनसे भिन्न कैसे रही ? हाँ, जो माया शक्ति को ही शक्ति मानते हैं और महाशक्ति का कोई अस्तित्व ही नहीं मानते वे तो माया के अधिष्ठान ब्रह्म को ही अस्वीकार करते हैं, इसलिए वे अवश्य ही माया के चक्कर में पड़े हुए हैं।

कोई इस परमात्म रूपा महाशक्ति को "निर्गुण" कहते हैं और कोई "सगुण"। ये दोनों बातें भी ठीक हैं, क्योंकि उस एक के ही तो ये दो नाम हैं। जब मायाशक्ति क्रियाशील रहती है तब उसका अधिष्ठान महाशक्ति सगुण कहलाती है। और जब यह महाशक्ति में मिली रहती है, तब महाशक्ति निर्गुण कहलाती है। इस अनिवर्चनीया परमात्मा रूपा महाशक्ति में परस्पर विरोधी गुणों का नित्य सामंजस्य है। वह जिस समय निर्गुण हैं उस समय ही उनमें गुणमयी महाशक्ति छिपी हुई मौजूद है और जब वह सगुण कहलाती है उस समय भी वह गुणमयी माया शक्ति की अधीश्वरी और सर्वतन्त्र स्वतंत्र होने से वस्तुतः निर्गुण ही है। उनमें निर्गुण और सगुण दोनों लक्षण सभी समय वर्तमान है। जो जिस भाव से उन्हें देखता है, उसको उनको वैसा ही रूप भान होता है। असल में वह कैसी हैं, क्या हैं इस बात को वही जानती हैं।

कोई-कोई कहते हैं कि शुद्ध ब्रह्म में माया शक्ति नहीं रह सकती, माया रही तो वह शुद्ध कैसे ? बात समझने की है। "शक्ति" कभी शक्तिमान से पृथक् नही रह सकती। यदि शक्ति नहीं है तो उसका "शक्तिमान" नाम नहीं हो सकता, और शक्तिमान न हो तो शक्ति रहे कहाँ ? अतएव शक्ति सदा ही शक्तिमान में रहती है।

सर्वशक्ति स्वरूपा माता महाकाली
["श्री देव्यथर्वशीर्षम" से प्राप्त]

जगत जननी मातेश्वरी महाकाली के साधकों ! मातेश्वरी के विविध रूपों की साधना आरम्भ करने से पूर्व यह ज्ञात करना आवश्यक है कि माता महाकाली हैं कौन ?

इस गुत्थी को सुलझाने के लिए एक बार ब्रह्मादिक सभी देवताओं नें उनसे पूछा-हे महादेवि ! तुम कौन हो ?

1. साब्रवति—अहं ब्रह्म स्वरूपिणी। मत्तः प्रकृति पुरूषात्मकं जगत। शून्यं चा शून्यं च।

हिन्दी अनुवाद-उसने कहा, मैं ब्रह्मा स्वरूप हूँ, मुझसे प्रकृति पुरूषात्मक सद्रूप और असद्रूप जगत उत्पन्न हुआ है।

2. अहमा नन्दा ना नन्दो। अहं विज्ञानाविज्ञाने ।

अहं ब्रह्मा ब्रह्माणी वेदितब्ये। अहं पञ्च भूतान्य पञ्चभूतानि। अहमखिलं जगत्।

हिन्दी अनुवाद–मैं आनन्द और आनन्द स्वरूपा हूँ। मैं विज्ञान और अविज्ञान रूपा हूँ। अवश्य जानने योग्य ब्रह्म और अब्रह्म भी मैं ही हूँ। पञ्चीकृत और अपञ्चीकृत महाभूत मैं ही हूँ। यह सारा दृश्य जगत मैं ही हूँ।

3. वेदोऽहम अवेदोऽहम विद्या अहम अविद्या अहम्।
अजाह मनजाहम अर्धश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम्।

हिन्दी अनुवाद–वेद और अवेद भी मैं हूँ। विद्या और अविद्या मैं, अजा और अनजा भी मैं, नीचे–ऊपर, अगल–बगल मैं ही हूँ।

4. अहं रूद्रेभिर्वसुभिश्चरामि अहमादित्यै रूत्त विश्वेदेवैः।
अहं मित्रा वरूणा वुभो बिभर्मि अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ।

हिन्दी अनुवाद–मैं रूद्रों और वसुओं के रूप में संचार करती हूँ। मैं आदित्यों और विश्वदेवों के रूप में फिरा करती हूँ। मैं दोनों मित्र वरूण का, इन्द्राग्नि का और दोनों अश्विनी कुमारों का पोषण करती हूँ।

5. अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि अहं विष्णु।
मुरूक्रमं ब्रह्माण्मुत प्रजापति दधामि॥

हिन्दी अनुवाद–मैं सोम, त्वष्टा, पूषा और भग को धारण करती हूँ। त्रैलोक्य को आक्रमण करने के लिए विस्तीर्ण पादक्षेप करने वाले विष्णु, ब्रह्मदेव और प्रजापति को मैं ही धारण करती हूँ।

6. अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते।
अहं राष्ट्रीसङ्गमणी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्॥
अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम चोनिरप्स्वन्तः समुद्रे।
य एवं वेद स दैवीं सम्पद माप्नोति।

हिन्दी अनुवाद–"देवों की उत्तम छवि पहुँचाने वाले और सोम रस निकालने वाले यजमान के लिए छवि द्रव्यों से युक्त धन धारण करती हूँ। मैं सम्पूर्ण जगत की ईश्वरी, उपासकों को धन देनेवाली ब्रह्म रूप और यज्ञाहों में [यजन करने योग्य देवों में] मुख्य हूँ। मैं आत्म स्वरूप पर आकाशादि निर्माण करती हूँ। मेरा स्थान आत्म स्वरूप को धारण करने वाली बुद्धि वृत्ति में है। हमें जो इस प्रकार जानता है वह दैवी सम्पत्ति लाभ करता है।"

"मैं ही आदि के तीन जोड़े उत्पन्न करने वाली– "महालक्ष्मी" हूँ। मेरी ही शक्ति से ब्रह्मादि देवता बनते हैं, जिनसे विश्व की उत्पत्ति होती है। मेरी ही शक्ति से विष्णु और शिव प्रकट होकर विश्व का पालन और संहार करते हैं। दया, क्षमा, निद्रा, स्मृति, क्षुधा, तृष्णा, तृप्ति, श्रद्धा, भक्ति, धृति, मति, तुष्टि, पुष्टि, शान्ति, कान्ति, लज्जा आदि मेरी ही महाशक्ति की शक्तियाँ हैं। मैं ही गोलोक में श्री राधा, साकेत में श्री सीता, क्षीरोद सागर में लक्ष्मी, दक्ष कन्या सती, दुर्गाति नाशिनी मेनका पुत्री दुर्गा हैं। मैं ही वाणी, विद्या, सरस्वती, सावित्री और गायत्री हैं। मैं ही सूर्य की प्रभा, पूर्ण चन्द्र की सुधावर्षिणी शोभाशक्ति, अग्नि की दाहिका शक्ति, वायु की

बहन शक्ति, जल की शीतलता शक्ति, धरा की धारणा शक्ति और शल्य की प्रसूति शक्ति हैं।''

''मैं ही तपस्वियों का तप, ब्रह्मचारियों का ब्रह्मतेज, गृहस्थों की सर्वाश्रम आश्रयता, वानप्रस्थों की संयमशीलता, सन्यासियों का त्याग, महापुरुषों की महत्ता और मुक्त पुरुषों की मुक्ति हूँ। मैं ही शूरों का बल, दानियों की उदारता, माता-पिता का वात्सल्य, गुरू की गुरूता, पुत्र की और शिष्य की गुरूजन भक्ति, साधुवों की साधुता, चतुरों की चातुरी और मायावियों की माया हैं। मैं ही लेखकों की लेखन शक्ति, न्यायी नरेशों की प्रजापालन शक्ति और प्रजा की राज भक्ति हूँ।''

''मैं ही सदाचारियों की दैवी-सम्पत्ति, मुमुक्षुओं की षट-सम्पति, धनवानों की अर्थ सम्पति और विद्धानों की विद्या-सम्पत्ति, धनवानों की अर्थ सम्पति और विद्धानों की विद्या-सम्पति हूँ। मैं ही ज्ञानियों की ज्ञान शक्ति, प्रेमियों की प्रेम शक्ति, वैराग्यवानों की वैराग्य शक्ति और भक्तों की भक्ति शक्ति हूं। मैं ही राजाओं की राज लक्ष्मी वणिकों की सौभाग्य लक्ष्मी, सज्जनों की शोभा लक्ष्मी और श्रेयार्थियों की श्री हूँ। मैं ही पति की पत्नी प्रिती, और पत्नी की पतिव्रता शक्ति हूँ। सारांश यह कि तमाम जगत मैं ही विविध शक्तियों के रूप में खेल रही हूँ। तमाम जगह स्वभाविक ही मेरी ही पूजा हो रही है। जहाँ मैं नहीं वहीं शून्यता है।''

अतः साधको ! यह अच्छी तरह से समझ ले कि माता महाकाली ही सर्वकारण रूप प्रकृति की आधारभूता होने से महाकारण हैं, यही ''माया-धीश्वरी'' हैं, यहीं सृजन-पालन-संहारकारिणी आद्या नारायणि शक्ति हैं, और यही प्रकृति के विस्तार के समय भर्ता, भोक्ता, और ''महेश्वर'' होती हैं। परा और अपरा दोनों प्रकृतियाँ इन्हीं की हैं अथवा यही दो प्रकृतियों के रूप में प्रकाशित होती हैं। इनमें द्वेता द्वैता दोनों का समावेश है। यही वैष्णवों की श्री नारायण और महालक्ष्मी, श्रीराम और सीता, श्रीकृष्ण और राधा, शैवों की श्री शंकर और उमा, गाणपत्यों की श्रीगणेश और ऋद्धि-सिद्धि, सौरों की श्री सूर्य और उषा, ब्रह्मवादियों की शुद्ध ब्रह्म और ब्रह्म विद्या हैं और शक्तियों की महादेवी हैं। यही पंचमहाशक्ति, दश महाविद्या, नवदुर्गा है। यही अन्नपूर्णा, जगद्धात्री, कात्यायनी, लीलाताम्बा हैं। यही शक्तिमान हैं, यही शक्ति हैं, यही नर हैं, यही नारी हैं। यही माता, धाता, पितामह हैं, सब कुछ यही हैं। सबको सर्वतोभाव से इन्हीं के शरण में जाना चाहिए।

परमेश्वरि महाकाली के अवतारों की विभिन्न कथाएँ

माता महाकाली के साधको ! ''आद्या शक्ति'' महाकाली के रूप में एक बार नहीं अनेकों बार अवतरित हुई हैं। जब-जब भी सृष्टि संहार करने की बारी आई है या जब-जब भी भक्तों ने उन्हें पुकारा है, तब-तब वे दुष्टों के संहार हेतु महाकाली रूप में अवतरित हुई हैं। जिसमें कुछ संक्षिप्त कथाएं इस प्रकार हैं-

प्रलय काल में सम्पूर्ण संसार के जल मग्न होने पर भगवान विष्णु शेष शैय्या पर योगनिद्रा में सो रहे थे। उस समय भगवान के ''कर्णकीट'' से उत्पन्न ''मधु

और कैटभ'' नामक दो घोर राक्षस ब्रह्मा जी को मारने को उद्यत हो गए। भगवान के नाभि कमल में स्थित प्रजापति ब्रह्मा ने असुरों को देखकर भगवान को जगाने के लिए एकाग्र हृदय से ''हरि'' भगवान के नेत्र कमल स्थित योगनिद्रा महाकाली की स्तुति की–

''हे देवि ! तू ही इस जगत की उत्पत्ति, स्थिति और संहार करने वाली हैं। तू ही महाविद्या, महामाया, महामेघा, महास्मृति और मोह स्वरूपा हैं। दारूण कालरात्रि, महारात्रि और मोहरात्रि भी तू ही है। तूने जगत की उत्पति स्थिति और लय करने वाले साक्षात भगवान विष्णु को भी योगनिद्रा के वश में कर दिया है और विष्णु शंकर और मैं [ब्रह्मा] शरीर ग्रहण करने को वाधित किए गये हैं। ऐसी महामाया शक्ति की स्तुति कौन कर सकता है ? हे देवि ! अपने प्रभाव से इन असुरों को मोहित कर मारने के लिए कृपया भगवान को जगाईये।''

इस प्रकार स्तुति करने पर वह महामाया भगवती भगवान के नेत्र, मुख, नासिका, बाहु तथा हृदय से बाहर निकलकर प्रत्यक्ष खड़ी हो गई। भगवान भी उठे और देखा कि दो भयंकर राक्षस ब्रह्मा को खाने के लिए उद्यत हो रहे हैं। ब्रह्मा की रक्षा के लिए स्वयं भगवान उनसे युद्ध करने लगे। युद्ध करते–करते पाँच हजार वर्ष बीत गए, परन्तु वे राक्षस नहीं मरे। तब महामाया ने उन राक्षसों की बुद्धि मोहित कर दी, जिससे वे अभिमान पूर्वक विष्णु भगवान से कहने लगे कि–''हम तुम्हारे युद्ध से अति संतुष्ट हुए हैं, तुम इच्छित वर मांगों।'' भगवान कहने लगे– ''यदि आप मुझे वर दी देना चाहते हैं तो यही वर दीजिए कि आप दोनों मेरे द्वारा मारे जायें।''

''मधु–कैटभ'' ने ''तथास्तु'' कहा और बोले कि–''जहाँ पृथ्वी जल से ढकी हुई हो वहाँ हमको नहीं मारना।'' अन्त में भगवान ने उनके शिरों को अपनी जंघावों पर रखकर चक्र से काट डाला। इस प्रकार देवों के कार्य सिद्ध करने के लिए आद्या शक्ति जगदम्बा ने ''महाकाली'' का रूप धारण किया।

भगवान शंकर की जटा से महाकाली अवतरण कथा

''महाशिवपुराण'' के रूद्र सहिता में ब्रह्मा जी कहते हैं कि–''हे नारद ! पूर्वकाल में समस्त महात्मा मुनि प्रयाग में यज्ञ हेतु उपस्थित हुए थे। उस यज्ञ में सनकादिका सिद्ध गण, देवर्षि, सप्तऋषि, प्रजापति तथा भगवान शंकर भी पधारे थे। उसी समय प्रजापतियों के पति प्रभु ''दक्ष'' जो भगवान शंकर के श्वसुर भी हैं, पधारे। वे सबके सम्मानीय थे, क्योंकि उस समय वे पूरे ब्रह्माण्ड के अधिपति बनाए गये थे।''

उनके आते ही समस्त देव, ऋषियों नें नतमस्तक हो स्तुति और प्रणाम के द्वारा दोंनों हाथ जोड़कर उत्तम तेजस्वी दक्ष का आदर सत्कार किया। परन्तु भगवान शंकर ने उनके सामने मस्तक नहीं झुकाया। इस पर दक्ष प्रजापति अति क्रोधित होकर उच्च स्वर में बोल उठे–''देवता, असुर, श्रेष्ठ ब्राह्मण, ऋषि सभी

मेरे चरणों पर सिर झुकाते हैं। परन्तु यह जो [भगवान शंकर की ओर उँगली से इंगित करते हुए] प्रेतों और पिशाचों से घिरा हुआ महामनस्वी बनकर बैठा है, वह दुष्ट मुझे उठकर क्यों नहीं प्रणाम करता ?"

श्मशान में निवाश करने वाला यह निर्लज्ज हो गया, यह भूतों और पिशाचों के बीच में मतवाला हो गया, अतः इसे "यज्ञ से बहिष्कृत" कर दिया जाये।

श्री दक्ष ने भगवान शंकर से बदला लेने के ख्याल से कुछ ही दिनों के बाद एक बहुत बड़े यज्ञ का आयोजन करवाया। उस यज्ञ में सभी देवि-देवताओं को आमंत्रित किया किन्तु भगवान शंकर को नहीं बुलाया।

जब यज्ञ स्थल की ओर राजा दक्ष के यहाँ सभी देवता और ऋृषिगण जा रहे थे तब दक्ष कन्या देवी सती गंधमादन पर्वत पर धारा गृह में सखियों के साथ भांति-भांति की क्रिडाएँ कर रही थी। संयोग वश उस समय रोहिणी के साथ दक्ष यज्ञ में जाते हुए चन्द्रमा को देखा। देखकर वे अपनी हितकारिणी श्रेष्ठ सखी विजया से बोली-"हे विजये ! जल्दी जाकर पूछ तो आज ये चन्द्रदेव रोहिणी के साथ कहाँ जा रहे हैं ?"

सती के इस प्रकार कहने पर विजया तुरन्त उनके पास गई और शिष्टचार से पूछा-"चन्द्रदेव ! आप कहाँ जा रहे हैं ?" विजया का यह प्रश्न सुनकर चन्द्रदेव ने अपनी यात्रा का उद्देश्य आदर पूर्वक बताया। दक्ष के यहाँ होने वाले यज्ञोत्सव आदि का सारा वृत्तान्त कहा।

सारी बातें सुनकर विजया बड़ी उतावली के साथ देवी सती के पास आयी और चन्द्रमा ने जो कुछ कहा था, वह सब उनसे कह सुनाया। उसे सुनकर देवी सती भगवान शंकर से जाकर "यज्ञ स्थल" में जाने की प्रार्थना करने लगी। सती की बातें सुनकर "महेश्वर" मधुर वाणी में बोले-"देवी ! तुम्हारें पिता दक्ष मेरे विशेष द्रोही हो गये हैं, अतः हमें यज्ञ में आने का निमंत्रण नहीं दिया। जो लोग बिना बुलाये दूसरे के घर जाते हैं, वे वहां अनादर पाते हैं, जो मृत्यु से भी बढ़कर कष्टदायक है। अतः प्रिये ! तुमको और मुझको उस यज्ञ में नहीं जाना चाहिए।"

भगवान महेश्वर के ऐसा कहने पर सती रोष पूर्वक बोली-"हे शम्भो ! आप सबके "ईश्वर" हैं। जिनके जाने से यज्ञ सफल होता है, उन्हीं आपको मेरे दुष्ट पिता ने इस समय आमंत्रित नहीं किया है। प्रभो ! उस दुरात्मा का अभिप्राय क्या है ? यह मैं जानना चाहती हूँ, अतः आप मुझे वहाँ जाने की आज्ञा दें।"

शिव ने कहा-"हे देवी ! यदि तुम्हारी रुचि वहां अवश्य जाने के लिए हो ही गयी है तो आज्ञा से तुम शीघ्र अपने पिता के यज्ञ में जाओ।"

रूद्र का आदेश पाने पर आभूषणों से अलंकृत हो देवी सती पिता के घर की ओर चली। परमात्मा शिव ने उन्हें सुन्दर वस्त्र, आभूषण और उज्ञवल छत्र प्रदान कर विदाई दी। भगवान शिव की आज्ञा से साठ हजार रूद्रगण उनके साथ चले।

जब भगवती सती दक्ष के भवन द्वार पर पहुँची तो अपने वाहन नन्दी से उतरकर अकेली ही शीघ्रता पूर्वक यज्ञशाला के भीतर चली गयी। सती को आया

देखकर उनकी यशस्विनी माता असिक्री (विरिणी) और बहनों ने उनका यथोचित आदर सत्कार किया, परन्तु दक्ष ने क्रोध से उनकी तरफ देखा भी नहीं।

यज्ञ स्थल में भगवान शिव का भाग नही देखकर तिरस्कृत सती अपने पिता से क्रोध युक्त होकर बोली–"प्रजापते ! आपने परम मंगल कारक भगवान शिव को इस यज्ञ में क्यों नहीं बुलाया, आपने उन्हें समान देव समझकर क्यों अनादर किया ? हे ब्रह्मा, हे विष्णु आदि देवता मुनियों ! अपने प्रभु भगवान शिव के आए बिना आप लोग इस यज्ञ में कैसे चले आए ? सभी देवगण उनकी बातों पर चुप थे।"

इस पर दक्ष बोले–"भद्रे ! तुम्हारे बहुत कहने से क्या लाभ। इस समय यहां तुम्हारा कोई काम नहीं है और तुम यहां आयी ही क्यों ? तुम्हारा पति शिव अमंगल रूप हैं। वे कुलीन भी नहीं है। वेद से बहिष्कृत और भूतों–प्रेतों एवं पिशाचों का स्वामी हैं। अतः उसे बुलाकर हमें क्या यज्ञ भ्रष्ट करना था। तुम्हें भी ठहरना है तो ठहरो वरना उल्टी पांव वापस जाओ।"

इस तरह पिता के द्वारा भगवान शंकर की निन्दा सुनकर सती व्याकुल हो उठी और उसी वक्त अपने तन में ब्रह्माग्नि पैदा कर भस्म हो गयी। चारों ओर हाहाकार छा गया। सभी रूद्रगण यज्ञ स्थल को नष्ट करने लगे, किन्तु देवताओं की ताकत के सामने रूद्रगण टिक न सके और जान बचाकर कुछ रूद्रगण भगवान शंकर के पास भाग कर पहुँचे।

गणों ने आकर महेश्वर से कहा–"हे महादेव ! दक्ष बड़ा दुरात्मा और घंमडी है, उसने देवी सती का वहां पर अपमान किया, फलस्वरूप वे योगाग्नि द्वारा जल कर भस्म हो गयी। ये देख दस हजार से अधिक शिव गण लज्जा वश शस्त्रों द्वारा अपने ही अंगों को वहां काट–काट कर मर गये। शेष हमलोग दक्ष का यज्ञ विध्वंश कर डालते किन्तु भृगु के "मंत्र बल" का सामना न कर सके।"

रूद्रगणों के मुख से सारी बातें सुनकर सर्वेश्वर रूद्र ने उस समय बड़ा भारी क्रोध प्रकट किया। संहारकारी शिव ने अपने सिर से एक जटा उखाड़ी और उसे रोष पूर्वक पर्वत के ऊपर दे पटका। भगवान शंकर के पटकने से उस जटा के दो टुकड़े हो गये और महाप्रलय के समान भयंकर शब्द प्रकट हुआ।

हे नारद ! उस जटा के पूर्व भाग से महा भयंकर, महाबली "वीरभ्रद" प्रकट हुए, जो समस्त शिवगणों के अगुआ हैं तथा जटा के दूसरे भाग से "महाकाली" उत्पन्न हुई, जो बड़ी भयंकर दिखायी देती थी। फिर इन दोनों ने जाकर दक्ष सेना सहित को मार गिराया। तत्पश्चात् कुछ समय बाद दक्ष प्रजापति शिव जी द्वारा "पुर्नजीवित" हुए थे।

इस प्रकार आदिशक्ति माहेश्वरी महाकाली पुनः शुम्भ–निशुम्भ व रक्तबीज को वध करने हेतु भी अवतरित हुई थी। जब–जब भी भक्ति भाव से भक्तों ने उन्हें पुकारा है, तब–तब वे धरती पर अवतरित होकर धर्म और सत्य की रक्षा करती रही हैं।

आद्या शक्ति महाकाली के रूप, आसन और अस्त्र-शस्त्र

साधकों ! भगवती महामाया मातेश्वरी काली के अनेक रूप हैं-किसी के चौंसठ भुजाएँ हैं। किसी के बत्तीस, किसी के आठ, किसी के चार तो किसी के दो ही। किसी ने जिह्वा निकाल रखी है। किसी के हाथ में कमल है। किसी के हाथ में नरमुंड,किसी के कत्तरी (कैंची) किसी के परशु है। कोई मुर्दे पर खड़ी है। कोई अट्टहास करती हुई सुरापान कर रही है। कोई नग्न हैं। उनकी शरीराकृति महाडरावनी हैं। उसकी दष्ट्रा (दंत) बड़ी तीक्ष ण अतएव महा भयावन है। ऐसे महाभयानक रूप वाली वह आदि माया हंस रही हैं। श्मशान ही उनकी आवास भूमि है। जिह्वा बाहर निकल रही है। गले में मुंडों की माला है। एक हाथ में नरमुंड और एक हाथ में खड्ग है। एक में अभय मुद्रा है, प्यार है दुलार है और एक में भक्तों को देने हेतु दया का भंडार है, सुखी संसार और मोक्ष है। महाकाली प्रलय की अधिष्ठात्री और भक्तों को शीघ्र प्रदान करने वाली "वरदात्री" हैं। इनकी साधना से मानव कुछ भी प्राप्त कर सकता है।

काली संहार की देवी हैं। इसकी उत्पत्ति भी असुरों के विनाश के लिए देवी आद्या के भ्रू-विलाश से ही हुई है। यही महामाया रूप से सृष्टि के आदि और अन्त में सर्वदा विद्यमान रहती हैं। यह शक्ति स्वरूपा हैं। इसके बिना शिव "शव" के समान हैं और संहार करने में असमर्थ हैं। काली "काल" का भी विनाश कर देने वाली होने के कारण "काल विनाशिनी" कही गयी हैं। काली का जहाँ "रौद्र रूप" विख्यात हैं, वहीं सौम्य रूप में भी इनकी पूजा-अर्चना की जाती है। संसार में सर्व प्रथम "दक्षिण भैरव" ने इनकी पूजा वन्दना की थी, इसलिए ये आद्या भवानी "दक्षिण" काली के नाम से विशेष रूप में विख्यात हैं। भगवती भक्तों एवं देवगणों की कार्य सिद्धि के लिए समय-समय पर अवतरित होती रहती हैं और काली "काल" से भी सर्वोपरि हैं।

"वाक्य प्रदीप" में लिखा हैं कि-

अब्याहताः कला यस्य काल शक्ति मुपाश्रिताः।
जन्माद्यो विकाराः षड्भाव भेदस्य योनयः।
एकस्य सर्व बीजस्य यस्य चेय मनेकधा।
भोक्तृ भोक्त व्यरूपेण भोग रूपेण च स्थितिः॥

अर्थात्-"काल" का दूसरा स्वरूप रूद्र, भैरव या सदा शिव हैं, लेकिन यह काली के चरणों में स्थित होने से इनका अस्तित्व काली से कम ही जान पड़ता है। जब प्राणी महाकाली का ध्यान करता है तो "काल" अर्थात् महादेव-महारूद्र या शिव काली के चरणों में स्थित होने से इसका अस्तित्व महाकाली से कम ही प्रतीत किया जा सकता है।

भगवान रूद्र और आद्या शक्ति परमेश्वरी काली

भगवान शिव जो "शक्तिमान" हैं, उनमें आद्या शक्ति महाकाली भिन्न नहीं हैं। अधिष्ठान से अध्यस्त की सत्ता भिन्न नहीं होती, वह तो अधिष्ठान रूप ही है। शिव एक रस अपरिणामी हैं और शक्ति परिणामी हैं और यह जगत परिणामी शक्ति का ही विलाश है। शिव से शक्ति का आर्विभाव होते ही तीनों लोक और चौदरों भुवन उत्पन्न होते हैं और शक्ति का तिरोभाव होते ही जगत का अत्यन्त अभाव हो जाता है।

"वेदान्त" के नीचे के श्लोकों में इसी बात को स्पष्ट किया गया है–

शक्तिजांत ह्रि संसारं तस्मिन् सति जगत्त्रयम्।
तस्मिन क्षीणे जगत क्षीणं तच्चिकिरस्यं प्रयत्नतः॥

हिन्दी अनुवाद–"शक्ति" का कार्य यह संसार है। शक्ति के आविर्भाव से तीनों ही जगत उत्पन्न होते हैं और शक्ति का तिरोभाव होने से जगत का अत्यन्त अभाव हो जाता है।"

शिव की आद्यास्पन्द रूपा अव्यक्त शक्ति भक्तों के भावनानुसार अनेक रूपों को धारण करती है। जैसे–दुर्गा, महाकाली, राधा, ललिता, त्रिपुरा, महालक्ष्मी, महासरस्वती, अन्नपूर्णा इत्यादि।

क्रिया के अनुसार "शक्ति" के अनेक नाम हैं–चूंकि शिव से इसकी भिन्न सत्ता नहीं हैं, इस कारण इसको [महाकाली या पार्वती को] "शिव की शक्ति" कहते हैं। संसार को उत्पन्न करने की विशेष क्रिया इसमें है–इस कारण इसे "प्रकृति" कहते हैं। यह इन्द्र जाल के समान अनेक पदार्थों को क्षण भर में बना देती हैं। इस कारण इसे "अघटन–घटना घटीयसी माया" भी कहते.हैं। महाकाली आद्या शक्ति भावन ही सम्पूर्ण चराचर जगत की सृष्टि, पालन और संहार की मलिका हैं और सदाशिव ही परब्रह्म स्वरूपा "महाकाल" हैं, जिन दोनों के द्वारा ही समस्त जगत का संचालन होता है।

[दस महाविद्या खण्ड]

मातेश्वरी "महाशक्ति" के अंशों से दस महाविद्याओं की अवतार कथा

उपासको ! एक समय की बात है कि "शक्तिमान" महेश्वर "महाशक्ति" उमा से रूठकर कहीं चलने को तत्पर हुए। भगवती ने कहा हे परमेश्वर ! हे प्राणनाथ ! आप इस प्रकार हमसे रूठकर कहाँ जा रहे हैं ? भगवान शंकर ने उत्तर दिया–"हमारी जहाँ इच्छा होगी वहाँ मैं जाऊँगा।"

भगवती ने मुस्कराते हुए निवेदन किया "हमारे पास से अन्यत्र जाने का विचार आप त्याग दीजिए।" परन्तु भगवान सदा शिव ने भगवती के शब्दों पर ध्यान न देते हुए अन्यत्र जाने के विचार से प्रस्थान कर ही दिया। कुछ दूर जाने पर देखा कि मार्ग अवरूद्ध करके भगवती "श्री महाकाली" सामने खड़ी हैं और भगवान शंकर से बोली-

"इस दिशा में आप नहीं जा सकते।"

पुनः भगवान शंकर ने उस ओर से प्रत्यावर्तित होकर विभिन्न दिशाओं की ओर क्रमशः प्रस्थान किया। परन्तु जिस-जिस दिशा की ओर शंकर भगवान गये, उन-उन दिशाओं में भगवती का कोई न कोई स्वरूप मार्ग रोके हुए उपस्थित रहा।

इस प्रकार "भगवती जगदम्बा" के दस दिशाओं में दस स्वरूप प्रकट हुए। जो "आगम ग्रन्थों" में "दस महाविद्या" के नाम से विख्यात हुए।

इन दस महाविद्याओं के अलग-अलग नाम इस प्रकार हैं-महाकाली, तारा, षोड़शी, भुवनेश्वरी, छिन्न मस्ता, त्रिपुरा भैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमला महाविद्या।

महाविद्या साधना का स्वरूप और महत्व

साधको ! दस महाविद्यायों में-महाकाली, तारा, षोड़शी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, त्रिपुरा भैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमला महाविद्या आती हैं। ये कलियुग में "कल्प वृक्ष" के समान शीघ्र फल प्रदान करने वाली एवं साधक की समस्त कामनावों की पूर्ति में सहायक हैं।

तंत्र की आधार भूत दसों महाविद्याओं से सम्बन्धित दीक्षा यदि गुरू कृपा से किसी को प्राप्त हो जाये, तो व्यक्ति के कई-कई जन्म संवर जाते हैं। महाविद्या दीक्षाएं प्राप्त कर यदि साधक श्रद्धा से साधना सम्पन्न करता है, तो असफलता सम्भव ही नहीं होती। साधना के महत्व को मानव के लिए प्रायः सभी अध्यात्मवेत्ताओं ने स्वीकार किया है। किन्तु इनके स्वरूप को उचित रूप से प्रतिपादित नहीं कर पाए हैं। इसी कारण से साधक साधना में असफलता प्राप्त करते हैं। "दस महाविद्याओं" पर चालीस वर्षों का रीसर्च और अध्ययन के पश्चात् यह ग्रन्थ आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिसे व्यक्ति जीवन में सरलता से अपना सके। साधको ! साधना का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि उसे कुछ पन्नों पर या कुछ शब्दों के द्वारा व्यक्त करना अत्यन्त कठिन है।

किन्तु साधना के महत्व को ध्यान में रखते हुए यदि यह कहें कि साधना ही वह क्रिया है, जिसके माध्यम से मनुष्य जीवन को व्यवस्थित ढंग से संचालित कर सकते हैं, तो कोई अतिशोयक्ति नहीं होगी। मानव शरीर "शिव-शक्ति" सायुज्य का प्रतिफल है, उन्हीं के माध्यम से मनुष्य के शरीर की सारी गतिविधयाँ नियंत्रित होती हैं और इसका मुख्य माध्यम साधना है।

साधना का तात्पर्य-"शरीरं साधयति सः धर्म" अर्थात् शरीर को साध लेना

ही साधना है, जिसके माध्यम से इस शरीर पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है और जीवन का निर्माण किया जा सकता है। जब तक जीवन में साधना नहीं है, तब तक शरीर संतुलित नहीं बन सकता और जब तक स्वस्थ नहीं रहेंगे, तब तक जीवन में पूर्णता नहीं है और इस अधूरे जीवन को पूरा करने के लिए–''महाविद्या साधना'' करना ही एक श्रेष्ठतम मार्ग है।

इन साधनावों में सफलता के लिए ''सद्गुरू'' मार्ग दर्शन एवं आर्शीवाद अत्यन्त आवश्यक है, जिससे साधक मंत्र जप सम्पन्न कर अपने लक्ष्य तक पहुँच सके और आनन्द प्राप्त कर सके, जो जीव का आधार है।

प्रत्येक मानव जब तक वह ''साधना'' को अपने जीवन में नहीं अपनाता है, तब तक उसके अंग–प्रत्यंग के ''महत्वपूर्ण तत्व'' सुप्त अवस्था में होते हैं, जिससे वह जीवन में वांछित प्रगति नहीं कर पाता है। जीवन में ऊँचा उठने की प्रक्रिया केवल उन चिन्तन एवं प्रयास के माध्यम से संभव है, जिसके माध्यम से एक सामान्य मनुष्य पूर्णता तक पहुँच सकता है। एक सामान्य मानव नर से नारायण तक पहुँच सकता है और प्रभु के दर्शन कर सकता है, जो जीवन का आधार है, जो जीवन का चिन्तन है और यदि व्यक्ति दर्शन नहीं कर पाए, तो उसका जीवन व्यर्थ है।

मानव जीवन में प्रायः कुछ न कुछ अभाव बना ही रहता है, सुन्दर पत्नी है तो सन्तान हीं है, यदि सन्तान है तो वह कहना नहीं मानती, पढ़ाई के क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ पाता, व्यवसाय में विशेष प्रगति नहीं हो पाती, शत्रु बाधा एवं आकस्मिक दुघर्टना से मन सदैव भयभीत रहता है। इन कारणों से उसके मन मस्तिष्क पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना स्वभाविक है, जिससे उसके स्वास्थ्य में गिरावट आती हैं।

इन सब कारणों पर यदि नियंत्रण प्राप्त न कर सके तो जीवन एक प्रकार से बेजान एवं बोझिल बन जाता है और साथ ही आत्म कल्याण की सम्भावनाएँ भी नहीं बन पाती। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह पूर्णत्व प्राप्ति के लिए– ''महाविद्या साधना'' सम्पन्न कर अपने जीवन में दुर्भाग्य की लकीर को मिटा दें, मैंने भी कुछ साधना किए हैं आप भी करके देखें, मैं मार्ग दर्शक बनने को भी तैयार हूँ, बस इसके लिए व्यक्ति का दृढ़ निश्चय, प्रयास एवं चिन्तन अति आवश्यक है।

दस महाविद्याएँ 10 प्रकार की शक्तियों का प्रतीक हैं और अलग–अलग कार्यों हेतु शिव के वरदान स्वरूप देवियों की उत्पत्ति मानी गयी है। साधक इनकी साधना सम्पन्न कर अपना जीवन धन्य करता है और जीवन में शक्ति के जिस तत्व की कमी होती है, उस कमी को पूरा करने के लिए आवश्यक क्षमता प्राप्त कर लेता है।

इस प्रकार से व्यक्ति के जीवन में महाविद्या साधना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है, किन्तु साधना के मूल मर्म एवं रहस्य को समझना साधक के लिए नितान्त आवश्यक है। इसमें मुख्य बात यह है कि साधक अन्तर्मन से, करुण हृदय से और अत्यन्त विनीत भाव से महाविद्या का आवाहन करता है और साधक अपने प्रयास में सफलता प्राप्त कर अद्वितीय ''युग पुरुष'' बनने का गौरव प्राप्त कर लेता है।

इन दस महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ–

1. **श्री महाकाली**–कलियुग में "कल्प वृक्ष" के समान शीघ्र फलदायी एवं साधक की समस्त कामनावों की पूर्ति में सहायक है। जब जीवन में प्रबल पुण्योदय होता है तभी साधक ऐसी प्रबल शत्रुहन्ता, महिषासुरमर्दिनी, वाक् सिद्धि प्रदायक महाकाली साधना सम्पन्न करता है।



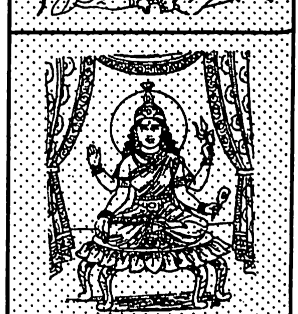
2. **श्री तारा**–आर्थिक उन्नति एवं अन्य बाधाओं के निवारण हेतु–"तारा महाविद्या" का स्थान महत्वपूर्ण है। इस साधना के सिद्ध होने पर साधक की आय के नित नये श्रोत खुलने लगते हैं और वह पूर्ण ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत कर जीवन में पूर्णता प्राप्त कर लेता है।



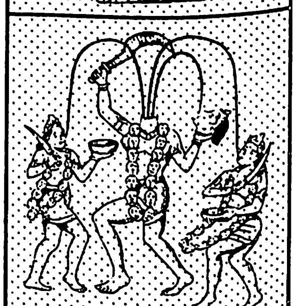
3. **श्री त्रिपुर सुन्दरी**–"त्रिपुर सुन्दरी" महाविद्या का स्थान दस महाविद्याओं में सबसे मुख्य हैं, क्योंकि यह शान्त स्वरूप और उग्र स्वरूप दोनों ही स्वरूपों की साधना है। जीवन में काम, सौभाग्य व शरीर सुख के साथ–साथ वशीकरण, सरस्वती सिद्धि, लक्ष्मी सिद्धि, आरोग्य सिद्धि की भी यही साधना है। वास्तव में त्रिपुर सुन्दरी साधना को तो "राज–राजेश्वरी" कहा गया है, क्योंकि यह अपनी कृपा से साधारण व्यक्ति को भी राजा बनाने में समर्थ है।



4. **श्री भुवनेश्वरी**–महाविद्याओं में भुवनेश्वरी महाविद्या को आद्या शक्ति अर्थात मूल प्रकृति कहा गया है और इसलिए तांत्रिक ग्रन्थों में स्पष्ट किया गया है कि जिसने अपने जीवन में भगवती भुवनेश्वरी महाविद्या सिद्ध नहीं की वह साधक नहीं हो सकता है।

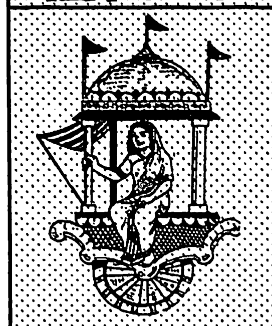


5. **श्री छिन्न मस्ता**–छिन्न मस्ता महाविद्या साधना जहाँ जीवन में पूर्णता देने में समर्थ है वहीं साधक के लिए वायुगमन प्रक्रिया की श्रेष्ठतम साधना है। इस प्रकार की साधना के लिए दृढ़ संकल्प शक्ति की आवश्यकता होती है और जो साधक जीवन में निश्चय कर लेते हैं कि उन्हें साधनावों में सफलता प्राप्त करनी ही है, वे इस तरह की विशिष्ठ साधनाएँ "गुरू मार्ग निर्देशन में" सम्पन्न करते ही हैं।





6. **श्री त्रिपुरा भैरवी**–शत्रु संहार एवं तीव्र तंत्र बाधा निवारण के लिए भगवती त्रिपुर भैरवी महाविद्या साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गयी है। इस साधना की मुख्य विशेषता यह भी है, कि व्यक्ति के सौन्दर्य में निखार आने लगता है और वह अत्यधिक सुन्दर दिखने लगता है।



7. **श्री धूमावती**–जो साधक अपने जीवन में निश्चित एवं निर्भीक रहना चाहते हैं और जीवन में निरन्तर उन्नति प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें भगवती धूमावती साधना सम्पन्न करनी चाहिए। इस महाविद्या के सिद्ध होने पर साधक की ख्याति दूर–दूर तक फैल जाती है। इसी महाविद्या की साधना से मैं संसार से यश, मान व ख्याति प्राप्त कर रहा हूँ।



8. **श्री बगलामुखी**–महाविद्या बगलामुखी का दूसरा नाम "बल्गामुखी" है। यह साधना शत्रु बाधा को समाप्त करने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण साधना है। "रूद्रायमल तंत्र" में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि बगलमुखी साधना की पीठ पद्धति अपने आप में सर्वाधिक महत्वपूर्ण और दुर्लभ है।

9. **श्री कमला**–कमला महाविद्या साधना मुख्य रूप से महालक्ष्मी साधना का आधार है और जिनके घर में दरिद्रता ने कब्जा कर लिया हो अथवा घर में सुख–शांति न हो, आय का पर्याप्त स्त्रोत न बन रहे हों, उनके लिए यह साधना सौभाग्य के द्वार खोलती है।



10. **श्री मातंगी**–यह साधना सम्पन्न करने से साधक जीवन में सभी आयामों को स्पर्श करते हुए संसार में अद्वितीय महापुरुष बनने का गौरव प्राप्त कर लेता है।

इस प्रकार साधनात्मक ऊँचाई प्राप्त करने में अनेकों बाधाएँ उत्पन्न होती हैं। कभी आर्थिक विषमता, तो कभी सांसारिक बंधन व पग–पग पर अन्य कठिनाईयाँ आती ही हैं। किन्तु मनुष्य तो वह होता है, जो छलांग लगा कर इनको पार करता हुआ, तीर की तरह अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ता ही रहता है। ये बाधाएँ तो आएँगी और आती रहेंगी, आपके पूर्व जीवन में भी आती रही हैं, मगर एक सामान्य स्तर

पर इन बाधाओं से जूझ करके जीवन बरबाद कर देना जीवन नहीं कहलाता है। जीवन तो वह कहलाता है, जहां लक्ष्य हो कि जीवन कि उस ऊँचाई पर पहुंचे, जहां हम अपने आप को गौरवान्वित अनुभव कर सकें।

इसके लिए एकमात्र साधन है–''दस महाविद्या साधना''। यूं तो शास्त्रों में हजारों प्रकार की साधनाएं दी हुई हैं, मगर ऋषियों ने उनमें से चुन करके इन दस महत्वपूर्ण साधनावों की जीवन में पूर्णता के लिए आवश्यक माना है। जो व्यक्ति इन दसों महाविद्याओं की साधना को पूर्णता के साथ सम्पन्न कर लेता है, वह निश्चय ही जीवन में ऊँचाई पर उठ जाता है।

परन्तु मात्र पुस्तकों से पढ़ करके साधनाएं सम्पन्न नहीं हो पाती, अधकचरे गुरूवों के माध्यम से ये साधनाएँ सिद्ध नहीं हो पाती, क्योंकि भगवान शिव ने प्रत्येक मंत्र को कीलित कर रखा है और उसको उत्कीलित करना, उस ताले को खोलने की क्रिया उस गुरू को ही ज्ञात हो सकती है, जिसने उच्च कोटि की साधनाएँ सिद्ध कर रखी हों। वही जानता है कि इस मंत्र का उत्कीलन क्या है–और जब तक मंत्र का उत्कीलन शिष्य को प्राप्त नहीं हो पाता, तब तक शिष्य साधना में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।

और जब गुरू साधना से सम्बन्धित ''दीक्षा यंत्र'' प्रदान करता है, उसके पश्चात् जब साधक साधना में प्रविष्ट होता है और साधना सम्पन्न करता है तभी साधना के द्वारा धन, मान, प्रतिष्ठा, भोग–विलास आदि सब कुछ प्राप्त कर सकता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में भी वह कुण्डलिनी जागरण, दिव्य दर्शन, ब्रह्माण्ड–भेदन, वायु गमन, अष्ट सिद्धियाँ, नौ विधियाँ, सोलह कलाएं, इन सब विद्याओं में पारंगत होकर जीवन के उन आयामों को भी स्पर्श कर सकता है, जो अद्वितीय है, श्रेष्ठ और दिव्य है।

जब तक जीवन में साधना का प्रवेश नहीं हो जाता, जब तक जीवन में गुरू की स्थापना नहीं हो जाती, तब तक जीवन अधूरा है। गुरू से दीक्षा यंत्र प्राप्त कर जब व्यक्ति साधनाएं सम्पन्न करता है, तो वह सिद्ध पुरुष बन जाता है, वह महापुरूष बन जाता है, वह प्रज्ञावन बन जाता है और फिर साधनावों में सफलता उसके लिए एक बहुत छोटी सी बात रह जाती है।

मानव जीवन में तो अनेक प्रकार की स्थितियाँ बनती–बिगड़ती रहती हैं। कभी घात लगाकर आक्रमण करने वाले शत्रु होते हैं, तो कभी आकस्मिक रूप से घटने वाली दुर्घटनाएं होती हैं, ऋण, पारिवारिक समस्याएं, जीवन के उतार–चढ़ाव यह सब तो ऐसी स्थितियां हैं, जिनसे व्यक्ति एक बार फिर भी अपने प्रयासों से जूझ सकता है, लेकिन जहां कोई भावी, अज्ञात, अनिष्ट मंडरा रहा हो, उसके निराकरण का तो एकमात्र उपाय इस ''देवीय बल'' का आश्रय ही होता है।

दस महाविद्या तत्व

1. **महाकाल पुरुष और उसकी शक्ति महाकाली**—परात्पर नाम से प्रसिद्ध विश्वातीत महाकाल पुरुष की शक्ति का ही नाम "महाकाली" है। शक्ति–शक्तिमान से अभिन्न है। उद्वेतवाद अक्षुण्ण रहता है। अग्नि की दाहक शक्ति जैसे अग्नि से अभिन्न है, प्रकाश शक्ति जैसे सूर्य से अभिन्न है, तथैव चिदात्मा की शक्ति चिदात्मा से अभिन्न है। वह एक ही तत्व "शिव–शक्ति" रूप में परिणत हो रहा है। "अर्धनारीश्वर" की उपासना का यही मौलिक रहस्य है। शक्ति–शक्तिमान में स्त्री–पुरुष भेद मानना आनुचित है। इसी आधार पर "रहस्य शास्त्र" कहता है–

सा च ब्रह्म स्वरूपा च नित्या सा च सनातनी।
यथात्मा च तथा शक्तिर्यथाग्नौ दाहिका स्थिता॥
अतएव ही योगीन्द्रैः स्त्री पुम्भेदो न मन्यते।
सर्व ब्रह्ममयं ब्रह्मान् शश्वत सदपि नारद॥

[दे. भा. 9/1/10–11]

अपि च–

अहमे वास पूर्व तु नान्यत् किञ्चिन्नगाधिप।
तदात्मरूपं चित्सेवित् परब्रह्मै कनामकम्॥
तस्य काचित स्वतः सिद्धा शक्तिर्मायेति विश्रुता।
पावकस्यो वणतेवे चमुश्णांशोरिव दीधितिः॥
स्वशक्तैश्च समायोगादहं बीजात्मतां गता।

[दे. भा. 9/32/6]

जब कुछ न था, उस समय केवल अनुपाख्य तम था। उसी स्थिति का निरूपण करते हुए "भगवान मनु" कहते हैं–

आसीदिदं तमोभूत मप्रज्ञात मलक्षणम्।
अप्रतर्क्य मनिर्देश्यं प्रसुप्तमिव सर्वतः॥

[मनु 1/5]

वह अप्रज्ञात, अलक्षण, अप्रतर्क्य, अनिर्देश्य तत्व ही "महाकाल" है। उसी की शक्ति "महाकाली" है। सृष्टि से पहले इसी महाविद्या का साम्राज्य रहता है। वह पहला स्वरूप है। अतएव महाकाली आगम शास्त्र में प्रथमा, आद्या आदि नामों से व्यवहृत हुई हैं। रात्रि प्रलयकाल का स्वरूप है। उसमें भी रात्रि के बारह बजे का समय तो घोरतम है। यही महाकाली है। सूर्योदय से पहले, रात्रि के बारह बजे से बीच का सारा समय महाकाली है। उत्तरोत्तर तम का ह्रास है। इतने समय को तम के तारतम्य के कारण ॠषियों ने 84 विभागों में विभक्त किया है। वही महाकाली के 84 अवान्तर विभाग हैं। प्रत्येक का स्वरूप भिन्न–भिन्न है। शक्ति के उन्हीं स्वरूपों

को समझाने के लिए "निदान विद्या" के आधार पर ऋषियों ने उनकी मूर्तियों का निर्माण किया है। सभी शक्तियाँ अचिन्त्या हैं। निर्गुण हैं। प्रत्यक्ष से परे हैं। परन्तु-

अचिन्त्य स्वाप्र मेचस्य निर्गुणस्य गुणात्मनः।
उपासकानां सिद्धयर्थ ब्रह्मणो रूप कल्पना॥

इस आर्य-सिद्धान्त के अनुसार उनके स्वरूप ज्ञान एवं उपासना के लिए उनकी कल्पित मूर्तियाँ बनायी गयी हैं। धनुर्वेद, गान्धर्व वेद, रहस्य, गाथा आदिवत् दुर्भाग्य से आज निदान शास्त्र भी लुप्त हो गया है। मूर्तियों के रचना वैचित्र्य पर आज जो सन्देह हो रहे हैं, उसका मूल कारण निदान विद्या का लोप है।

दस महाविद्याओं के स्वरूप का निदान से सम्बन्ध है, अतः संक्षेप में "निदान शब्द" का निर्वचनल कर देना अनुचित न होगा-

"संकेत" का ही नाम "निदान" है। अमुक को अमुक समझो, यही निदान है। इहलौकिक, पारलौकिक दोनों भावों में निदान का समान सम्बन्ध है। शोक का निदान काला वस्त्र है। खतरे का निदान लाल वस्त्र है। निरूपद्रवता का निदान हरित वस्त्र है। कीर्ति का निदान श्वेत वस्त्र है। पृथ्वी का निदान कमल है। मोह शक्ति का निदान "सुरा" है। लक्ष्मी का निदान हस्ती है। विजय का निदान ध्वज है। संहार शक्ति का निदान कटा मस्तक है। न केवल भारतीय ही, अपितु संसार के मनुष्य मात्र हमारी इस निदान विद्या के उपासक हैं। पाश्चात्य मनुष्य शोकावसर पर काली पट्टी हाथ में बांधते हैं। फांसी का हुक्म सुनाने वाला जज लाल वस्त्र पहनता है। भारतीय मूर्ति निर्माण पर नाक भौं सिकोड़ने वाले उन महानुभावों से हम पूछते हैं कि काले वस्त्र से शोक का क्या सम्बन्ध है ? इसके उत्तर के लिए उन्हें भारतीय निदान विद्या की शरण लेनी पड़ेगी। परन्तु इतना अवश्य समझ लेना चाहिए कि इस निदान का सजातीय भाव से ही सम्बन्ध रहता है। चाहे जिसपर "संकेत-सम्बन्ध" नहीं हो सकता है। शोक से ज्ञान प्रकाश मन्द हो जाता है। सारी चेतना-ज्योत शोक सन्ताप से आवृत हो जाती है। इधर कृष्ण वस्त्र सारे प्रकाश को पी जाता है। इसी समानता को लक्ष्य में रखकर काले वस्त्र को शोक का निदान माना गया है। कीर्ति मनुष्य में रश्मिवत् निकलकर चारों ओर उस मनुष्य को प्रकाशित कर देती है। प्रकाश का रूप शुक्ल वर्ण है। साथ ही में कृष्ण वस्त्र वत् इसमें सौर-रश्मियां लीन न होकर प्रतिफलित होती हैं। इसी सादृश्य से शुक्ल वस्त्र को कीर्ति का निदान माना गया है। पानी में रूद्रवायु के प्रवेश से धनता आती है। वही धन पानी हरित कोई बनती है। वही "पुष्कर पर्ण" है-

"आपो वै पुष्कर पर्णनम्" [शत 6/4/2/21] के अनुसार यह पत्ता पानी का है। यही आगे जाकर फेन, मृत, सिकता, शर्करा, अश्ना, अय, हिरण्य, इस रूप में परिणत होकर पृथ्वी पुर रूप में परिणत हो जाता है। पुरकर होने से ही इसे पुष्कर कहा जाता है। पृथ्वी की सृष्टि "पुष्करपर्ण" से ही हुई है। अतएव उसी पानी से उत्पन्न होने वाले कमल को पृथ्वी का निदान माना गया है।

जिस देवता के हाथ में आप कमल पुष्प देखो विश्वास करो सम्पूर्ण भूमण्डल पर उस देव-प्राण का साम्राज्य है। माया जनित मोह से मनुष्य की विवेक शक्ति

नष्ट हो जाती है। उधर सुरा का भी यही गुण है। अतएव सुरा को मोह-शक्ति का निदान माना गया है।

भगवती के हाथ में "सुरापात्र" है, इससे ऋषि यही सिखलाते हैं कि उस महामाय ने अपनी "मोह-मदिरा" से सबको उन्मत्त बना रखा है। फांसी रक्तपात है, अतएव रक्त वस्त्र को इसका निदान माना गया। खूब वृष्टि होने पर वृक्षों में हरियाली आ जाती है। रूक्षता जाती रहती है। सर्वत्र शान्ति का साम्राज्य हो जाता है। अतएव हरित वस्त्र को शन्ति रस का निदान माना गया। स्टेशनों पर हरी झंडी निरूपद्रवता का निदान है। लाल झंडी खतरे का द्योतक है। इन सब उदाहरणों से बतलाना यही है कि निदान अनुरूप भाव से ही सम्बन्ध रखता है। प्रकृत में शक्ति-तत्व ही निरुपणीय है। अतः प्रधान रूप से शक्ति सम्बन्धी निदान पर ही प्रकाश डाला जायेगा।

"शक्ति प्रतिमाओं" की अनेक रूप हैं। किसी के चौंसठ भुजाएं हैं। किसी के बत्तीस, किसी के आठ, किसी के चार, किसी के दो हैं। किसी ने जिह्वा निकाल रखी है। किसी के हाथ में कमल है। किसी के हाथ में नरमुण्ड, किसी के कर्त्तरी, (कैंची) किसी के परशु हैं। कोई मुर्दे पर खड़ी हैं। कोई अट्टहास करती हुई सुरापान कर रही है। कोई नग्न हैं। न समझने वाले उपहास भले ही करें, परन्तु जिस दिन उन्हें निदान रहस्य मालूम हो जायेगा, उस दिन अवश्य ही वे भारतीय संस्कृति के सामने अपना मस्तक झुका देंगे।

महाकाल पुरुष की महाशक्ति रूपा जिस महाकाली का पूर्व में निरूपण किया गया है, सर्व प्रथम उसी के निदान की ओर आपका ध्यान आकर्षित किया जाता है। तत्रदेवताओं की तत्रच्छाकित्यों की तत्रच्छक्तियों को समझाने के लिए ऋषियों ने निदान द्वारा तत्रदेवताओं का तत्रदनुरूप ध्यान बना डाला है। प्रत्येक देवता की उपासना विधि के प्रारम्भ में ही "अथध्यानम्" लिखा रहता है। ऋषि आदेश करते हैं कि जिस देवता की तुम उपासना करने चले हो, पहले उसके स्वरूप का ध्यान करो। यदि महाकाली की उपासना या साधना करना चाहते हो तो निम्नलिखित ध्यानानु मोदित स्वरूप पर दृष्टि डालो-

शवारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम्।
चतुर्भुजां खड्गमुण्ड वराभयकरां शिवाम्॥
मुण्डमाला धरां देवीं ललजिह्वां दिगम्बराम्।
एवं सञ्चिन्तयेत् कालीं श्मशाना लयवासिनीम्॥

[शाक्त प्रमोद—कालीतंत्र]

अर्थात्–"वह महाकाली मुर्दे पर सवार है। उसकी शरीर कृति महा-डरावनी है। उसकी दंष्ट्रा बड़ी तीक्ष्ण अतएव महाभयावह है। ऐसे महाभयानक रूपवाली वह आदि मया हँस रही हैं। उसके चार हाथ हैं। एक हाथ में खड्ग है। एक में नरमुंड है। एक में अभय मुद्रा है। एक में वर है। गले में मुण्ड माला है। जिह्वा बाहर निकल रही है। वह सर्वथा नग्न है। श्मशान ही उसकी आवास भूमि है।"

पूवोक्त ध्यान का यही अक्षरार्थ है। अब "रहस्यार्थ" पर दृष्टि डालिए–

हम बतला आए हैं कि महाकाली नाम की महाशक्ति प्रलयरात्रि के मध्यकाल से सम्बन्ध रखती हैं। संसार जब तक शक्तिमान रहता है, तभी तक वह शिव है। शक्ति निकल जाने पर वह "शव" बन जाता है। दूसरे शब्दों में, उसका स्वरूप ही नष्ट हो जाता है। विश्वातीत परात्पर नाम से प्रसिद्ध महाकाली की शक्तिभूता महाकाली का विकाश विश्व से पहले है। विश्व का संहार करने वाली कालरात्रि का विकाश कालरात्रि वही है। सृष्टि काल उसकी प्रतिष्ठा नहीं हैं, प्रलय काल उसकी प्रतिष्ठा है। दूसरे शब्दों में विश्व उसकी प्रतिष्ठा नहीं है, अपितु शक्ति शून्य अतएव शवरूप विश्व का निदान माना गया है। वह अनुपाख्य तमरूपा है। नाश करने वाली है। शत्रु संहार करने वाले योद्धाओं की आकृति महाभयावह हो जाती है। साधारण मनुष्य तो उसकी ओर देख भी नहीं सकता। बस, प्रलय रात्रिरूपा संहार कारिणी शक्ति के इसी स्वरूप को बतलाने के लिए "भयानक आकृति" को निदान माना गया।

शत्रु पक्ष की सेना को नष्ट कर योद्धा अट्टहास करता है। उसका वह हँसना भीषणता के लिए होता है। उस समय उसी का साम्राज्य हो जाता है। यही स्थिति महाकाली की है। अतएव उसके लिए "हसन्मुखीम्" कहा गया। अपि च निर्वल मनुष्यों के आक्रमणों को विफल कर सबल मनुष्य उसकी निर्बलता पर हँसा करता है। आज वही दशा इस विश्व की है। जो विश्व एवं विश्व की प्रजा अपने आप को सर्वेसर्वा समझते थे आज वे उससे परास्त हैं। इस भाव का निदान भी हँसना है। प्रत्येक गोल वृत्त में 360 अंश माने जाते हैं। उसमें नब्बे–नब्बे के चार विभाग मान जाते हैं। यही उस वृत्त की चार भुजाएं हैं। इन्हीं को "स्वस्तिम" कहा जाता है। खगोल के वही चारों स्वस्तिम इन्द्रोपलक्षित चित्रा नक्षत्र, पूषोपलक्षित रेवती नक्षत्र, तार्क्ष्योपलक्षित श्रवण नक्षत्र, बृहस्पत्युपलक्षित लुब्धकबन्धु नक्षत्र, इन चार नक्षत्रों से सम्बन्ध हैं। चित्रा से श्रवण ठीक षडभान्त पर (२८० अंश पर) हैं। रेवती से लुब्धक इतनें ही फासले पर है। आकाश की इन्हीं चारों भुजाओं का निरुपण करती हुई "श्रुति" कहती है–

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽरिष्ट नेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

[यजु. वे.]

बतलाना इससे यही है कि पूर्ण वृत्त में चार भुजाएँ होती हैं। वह महाकाली पूर्ण रूपा है–यह पूर्वोक्क संख्या विज्ञान में स्पष्ट हो चुका हैं। अनन्ता काश रूप महाअवकाश में चतुर्भुज रूप में परिणत होकर ही वह विश्व का संहार करती हैं। इसी रहस्य का निदान चार भुजाएँ हैं।

नाशशक्ति का निदान "खड्ग" है। नष्ट होने वाले प्राणियों का निदान "कटा मस्तक" है। स्थिति–विच्युति का नाम कम्प है। कम्प ही भय है। यही क्षोभ है। विश्व ससीम है अतएव वह सभय है। परन्तु व्यापक तत्व में कम्परूप भय का अभाव है। उससे अतिरिक्त कोई स्थान नहीं, अतएव उसमें भय नहीं। ऐसा है एकमात्र

विश्वातीत "महाकाल पुरुष"। क्योंकि वह व्यापक है। "अभयं गतो भवति"– इत्यादि रूप से उसी परात्पर को "उपनिषद्" अभय बतलाता है। वह संहार करती है, डरावनी हैं, घोर रूपा है, सब कुछ हैं। परन्तु विश्वास कीजिए, अभय पद प्राप्ति भी उसी की आराधना पर निर्भर है। "अभयमुद्रा" इसी का निदान है।

विश्व सुख क्षणिक है। अतएव दुःख रुप है। परम सुख तो उसी की आराधना से मिल सकता है। परम शिव रूपा तो वही है। जीवित व प्रलय काल में भी वही सबका आधार है। ध्वंस्त विश्व के निर्जीव प्राणियों का निर्जीव भाग भी उसी पर प्रतिष्ठित है। उस व्यापक तत्व से बाहर कोई कैसे बच सकता है। इसी परायण भाव का निदान "मुण्डमाला" है।

विश्व उस शक्ति का आवरण हो जाता है। "तत् सृष्टवा तदेवानु प्राक्सित"– के अनुसार वह शक्ति विश्व निर्माण कर उसके भीतर प्रविष्ट हो जाती है। विश्व ही उसका वस्त्र है। परन्तु विश्व नाश के अनन्तर वर स्व–स्वरूप से उल्बण है। उस स्थिति में आवरण का अभाव है। वहाँ केवल दिशाएँ ही वस्त्र हैं। इसी अवस्था का निदान "नग्न भाव" है।

उस महाशक्ति का पूर्ण विकाश काल है विश्व का प्रलय काल। सारा जीवन जब श्मशान बन जाता है, तब उस तमोमयी का विकाश होता है। "श्मशान" इसी अवस्था का निदान है। यह है "महाकाली" का स्वरूप। साधारण मनुष्य इस गम्भीर भाव की अराधना करने में असमर्थ हैं। अतएव उनके कल्याण के लिए परम कारूणिक महर्षियों ने निदान द्वारा पूर्वोक्त प्रतिमावों की कल्पना की है। प्रलय काल की कैसी स्थिति है ? उसके जानने से हमारा क्या लाभ है ? पूर्वोक्त ध्यान विज्ञान से सबका उत्तर हो जाता है। अन्त में उसी परमाराध्या का स्मरण करते हुए इस प्रथमा विद्या के निरुपण को समाप्त कर दूसरी विद्या की ओर आपका ध्यान आकर्षित करते हैं।

2. **अक्षोभ्य पुरुष और उसकी महाशक्ति "तारा"**–रात्रि के १२ बजे से प्रातः ६ बजे तक (सूर्योदय से पहले) चतुरशीति (८४) भेदभिन्ना महाकाली की सत्ता बतलायी गयी है। इसके बाद "तारा" का साम्राज्य है। "हिरण्यगर्भ विद्या" के अनुसार निगम शास्त्र ने सम्पूर्ण विश्व की रचना का आधार "सूर्य" को माना है। सौर मण्डल आग्नेय होने से हिरण्मय कहलाता है। क्योंकि अग्नि हिरण्य रेता है। उस हिरण्यमय मण्डल के (आग्नेय सोलर सिस्टम के) केन्द्र में वह सौर ब्रह्म तत्व प्रतिष्ठित है। अतएव सौर ब्रह्म को "हिरण्यगर्भ" कहा जाता है। भूः भुवः स्वः रूप रोदसी त्रिलोकी के निर्माता एवं अधिष्ठाता, स्वयंभू परमेष्ठी रूप अमृता सृष्टि, पृथ्वी चन्द्रमा रूपा मर्त्यासृष्टि के विभाजक एवं सञ्चालक, विश्व केन्द्र में प्रतिष्ठित इन्हीं "भगवान हिरण्य गर्भ" का प्रादुर्भाव होता है।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्ने भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिविं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्॥

[यजु. वे. 23/2]

यह श्रुति इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन करती है। जैसे "विश्वातीत महाकाल

पुरुष की शक्ति'' महाकाली है वैसे ही विश्वाधिष्ठाता इस ''हिरण्यगर्भ पुरुष की शक्ति'' तारा हैं। घोर तम में दीपक-बिम्व तारा-सदृश प्रकाशित रहता है। उस महातम के केन्द्र में उत्पन्न होने वाले सूर्य की वही स्थिति है। अतएव श्रुति में सूर्य ''नक्षत्र'' नाम से प्रसिद्ध है। [देखो शत०० 2/1/2/18] अतएव इनकी शक्ति आगम शास्त्र में-''तारा'' नाम से प्रसिद्ध हुई। यह पुरुष तन्त्र शास्त्र में ''अक्षोभ्य'' नाम से प्रसिद्ध है। वैदिक सिद्धान्त के अनुसार सूर्य स्र्वथा स्थिर है। ''वृहतीछन्द-नाम से प्रसिद्ध सुप्रसिद्ध विष्यद्वृत्त के ठीक मध्य में'' क्षोभ रहित होकर स्थिर रूप से भगवान सूर्य तप रहे हैं-

''सूर्यो वृहतीमध्यू ढस्तपति उद्यास्तमञ्चैव। दर्शनादर्शनं रथेः।''

इत्यादि वचन सूर्य को स्थिर ही बतलाते हैं। चूँकि यह क्षोभ रहित है। अतएव ये ''अक्षोभ्य'' नाम से प्रसिद्ध हुए। सूर्य को प्रारम्भ में वेदों ने रूद्र कहा है। एवं शिव-घोर-भेद से इसके दो शरीर बतलाये हैं। आपोमय पारमेष्ठय महासमुद्र में घर्षण द्वारा आग्नेय परमाणु उत्पन्न हुए। अनन्तर ''श्वेत वाराह'' नाम से प्रसिद्ध प्राजापत्य वायु द्वारा उनका केन्द्र में संघात हुआ। संघात होते होते वह अग्नि-परमाणु-संघ पिण्ड रूप में परिणत होता हुआ सहसा प्रज्जवलित हो पड़ा-उसी का नाम ''सूर्य'' हुआ। उत्पन्न होते ही इस रूद्राग्नि ने अन्न की इच्छा की। क्योंकि अन्नाद अग्नि बिना अन्नाहुति के क्षणमात्र भी प्रतिष्ठित नहीं रह सकता है। इस अन्नाहुति से पहले वह सूर्य महा-उग्र था। संसार को जला डालने वाला था। बस, इस समय के उग्र-सूर्य की जो शक्ति थी वही-''उग्र तारा'' नाम से प्रसिद्ध हुई। जब तक अन्नाहुति होती रहती है तब तक ''तारा'' शान्त रहती है। अन्नाभाव में वही उग्र बनकर संसार का नाश कर डालती है। उसी उग्र भाव का, उग्र शक्ति का निरुपण करता हुआ रहस्य कहता है-

''प्रत्याली हृपदार्पिताङ्घ्रिसवहृद् घोराट्टहासा परा
खड्गेन्दी वरकर्त्रिखर्प्पर भुजाहुंकार बीजोद्भवा।
सर्वा नीलविशाल पिंगल जटाजूटै कनागैर्युता
जाड्यं न्यस्य कपाल कर्तृ जगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम्॥''

[शाक्तप्रभोद-तारा तन्त्र]

महाकाली महाप्रलय की अभिष्ठात्री हैं, उग्रतारा सूर्य प्रलय की अधिष्ठात्री है। प्रलय करना दोनों का समान धर्म है। अतएव महाकाली और उग्रतारा के ध्यान में थोड़ा ही अन्तर है। इनकी चारों भुजाओं में सर्प लिपट रहे हैं। यह शक्ति प्रलय काल में जहरीली गैस से ही विश्व का संहार करती है। प्रलय काल में हवा जहरीली हो जाती है। दम घुटने लगता है। जिसका यत्किञ्चिट निदर्शन बिहार के परिहार से स्पष्ट हो रहा है-इसी का निदान ''सर्प'' है। संसार नष्ट हो जाता है। उस शक्ति की सत्ता विश्व-केन्द्र में बतलायी गयी है। शवरूप विश्व-केन्द्र में वह प्रतिष्ठित है। इसी रहस्य को बतलाने के लिए शव के हृदय पर उसे प्रतिष्ठित किया है। सौर-अग्नि अन्नाहुति बन्द होने से प्रबल बेग धारण कर लेता है। सांय-सांय शब्द करने लगता

है, इसी का निदान "अट्टहास" है। प्रलय काल में पृथ्वी, चन्द्रमा, मनुष्य, पशु-पक्षी आदि सब का रस उग्र सौर-ताप से सूख जाता है। सबका रस भाग वह "उग्रतारा" पी जाती है। रस प्राणियों का श्री भाग है। यह प्रधान रूप से शिरःकपाल में रहता है। श्री (रस) भाग के रहने के कारण ही मस्तक "सिर" कहलाता है। [देखिए-शत० ६/१/१]। इन्हीं को आधार बनाकर वह उस रस का पान करती है। इसी का निदान "खप्पर" है।

"नीलग्रीवो विलोहितः" [यजु० वे० १६/७] के अनुसार उग्र सूर्य नीलग्रीव है। पिङ्गल है। इसकी शक्ति का भी वही रूप है। सूर्य-रूप मस्तक भाग से चारों ओर फैली हुई रश्मियों का भी यही स्वरूप है। ये रश्मियाँ भी उसकी जटाएँ हैं। प्रति सौर-रश्मि में उस महाभीषण काल में जहरीली वायु भरा रहता है। इसी स्वरूप को बतलाने के लिए-"नील विशाल पिंगल जटाजुटैक नागैर्युता" यह कहा गया है। वह महाशक्ति इसी उग्र रूप में परिणत होकर विश्व का संहार करती हैं। यही दूसरी सृष्टि-धारा है। महाकाली रूप विश्वातीत तत्व के अनन्तर सूर्य रूपा इस दूसरी महाशक्ति का विकाश होता है।

3. **पञ्चवक्त्र शिव और उसकी महाशक्ति "षोड़शी"**-तीसरी महाविद्या हैं-षोड़शी। सूर्य उत्पन्न हुआ। उसमें पारमेष्ठय सोम की आहुति हुई। इससे उग्रता शान्त हो गयी। एवं रूद्र सूर्य शिव बन गया। बस, शिव भावापन्न सूर्य ही संसार का प्रभव है। शिवात्मक सूर्य ही पृथिवी, अंतरिक्ष, द्यौरूप त्रैलोक्य का एवं उसमें रहने वाली अमृत-मर्त्य प्रजा का निर्माण करते हैं। इसी आधार पर-

नूनं जनाः सूर्य्येण प्रसूताः [ऋक्०]
निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च [यजु०]
सूर्य आत्मा जगतस्तस्थचश्र [यजु०]

इत्यादि कहा जाता है। इस शिवात्मक सूर्यशक्ति का (जो शिव तन्त्र में-"पञ्चवक्त्र शिव" नाम से प्रसिद्ध है) ही नाम-"षोड़शी" है। रूद्र शक्ति तारा थी, शिव शक्ति षोड़शी है। घोर सूर्य को मध्याह्न का सूर्य समझिए। शिव सूर्य को प्रातः काल का शान्त सूर्य समझिए। उसकी शक्ति को उग्र समझिए। इसकी शक्ति को शिवा समझिए। षोड़शी का निदान रहस्य बतलावें, इसके पहले प्रसंगागत पञ्चवक्त्र शिव-सम्बन्धी निदान का संक्षिप्त स्वरूप उपस्थित करते हैं-

मुक्ता पति पयोद मौक्ति कजवा वर्णे र्मुखैः पञ्चभि
स्त्रयक्षै रञ्चित मीशमीन्दु मुकुटं पूर्णेन्दु कोटि प्रभम्।
शूलं टंककृपाण वज्र दहनान् नागेन्द्र पाशाङ्क शान्
पाशं भीतिहरं दधानम मिताकल्पो ज्ज्वलाङ्ग भजे॥

[तन्त्रसार]

शक्ति एवं कार्य भेद से भगवान शंकर के अनेक रूप हो जाते हैं। एक ही शिवसूर्य पाँच दिशाओं में व्याप्त होकर "पञ्चमुख" बन जाते हैं। पूवोक्त ध्यान उन्हीं पाँचों मूर्तियों का स्वरूप बतलाता है। उस एक ही के वे पाँचों मुख पूर्वा,

पश्चिमा, उत्तरा, दक्षिणा, ऊर्ध्वा, दिग्भेद से क्रमशः 1. तत्पुरुष, 2. सद्योजात, 3. वामदेव, 4. अघोर, 5. ईशान–इन नामों से प्रसिद्ध हैं। पाँचों मुख क्रमशः– चतुपकल, अष्टकल, 7. योदशकल, अष्टकल, पञ्चकाल हैं। एवं पाँचों क्रमशः हरित, रक्त, धूम्र, नील, पीत वर्ण के हैं। इस पञ्चवक्त्र शिव के 10 हाथ हैं। दशों में 1. अभय, 2. टङ्क, 3. शूल, 4. वज्र, 5. पाश, 6. खड़ग, 7. अंकुश, 8. घण्टा, 9. नाग और 10 अग्नि–ये दश आयुध हैं।

ये शिव सर्वज्ञ हैं। त्र्यक्षरूप हैं। अनादि बोध स्वरूप हैं। स्वतंत्र हैं। अलुप्त शक्ति हैं। अनन्त शक्तिमान हैं। पाँचों दिशाओं में इनकी व्याप्ति हैं। पाँचों ओर इन का रूख है। रूख ही मुख है। "पञ्चमुख" इसी भाव का निदान है। इस शिव के आग्नेय, वायब्य, सौम्य, तीन स्वरूप धर्म हैं। ये तीनों ही तीन–तीन प्रकार के हैं। आग्नेय प्राण के अग्नि, वायु, इन्द्र ये तीन भेद हैं। वायब्य–प्राण के वायु, शब्द, अग्नि ये तीन भेद हैं। एवं सौम्य–प्राण के वरूण, चन्द्र, दिक ये तीन भेद हैं। इस प्रकार उस शिव की 9 शक्तियाँ हो जाती हैं। ये नवों घोर हैं। उग्र हैं। एवं इन सब का आधार भूत परोरजा नाम का सर्वप्रतिष्ठा रूप शन्ति मय प्राजापत्य प्राण हैं। दस हाथ, दस आयुध इन्हीं दस शक्तियों के निदान हैं। टङ्क से आग्नेय ताप सूचित किया जाता है। शूल का वायब्य ताप से सम्बन्ध है। "न वातेन बिना शूलम" यह निश्चित सिद्धान्त है। वज्र से ऐन्द्र–ताप अभिप्रेत है। पाश से वारुण ताप अभिप्रेत है। "वरुण्या वा एषा यद्रज्जुः" के अनुसार पाश के अधिष्ठता वरुण ही हैं। खड्ग का चान्द्रशक्ति से सम्बन्ध हैं। अङ्कुश से दिब्या हेतिका सम्बन्ध है। नाग से सञ्चर नाड़ी और विषैले वायु की ओर इशारा है। जिस वायु–सूत्र से रूद्र प्रविष्ट होते हैं वही सञ्चर नाड़ी कहलाती है। इस नाड़ी का नाक्षत्रिक सर्प प्राण से सम्बन्ध है। सारे ग्रह सर्पाकार हैं। इनमें वह सौर–तेज व्याप्त रहता है। सब ग्रह रूप सर्पों के साथ रूद्र सूर्य का भोग होता है। अतएव उनके सर्वांग शरीर में सर्प लपेट दिए जाते हैं। इनकी दृष्टि प्रकाश रूपा है। इसी का निदान "अग्नि ज्वाला" है। सोमाहुति का निदान मस्तकस्थ इन्दु है। शान्ति रूप परोरजाः प्राण का निदान अभय मुद्रा है। आगम रहस्यानुसार स्वर वाक् के अधिष्ठता यही हैं। इसी का निदान घंटा है। नीचे लिखी "तालिका का" से सब स्पष्ट हो जाता है–

1. अभयम् प्राजापत्यम् शान्तिः परोरजाः प्राणः।
2. टङ्क आग्नेयतापः अग्निः आग्नेय प्राणः।
3. शूलम वायब्यतापः वायुः आग्नेय प्राणः।
4. वज्रम ऐन्द्रतापः इन्द्रः आग्नेय प्राणः।
5. पाशः वारूणहेतिः वरूणः सौम्य प्राणः।
6. खड्गः चान्द्रहेतिः चन्द्रः सौम्य प्राणः।
7. अङ्कुशः दिश्याहेतिः दिक् सौम्य प्राणः।
8. घण्टा ध्वनिः शब्दः शब्दः वायब्य प्राणः।
9. नागः सञ्चर नाड़ी वायुः वाचब्य प्राणः।
10. अग्निः प्रकाशः अग्निः वाचब्य प्राणः।

इसी पञ्चवक्त्र शिव की शक्ति का नाम षोड़शी है। पञ्चकल, अपब्यय, पञ्चकल अक्षर, पञ्चकल आत्मक्षर परात्पर की समीष्ट को पूर्व में हमने षोड़शी रूप पुरुष बतलाया है। स्व, पर, सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, इन पाँचों में से एकामात्र सूर्य में ही उस षोड़शी का पूर्ण विकाश होता है। स्वयम्भू अव्यक्त है। अतएव वहाँ भी पूर्ण विकाश नही। परमेष्ठी में यज्ञवृत्ति के कारण विकाश नहीं। वहाँ आया हुआ षोड़शी अन्तर्लीन हो जाता है। परन्तु सूर्य अग्निमय होने से चितिधर्मा है। अतएव इसमें आया हुआ चिदात्मा पूर्ण रूप से उल्बण हो जाता है। स्वयंभू आदि पाँचों में क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, अग्नि, सोम इन पाँत अक्षरों की प्रधानता है। पाँचों में इन्द्रात्मक सूर्य में ही षोड़शी का विकाश है। अतएव इस सूर्य रूप इन्द्र के लिए "इन्द्रो हवै षोड़शी" [शत० 4/2/5/14] यह कहा जाता है। पञ्चकाल अब्ययका सृष्टिसाक्षी भाग मन, प्राण वाग् रूप है। इसमें प्राण दो का विकाश है। उधर पृथ्वी में केवल वाक् का विकाश है। चान्द्र अन्तरिक्ष में वाक् प्राण का विकाश है। परन्तु मध्य पतित चितिधर्मा सूर्य में मन, प्राण, वाक् तीनों का विकाश है। इसी आधार पर–

1. वागिन्द्रः, 2. आदित्यमनः, 3. प्राणः प्रजानामुद यस्येष सूर्य्यः–इत्यादि कहा जाता है।

"स या एष आत्मा वाङ्मय प्राणमयो मनोमयः" (बृहदारण्यक) के अनुसार सृष्टि साक्षी आत्मा मनः प्राण वाङ्मय है। सूर्य में तीनों की सत्ता है। अतएव "सूर्य आत्मा जगत स्तस्थुषश्च" इत्यादि रूप से सूर्य को स्थावर जङ्गमात्मक सम्पूर्ण विश्व का आत्मा बतलाया जाता है। चूंकि इसमें षोड़कल पुरुष का पूर्ण विकाश है, अतएव इसको हम अवश्य ही षोड़शी कहने के लिए तैयार हैं। इसीलिए इसकी शक्ति को भी अवश्य ही षोड़शी कहा जा सकता है। भूः, भुवः, स्वः रूप तीनों ब्रह्मपुर इसी महाशक्ति से उत्पन्न हुए हैं। अतएव तंत्र में यह "त्रिपुर सुन्दरी" नाम से भी प्रसिद्ध हैं। इसी का स्वरूप बतलाते हुए ऋषि कहते हैं–

बाला कर्मण्डला भासां चतुर्षाहां त्रिलोचनाम्।
पाशाङ्कुश शरांश्चापं धारयन्ती शिवां भजे॥

[शाक्त प्रमोद–षोड़शी तन्त्र]

सूर्य में प्रकाश है, ताप (अग्नि) हैं, आहतुसोम (चन्द्रमा) है। "त्रीणि ज्योर्तिषि सचते स षोड़शी" के अनुसार उस शिव शक्ति ने इन्हीं तीन रूपों से विश्व को प्रकाशित कर रखा है। अतएव सूर्य को लोकचक्षु कहा जाता है। इन्हीं तीन ज्योतियों का निदान तीन नेत्र हैं। सौर–शक्ति सम्पूर्ण खगोल में व्याप्त है। खगोल चतुर्भुज है। इसी का निदान चार भुजाएँ हैं। सोमहुति से यह शान्त बन रही है। प्रातःकाल का बाल सूर्य इसकी साक्षात प्रतिकृति है। बालार्क इसी अवस्था का निदान है। सूर्य से उत्पन्न होने वाली प्रजा सौर आकर्षण सूत्र से वद्ध रहती है। स्वयं पृथिवी भी उससे वद्ध है। अतएव वह कभी क्रान्ति वृत्त को नहीं छोड़ती। उस सौर शक्ति ने अपने आकर्षण रूप पाश से सबको वद्ध कर रखा है। पाश इसी का निदान है। अक्षर रूपा उस निर्यात के डर से सब अपना–अपना काम यथावत् कर रहे हैं। स्वयं सूर्य भी उसका लोहा मानता है।

भयादस्याग्निस्तपति भयात्पति सूर्यः।
भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः॥

[कठ० 2/6/3]

–के अनुसार वह सब पर अपना अंकुश रखती है। "अंकुश" इसी का निदान है। जो प्राधापराध से शक्ति के उन अटल नियमों का उलंघन करते हैं उनका वह नाश कर डालती है। पृथ्वी, अतंरिक्ष, द्यौ तीनों लोकों में व्याप्त रूद्र के अन्न, वायु, वर्षा तीन प्रकार के इषु (वाण) है) [यजु० 16/66] वे इषु असल में इस शक्ति के ही इषु हैं। इन्हीं के द्वारा वह संहार करती हैं। शर इसी का निदान है। सृष्टि कर्त्ता, ब्रह्मा, पालक विष्णु, संहारक रूद्र, खण्ड प्रलय के अधिष्ठता यम, चारों देवता उसके अधीन हैं। वह चारों पर प्रतिष्ठित हैं। "चतुर्बाहाम" इसी अवस्था का निदान है। पूर्वोक्त ध्यान इसी स्वरूप को प्रकट करता है।

4. त्र्यम्बक शिव और उनकी महाशक्ति "भुवनेश्वरी"–सूर्य उत्पन्न हुआ। पारमेष्ठय सोम की आहुति हुई, इससे यज्ञ हुआ। यज्ञ से त्रैलोक्य निर्माण हुआ। तीनों भुवन उत्पन्न हो गए, विश्वोत्पत्ति के उपक्रम में षोड़शी की सत्ता थी। भुवनों को उत्पन्न कर उनका सञ्चालन करती हुई वही शक्ति आज "भुवनेश्वरी" बन गयी। यही चौथी सृष्टि धारा है, चौथी सृष्टि विद्या है। इसी का स्वरूप बतलाते हुए ऋषि कहते हैं–

उधदिनधु तिमिन्दु किरीटां तुङ्कुचां नयन त्रय युक्ताम्।
स्मेरमुखी वरदाङ्कश पाशाभो तिकरां प्रभजे भुवनेशीम॥

[शाक्त प्रमोद– भुवनेश्वरी तंत्र]

यदि सूर्य में सोमाहुति न होती तो यज्ञ असम्भव था। बिना यज्ञ के भुवन–रचना का अभाव था। बिना भुवन के "भुवनेश्वरी" उन्मुग्ध थी। सूर्य के मस्तक (उपर) भाग पर प्रतिष्ठित ब्राह्मणस्पत्य सोम आहुत हो रहा है। इसी से भुवनोत्पत्ति है। इसी से भुवनेश्वरी उद्‌बुद्ध है। "इन्दु किरीट" इसी अवस्था का निदान है। तीन नेत्रों का निदान पूर्व से गतार्थ है। संसार में जितनी भी प्रजा है सबको उसी त्रिभुवन–व्याप्ता भुवनेश्वरी से अन्न मिल रहा है। तीन नेत्रों का निदान पूर्व से गतार्थ है। संसार में जितनी भी प्रजा है सबको उसी त्रिभुवन–व्याप्ता भुवनेश्वरी से अन्न मिल रहा है। चौरासी लाख योनियाँ उसी से अन्न लेकर जीवित हैं। इसी का निदान "वरद" है। जो भुवन प्रलय–समुद्र में विलीन था, आज वही इसी शक्ति के प्रभाव से विकसित हो रहा है। मानो वह शक्ति अपनी उग्रता छोड़कर विश्व पर कृपा दृष्टि कर रही है। "स्मेरमुखी" शब्द इसी भाव का निदान है। शासन शक्ति का निदान अंकुश–पाशादि है, जैसा कि पूर्व में बतलाया जा चुका है।

5. कवन्ध शिव और उसकी महाशक्ति "छिन्नमस्ता"–

"पाङ्क्तो वै यज्ञः" [श० 1/1/2]

के अनुसार सृष्टि का मूल यज्ञ पाक यज्ञ, हविर्यज्ञ, महायज्ञ, अति यज्ञ, शिरोयज्ञ–भेद से पाँच भागों में विभक्त है। स्मार्त–यज्ञ पाक यज्ञ है। इसी को गृह्या–

यज्ञ, एकाग्नि यज्ञ भी कहा जाता है। अग्नि होत्र, दर्शपौर्णमास्य, चातुर्मास्य, पशुबन्ध इत्यादि हविर्यज्ञ है। भूत यज्ञ, मनुष्य यज्ञ, पितृ यज्ञ, देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, ये पांच महायज्ञ हैं। अग्नि चयन, राजसूय, आश्वमेघ, वाजपेय, ये अतियज्ञ हैं।

"छिन्न शीर्षो वै यज्ञः" इस श्रुति के अनुसार पूवोक्त सारे यज्ञ छिन्नशीर्ष हैं। सबका मस्तक कटा हुआ है। सुप्रसिद्ध पौराणिक "हयग्रीवो पाख्यान" का (जिसमें गणपति वाहन मूशक की कृपा से धनुष प्रत्यञ्चा भंग हो जाने से शयान विष्णु के शिरच्वेदन का निरूपण है। इसी छिन्नशीर्ष से सम्बन्ध है। प्रत्येक यज्ञ के अन्त में शिरः सन्धान के लिए जो यज्ञ किया जाता है उसे ही शिरोयज्ञ कहते हैं। बिना इसके किए यज्ञ बिना माथे का रहता है।

यही यज्ञ ब्राह्मण ग्रन्थों में-सम्राङ्याग, प्रवर्ग्ययाग, धर्मयाग, महाबीरोपासना इत्यादि अनेक नामों से व्यवहृत हुआ है। "सूर्य्यो ह वा अग्निहोत्रम," "सूर्यो वा ज्योतिष्ठोमः"-इत्यादि के अनुसार अग्नीसोमात्मक सूर्य यज्ञ रूप है। इस यज्ञ मूर्ति अतएव विष्णु नाम से प्रसिद्ध सूर्य पुरुष का यज्ञात्मना निरुपणा करते हुए वेद पुरुष कहते हैं-

चत्वारि शृङ्गत्र्यो अस्य पादा द्वे शीर्षे हस्तासो अस्य।
त्रिधा वद्धो वृषभो शेरवीति महादेवो मर्त्यां आविवेश॥

[गो० प्रा० 3/9]

"ऋग, यजुः, साम, अर्थव-चारो वेद इसके चार सींग हैं। प्रातः स्तवन, माध्यन्दिन स्तवन, सायंसवन, तीन सवन इनके तीन पैर हैं। ब्रह्मौदन, प्रबर्ग्य, दो मस्तक हैं। मन्त्र, कल्प, ब्रह्मण, इन तीनों से वह मर्यादित हैं। गायत्री आदि सात छन्द उनके सात हाथ हैं। ऐसा यह यज्ञ वृषभ विश्व में हुंकार कर रहा है। यही महादेव मरण धर्मा सब प्राणियों का आत्मा बना हुआ है। सब में आत्म रूप से प्रविष्ट हो रहा है।"

पूवोक्त यज्ञावयवों में से "ब्रह्मौदन" और "प्रबर्ग्य" की ओर ही आपका ध्यान आकर्षित किया जाता है। जिस वस्तु का आत्मा से नित्य सम्बन्ध रहता है वह उस आत्मा का "ब्रह्मौदन" कहलाता है। वह अन्न उस ब्रह्म का ओदन है। सिवा उसके और कोई उसे नहीं ले सकता। एवं जो वस्तु उस आत्मा से पृथक होकर दूसरे आत्मा का अन्न बन जाती है वह "प्रबर्ग्य" कहलाती है। इसी को "उच्छिष्ट" भी कहते हैं। सूर्य का जो ताप सूर्य से वद्ध रहता है, वह उसका ब्रह्मौदन है। परन्तु जो ताप अलग होकर औषधि, वनस्पति, मुष्यादि के निर्माण में उपयुक्त हो जाता है, वह प्रबर्ग्य है। धूप में पानी रख दीजिए, गरम हो जाएगा। सूर्य अस्त हो गया, परन्तु पानी अब भी गरम है। सूर्य अपने ताप को इस पानी में छोड़ गया। हवा में छोड़ गया। रात है परन्तु हवा गरम चल रही है। यही उसका प्रबर्ग्य भाग है, धर्म भाग है। धर्म ही निरूक्त क्रमानुसार धरम रूप में परिणत होता हुआ "गरम" बन गया है। ताप सौर यद्य यावत् पदार्थों का उपलक्षण हैं। सब सौर-पदार्थ सूर्य से अलग होते रहते हैं। यदि सूर्य इस उच्छिष्ट को नहीं छोड़ता तो विश्व निर्माण असम्भव था। इसी आधार पर-"उच्छिष्ठात् शकलं जगत्" यह कहा जाता है। यह प्रबर्ग्य पूर्व श्रुति के

अनुसार उस यज्ञ का मस्तक है। यह अलग कट जाता है, इसी आधार पर यज्ञ को छिन्नशीर्ष कहा जाता है। पार्थिव गणपति की प्राण प्रतिष्ठा रूप मूषक का आत्मा बनने वाला घनवायु ही अपने व्यापार से उस प्रबर्ग्य को यज्ञ से अलग करता है। मूषक द्वारा ही यज्ञविष्णु का मस्तक कटता है। कहना यही है कि ''ब्रह्मौदन'' से आत्म रक्षा होती है, एवं ''प्रबर्ग्य'' सृष्टि का स्वरूप बनता है। बस, इस प्रबर्ग्य को ही निगम-मूलक आगम शास्त्र ''कबन्ध'' नाम से व्यवहृत करता है। इस कबन्ध पुरुष की शक्ति का नाम ही-''छिन्न मस्ता है।''

''छिन्नमस्ता'' बनकर ही वह शक्ति संसार बनती हैं, एवं उसी रूप से नाश भी करती है। यज्ञ मूर्ति सूर्य से उत्पन्न होने वाले जड़-चेतन रूप सभी पदार्थ यज्ञ मूर्तित हैं। सबमें से प्रबर्ग्य भाग निकल रहा है। हम उसके प्रबर्ग्य को लेकर जीवित हैं। साथ ही हमारा प्रबर्ग्य उसमें जा रहा है। सूर्य त्रैलोक्य एवं उसकी प्रजा को प्रबग्यान्न देता हैं, साथ ही रश्मियों से लेता भी रहता है। विसर्ग से जैसे उस प्रजापति का शरीर प्रतिक्षण विस्त्रस्त होता रहता है, आदान से प्रति क्षण उसका सन्धान भी होता रहता है। इसी प्रक्रिया का नाम ''शिरः सन्धान'' है। यही प्रबर्ग्ययाग है। मस्तक कटने से जैसे प्राणी निर्जीव हो जाता है, वैसे ही बिना इसके यज्ञ स्वरूप ही नष्ट हो जाता है। अतएव ब्रह्मोदयन् वत प्रबर्ग्य-भाग को भी हम अवश्य ही यज्ञ का मस्तक कहने के लिए तैयार हैं। वह मुझे देता है। साथ ही मुझे खाता है। एवं साथ ही उस खाने वाले को मैं भी निरन्तर खा रहा हूँ। वस्तु-मात्र में यह आदान-विसर्ग निरन्तर हो रहा है। जब तक आदान विसर्गात्मक यज्ञ है तभी तक विश्व-सत्ता है। इसी यज्ञ रहस्य का निरूपण करती हुई ''श्रुति'' कहती है-

अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य पूर्वं देवताभ्यो मृतस्य नाम।
यो मा ददाति स इदेवभावत् अहमन्न मन्नभदन्त मदमि॥

अर्थात्-''मैं छिन्नशीर्ष अवश्य हूँ। परन्तू अग्नागमन रूप शिरः सन्धान यज्ञ से स्वरूप में प्रतिष्ठित हूँ। परन्तु जब यह शिरः सन्धान रूप अन्नागमन बन्द हो जायेगा उस समय केवल ''छिन्नमस्ता'' ही रह जायेगी। उस समय वह सर्वात्मा हमारा शोषण कर लेगी। जो महामाया षोड़शी बनकर भुवनेश्वरी बनती हुई संसार का पालन करती है, वही अन्तकाल में छिन्नमस्ता बनकर नाश कर डालती है।''

उसी का निरुपण करते हुए ऋषि कहते हैं-

प्रस्यालीढ़पदां सदैव दधतीं छिन्नं शिरः कृतकां
दिग्वस्त्रां स्वकबन्ध शोणित सुधाधारां पिवन्ती मुदा।
नागावद्ध शिरोमणि त्रिनयनां हृद्युत्पलाल ङ्कृता
रत्यासक्त मनोभवोपरि दृढां ध्यायेजवा सन्निभाम्॥
दक्षे चातिसिता विभुक्तचिकुरा कर्त्री तथा सर्प्परं
हस्ताभ्यं दधती रजोगुणभवा नाम्नापि सा वर्णिनी।
देव्याश्छिन्न कबन्धतः पतदसृग्धारां पिवन्ति मुदा
नागावद्ध शिरोमणि र्मनुविदा ध्येय सदा सा सुरैः॥

प्रस्यालीढपदा कबन्ध विगलद्रक्तं पिवन्ति मुदा
सैषा या प्रलये समस्त भुवनं भोक्तुं क्षमा तामसी।
शक्तिः सापि परात्परा भगवती नाम्ना परा डाकिनी॥
[शाक्त प्रमोद—छिन्नमस्ता तंत्र से अधृत]

6. **दक्षिणामूर्ति काल—भैरव और उनकी महाशक्ति "भैरवी"**—छिन्नमस्ता का "महाप्रलय" से विशेष सम्बन्ध है, जैसा कि उसके ध्यान से स्पष्ट हो जाता है। दूसरा है "नित्य प्रलय"। प्रतिक्षण पदार्थ नष्ट होते रहते हैं। नष्ट करना रूद्र का काम है। यही विनाशन्मुख होकर "यम" कहलाने लगते हैं। इसी याम्य अग्नि की सत्ता प्रधान रूप से दक्षिण दिशा में है। अतएव यमराज को दक्षिण दिशा का लोकपाल बतलाया जाता है। दक्षिण में अग्नि की सत्ता है। उत्तर में सोम का साम्राज्य है। "सोम" स्नेह—तत्व है, संकोच—धर्मा है। अग्नि तेज—तत्व है, विशकलन—धर्मा है। विशकलन क्रिया ही वस्तु का नाश करती है। यह धर्म दक्षिणाग्नि का है। अतएव इस रूद्र को "दक्षिणामूर्ति, काल भैरव" आदि नामों से व्यवहृत किया जाता है। इनकी शक्ति का नाम ही भैरवी किंवा त्रिपुर—भैरवी है।

"राजराजेश्वरी" नाम से प्रसिद्ध "भुवनेश्वरी" जिन तीनों भुवनों के पदार्थों की रक्षा करती है—यह त्रिपुर—भैरवी उनका नाश करती रहती है। त्रिभुवन के पदार्थों का क्षणिक विनाश इसी शक्ति पर निर्भर है—छिन्न मस्ता पराडाकिनी थी, यह अवरा डाकिनी है। भक्तों को उसका निम्नलिखित रूप से निरन्तर ध्यान करना चाहिए—

उद्यद्भानु सहस्त्र कान्ति मरूणोक्षोमां शिरोमालिकां
रक्तलिप्त पयोधरां जपपटीं विद्यामभीर्ति वरम्।
हस्ताब्जे र्दधतीं त्रिनेत्रविलसद् वक्त्रार बिन्दश्रियं
देवीं वद्धहिमां शुररत्नमुकुटां वन्दे समन्दसस्मिताम्॥
[भैरवी तन्त्र]

7. **पुरूषशून्या अतएव "विधवा" नाम से प्रसिद्ध महाशक्ति "धूमावती"**—संसार में दु:ख के मूल कारण—रूद्र, यम, वरूण, निऋृति—ये चार देवता हैं। विविध प्रकार के ज्वर, महामारी, उन्माद आदि आग्नेय (सन्ताप) सम्बन्धी रोग रूद्र की कृपा से होते हैं। मूर्च्छा, मृत्यु, अंग—भंग आदि रोग यम की कृपा का फल है। गठिया, शूल, गृध्रसी, लकवा आदि के अधिष्ठाता वरूण हैं। एवं सब रोगों में भयंकर शोक, कलह, दरिद्रता आदि की संचालिका निऋृति हैं। भिखारी, क्षतविक्षता पृथ्वी, उसर भूमि, भग्न प्रासाद, फटे एवं जीर्ण वस्त्र, बुभुक्षा, प्यास, रूदन, वैध्व्य, पुत्र सन्ताप, कलह आदि उनकी साक्षात प्रतिमाएँ हैं। इन सब का मूल प्रधान रूप से दरिद्रता है।

अतएव "घोरा पाप्मा वै निऋृतिः" [शत० 9/2/1/1]

इत्यादि रूप से—"श्रुति" ने उसे दरिद्रा नाम से व्यवहृत किया है। इसी को शान्त करने के लिए निऋृति इष्ट की जाती है। यह शक्ति यों तो सर्वत्र व्याप्त है।

परन्तु इसका खजाना "ज्येष्ठा नक्षत्र" है। वहीं से यह "आसुरी–कलह प्रिया" निकलती है। अतएव ज्येष्ठां नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला प्राणी जीवन भर दरिद्रता दुख भोग करता है–यही हमारी साक्षात "धूमावती" है। इसमें मनुष्य का पतन है, अतएव इसे "अवरोहिणी" भी कहा जाता है। यह "अलक्ष्मी" नाम से प्रसिद्ध हैं। डरावनी शकल, दाँतों का चौड़ा होना, रूक्षता आदि इसी की कृपा का फल है। इसी शक्ति का निरूपण करते हुए ऋषि कहते हैं–

विवर्णा चञ्चलता दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा।
विमुक्त कुन्तला वै सा विधवा विरलद्विजा॥
काकध्वज रथारूढा विलम्बित पयो धरा।
शूर्पहस्तातिरूक्षाक्षा धूत हस्ता वरानना॥
प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपसार्हिता नित्यं भयदा, कलहास्पदा॥

[शाक्त प्रमोद, धूमावती तंत्र से उधृत]

ध्यान से ही निदान स्पष्ट है। आप्य प्राण को असुर कहते हैं, आग्नेय एवं ऐन्द्र प्राण देवता नाम से प्रसिद्ध हैं। आषाढ़ शुक्ला एकादशी से वर्षा काल का प्रारम्भ माना जाता है। अतएव कार्तिक शुक्ला एकादशी वर्षा की परम अवधि मानी जाती है। इन चार महीनों में पृथ्वी पिण्ड और सौर प्राण आपोमय रहते हैं। अतएव चातुर्मास्य में दोनों ही प्राण देवता आसुर आप्य प्राण की प्रधानता से निर्बल हो जाते हैं। इनकी शक्ति दब जाती है। अतएव चातुर्मास्य देवताओं का सुषुप्ति काल कहलाता है। इतने दिन तक आसुर प्राण का साम्राज्य रहता है, अतएव दिव्य प्राण की उपासना करने वाला भारतीय सनातन धर्म जगत कोई दिव्य कार्य (विवाह, यज्ञोपवीत, यात्रा आदि) नहीं करता। इसी चातुर्मास्य में उस निऋृति का साम्राज्य रहता है। कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी इनकी अन्तिम अवधि है। अतएव धर्माचार्यों ने इसे "नरक चतुर्दशी" के नाम से व्यवहृत किया है। इसी रात्रि को दरिद्रा रूपा इस अलक्ष्मी का गमन होता है, एवं दूसरे ही दिन रोहिणी रूपा कमला (लक्ष्मी) का आगमन होता है। कार्तिक कृष्ण अमावास्या को कन्या का सूर्य रहता है। कन्याराशि गत सूर्य नीच का कहलाता है। इस दिन सौरप्राण मलिन रहता है। एवं रात्रि में तो यह भी नहीं रहता। उधर अमावस्या के कारण चान्द्रज्योति का भी अभाव है। एवं चार मास की वृष्टि से प्रकृति की प्राणमयी अग्निज्योति भी निर्बल हो रही है। "त्रीणज्योतिर्षी सचते स षोड़शी" के अनुसार इस अमावस्या को तीनों ही ज्योतियों का अभाव है। अतएव ज्योतिर्मय आत्मा इस दिन हीनवीर्य रहता है। इसी तम भाव के निराकरण के लिए, एवं साथ ही कमलागमन के उपलक्ष्य में ऋृषियों ने इस दिन वैद्या प्रकाश (दीपावली) और अग्नि क्रीड़ा (आतिशबाजी) करने का आदेश दिया है। कहना यही है कि निऋृति रूपा "धूमावति" प्रधान रूप से चातुर्मास्य में रहती हैं। लक्ष्मीकामुक मनुष्यों को सदा इसकी स्तुति करते रहना चाहिए।

8. एक वक्त्र महारूद्र और उसकी महाशक्ति बगला मुखी (वल्गामुखी)–प्राणियों के शरीर से एक अथवा नाम का प्राण सूत्र निकला करता है। प्राण रूप होने से हम इसे स्थूल दृष्टि से देखने में असमर्थ रहते हैं। यह एक प्रकार की वायरलेश टेलिग्राफी है। 200 कोस दूर रहने वाले आत्मीय के दुःख से यहाँ हमारा चित्त जिस परोक्ष शक्ति से व्याकुल हो जाता है, उसी परोक्ष सूत्र का नाम "अथर्वा" है। इस शक्ति सूत्र के विज्ञान से सहस्त्रों कोस दूर स्थित व्यक्ति का आकर्षण किया जा सकता है। परमेश्वर की विचित्र लीला है। जैसे प्राधुनिक (पाहुना) के आगमन का ज्ञान हमें नहीं होता, किन्तु काक (कौआ) को हो जाता है, उसी प्रकार जिस अथर्वा सूत्र को हम नहीं पहचानते उसे श्वान (कुत्ता) पहचान लेता है। उसी शक्ति ज्ञान के प्रभाव से कुत्ता जमीन सूंघता हुआ भागे हुए चोर का पता लगा लेता है। जिस मार्ग से चोर जाता है, उस मार्ग में उसका अथर्वा प्राण वासना रूप से मिट्टी में संक्रान्त हो जाता है। वस्त्र, नाखून, केश, लोम आदि में वह प्राण वासना रूप से प्रतिष्ठित रहता है। इन वस्तुओं के आधार पर उस व्यक्ति पर मनमाना प्रयोग किया जा सकता है। भौम-स्वर्ग के अधिष्ठाता, आज दिन साईबीरिया नाम से प्रसिद्ध सौराष्ट्र नाम के राष्ट्रान्तर्गत अमरावती नाम के शहर में रहने वाले, पुराणों में "हरि वाहन" एवं वेद में "हरिवान" नाम से प्रसिद्ध मनुष्य इन्द्र ने "सरमा" नाम की कुत्ती की सहायता से वृहस्पति की गायों को चुरा ले जाने वाले पणि नाम के असुरों का पता लगाया था, [देखो ऋग्वेद] अपि च पुरा युग में भौम मनुष्य देवता इसी "अथर्वा-सूत्र" द्वारा असुरों पर कृत्या प्रयोग [मारण, मोहन, उच्चाटन आदि] किया करते थे। अथर्ववेद के धोराङ्गिरा, अतर्वगिरा नाम के दो भेद हैं। इनमें धोराङ्गिरा में औषधि वनस्पति विज्ञान है। एवं दूसरे में-

श्रुतिरथर्वाङ्गिरसीः कुर्यादित्य विचारयन्।
वाक् शस्त्रं वै ब्राह्मणस्य तेन हन्याद्धरीन् द्विजः॥

[मनु०11/33]

-के अनुसार "अभिचार प्रयोग" है। इसका उसी पूवोक्त "अथर्वासूत्र" से सम्बन्ध है। बस अथर्वा सूत्र-रूपा इसी महाशक्ति का नाम "वल्गामुखी" है। यह इसका वैदिक नाम है। जैसा की शतपय श्रुति कहते हैं-

यदा वै कृत्या मुत्खनन्ति अथ सालसा मोधा भवित।
तथो एवैष एतद्यदस्मा अत्र कश्चिद्द्विषण भ्रातृष्यः कृत्यां-
यद्गां निस्वनति तानेवै तदुत्किरति॥

[शत० 3/4/5/3]

निरूक्त क्रमानुसार संस्कृत भाषा में जैसे "हिंस" शब्द वर्ण व्यत्यय के कारण "सिंह" बन जाता है, लौकिक भाषा में जैसे-"मतलब" मतबल बन जाता है, इसी प्रकार निगमोक्त "वल्गा" शब्द आराम में "बगला" रूप में परिणत हो गया है। निगम-शास्त्र की वल्गा ही "बगलामुखी" है। इस कृत्याशक्ति की अराधना

करने वाला मनुष्य अपने शत्रु को मनमाना कष्ट पहुँचा सकता है। जैसा कि उसके ध्यान से स्पष्ट हो जाता है–

जिह्वाग्र मादाय करेण देवीं वामेन शत्रून परिपीडयन्तीम्।
गदभिधातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि।

[शाक्त प्रमोद– बगलामुखी तंत्र]

9. मतङ्ग शिव और उसकी महाशक्ति "मातङ्गी"–

श्यामां शुभ्रांशुभालां त्रिनयन कमलां रत्नसिंहासनस्थां–
भक्ताभिष्ट प्रदात्रीं सुरनिकरा सेद्रय कञ्चाङ्घ्रि युग्माम्।
नीलां भोजां शुकान्ति निशिचर निकरारण्य दावग्निरूपां–
पाशं खड़गं चतुर्भिर्वर कमलकरैः खेटकाञ्चाङ्कुश्च॥
मातङ्गी भावहन्ती मभिगत पालदां मोदिनीं चिन्तयामि॥

इत्यादि ध्यान से मातङ्गी का स्वरूप स्पष्ट है।

10. सदाशिव पुरूष और उनकी महाशक्ति "कमला"– धूमावति और कमला में प्रतिस्पर्धा है। वह ज्येष्ठ थी, वह कनिष्ठा है। वह अवरोहिणी थी, यह रोहिणी है। वह आसुरी थी, यह दिव्या है। वह दरिद्रा थी, यह लक्ष्मी है। रोहिणी नक्षत्र के ठीक षडभान्तर पर [180 अंश पर] ज्येष्ठा है। जिसका रोहिणी नक्षत्र में जन्म होता है, वह समृद्ध होता है। इसी का निरूपण करते हुए ऋषि कहते हैं–

कान्त्या काञ्चन सन्निभां हिमगिरि प्रख्यैश्रतु भिर्गजै–
र्हस्तोत्क्षिप्त हिरण्यमया मृतघटैरासिच्च मानां श्रियम्।
विभ्राणां वरमब्ययुग्म मभयं हस्तैः किरीटे। जज्वलां–
क्षौमावद्ध नितम्बबिम्ब वलितां वन्देऽपिन्दस्थिताम्॥

[शाक्त प्रमोद– कमला तंत्र]

यह है दस महाविद्याओं का संक्षिप्त निदर्शन। प्रकारान्त से इसी सृष्टि विद्या को ऋषियों ने तीन भागों में विभक्त किया है। वही तीन शक्तियाँ महाकाली, महालक्ष्मी महासरस्वती नाम से प्रसिद्ध हैं। तमोगुण प्रधाना महाकाली कृष्णवर्णा है और यही प्रलय काल हैं। रजोगुण प्रधाना महालक्ष्मी रक्तवर्णा हैं और यही सृष्टि काल हैं। सत्वगुण प्रधाना महासरस्वती श्वेतवर्णा हैं जो मुक्ति काल हैं। उस एक ही अज पुरुष की "अजा" नाम से प्रसिद्ध महाशक्ति तीन रूपों में परिणत होकर सृष्टि, प्रलय, मुक्ति की अधिष्ठात्री बन रही हैं। आगमोक्त इस त्रिरूपा शक्ति का मूल मंत्र (निगम मंत्र) निम्नलिखित है–

अजामेकां लोहित शुक्लवर्णा वह्वीं प्रजाः सृजमानां सरूपः।
अजोह्ये को जुषमाणोऽनुशेते जहात्येनां भुक्तभोगा मजोऽन्यः॥

[श्वेता० ४/५]

अवान्तर क्षुद्र विद्याओं की अपेक्षा पूवोक्त विद्याएं यद्यपि अवश्य ही महाविद्याएँ

हैं, परन्तु इनमें भी परस्पर के तारम्य से भेद हो जाता है। कोई महाविद्या है। कोई सिद्ध विद्या है। कोई श्री विद्या है। कोई विद्या ही है। अहः पुरुष है। रात्रि स्त्री है, शक्ति है। अतएव ये विद्याएँ महारात्रि. कालरात्रि, मोहरात्रि, दारूणरात्रि आदि रात्रि नामों से प्रसिद्ध हैं, जैसा कि निम्नलिखित तालिकाओं से स्पष्ट हो जाता है-

संख्या	शक्ति	नामान्तर	रात्रि	विद्या	शिव
1.	महाकाली	+	महारात्रि	महाविद्या	महाकाल
2.	तारा	+	क्रोध रात्रि	श्री विद्या	अक्षोम्य
3.	षोड़शी	त्रिपुर सुन्दरी	दिव्य रात्रि	सिद्ध विद्या	पञ्चवक्त्रशिव
4.	भुवनेश्वरी	राज राजेश्वरी	सिद्ध रात्रि	सिद्ध विद्या	त्र्यम्बक
5.	छिन्न मस्ता	+	वीर रात्रि	विद्या	कबन्ध
6.	भैरवी	त्रिपुरा भैरवी	काल रात्रि	सिद्ध विद्या	काल भैरव
7.	धूमावती	अलक्ष्मी	दारूण रात्रि	विद्या	दक्षिण मूर्ति
8.	बल्गामुखी	बगला मुखी	वीर रात्रि	सिद्ध विद्या	एक वक्त्र महारूद्र
9.	मातङ्गी	+	मोह रात्रि	विद्या	मतङ्ग
10.	कमला	लक्ष्मी	महारात्रि	विद्या	सदाशिव विष्णु

इन दस महाविद्याओं की उपासना "काली कुल" और "श्री कुल" इन दो कुलों में विभक्त है।

दस महाविद्याओं की संख्या-

यहीं तक सीमित न रहकर आगे भी बढ़ी है। "मालिनी विजयवार्तिक ग्रन्थ" में इनकी संख्या 12 और तंत्र सार में 18 और कई ग्रन्थों में तो इससे भी अधिक कही गयी है तथापि दस महाविद्या की प्रसिद्धि ही प्रमुख है। महिषभर्दिनी, त्वरिता, दुर्गा, प्रत्यगिरा, स्वप्नावती और मधुमती देवियों के नाम और कुछ अन्य नामों के संयोजन से यह संख्या 24 तक भी पहुँची है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि विष्णु के प्रमुख दस अवतार और उनके बाद 24 अवतारों की जिस प्रकार प्रसिद्धि हुई है, उसी प्रकार महाविद्या के अवतारों की भी प्रसिद्धि हुई है।

दस महाविद्याओं के "कुल"

उपासको ! इन महाविद्याओं की "साधना" (सिद्धि) "काली कुल" और "श्री कुल"-इन दो कुलों में विभक्त है। काली कुल में-

1. काली, 2. तारा, 3. छिन्नमस्ता, 4. भुवनेश्वरी, 5. महिषमर्दिनी, 6. त्रिपुरा (षोड़शी), 7. त्वरिता, 8. दुर्गा तथा 9. प्रत्यंगिरा का समावेश है। जबकि-श्री कुल में-1. सुन्दरी, 2. भैरवी, 3. बाला, 4. बगला, 5. कमला,

6. धूमावती, 7. मातङ्गि, 8. स्वप्नावती और 9. मधुमती को समाविष्ट किया गया है। इन दोनों कुलों में 9–9 अर्थात् कुल मिलाकर 18 देवियों की गणना है।

कुछ आचार्यों ने दश महाविद्याओं को ही तीन रूपों में व्यक्त किया है। जिनमें–1. सौम्य, 2. उग्र, 3. सौम्योग्र, इस प्रकार तीन कोटियां बतलाई है।

सौम्य कोटि में–त्रिपुरा सुन्दरी, भुवनेश्वरी, मातंगी और कमला [महालक्ष्मी] आती हैं।

उग्र कोटि में–काली, छिन्नमस्ता, धूमावती और बगलामुखी मानी जाती है।

सौम्योग्र कोटि में–तारा और भैरवी महाविद्याए हैं।

आद्या शक्ति भगवती परमेश्वरी "विश्वातिरिक्त" और "विश्वव्यापिनी–विश्वरूपिणी" शक्ति के रूप में वर्णित हैं। जो एक, अद्वितीय होते हुए भी बहुविद्या मूर्ति हैं। दस महाविद्याओं में एक अखण्ड विश्व शक्ति ही दशविद्य होकर प्रकाशमान हैं और इन्हीं शक्तियों से पराशक्ति समस्त जगत का नियंत्रण और परिचालन करती हैं।

2



सिद्धि साधना प्रारम्भ से पूर्व अति आवश्यक ज्ञान खण्ड

मानव को सिद्धि करने की आवश्यकता क्यों

सिद्धि प्रारम्भ करने वाले साधको ! मानव अपनी व्यवस्था के अतिरिक्त धन प्राप्त करने की ओर भटक रहा है, परन्तु सम्पूर्ण सुख साधना प्राप्त होने के पश्चात् भी जब उसे शान्ति नहीं मिलती तो वह इसे देवि-देवताओं से प्राप्त करना चाहता है, परन्तु उन्हें प्राप्त करना तो आसान नहीं, उन्हें प्रसन्न करना भी आसान नहीं।

फिर उन्हें प्रसन्न करने हेतु मार्ग ढूँढता है, तब उसे उनकी सिद्धि साधना, पूजा, अर्चना की आवश्यकता पड़ती है और वह सिद्धि रहस्य इस छोटी सी अनुपम पुस्तक में वेदोक्त ज्ञान के अनुसार वर्णित कर रहा हूँ। इसे जानकर, कार्य रूप देकर, हृदय से मनन कर आप संसार के उच्चतम शिखर पर पहुंच सकते हैं।

साधको ! ईश्वर और जीव के मध्य में जगत के आ जाने से जीवात्मा की बुद्धि से परमात्मा का सम्पर्क न्यून हो गया है। इस परिवर्तन के कारण जीवात्मा की ज्ञान शक्ति एवं क्रिया शक्ति दोनों संकुचित हो गई हैं तथा जीवात्मा ईश्वर से दूर चला गया है।

यह जीवात्मा की अल्पज्ञता है। आवरण रूप जगत की विविध वस्तुएँ जीवात्मा की इन्द्रियों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं, जिसके कारण जीवात्मा की बुद्धि विषय-भोग की अनुगामिनी हो जाती है और जीवात्मा क्लेशों का पात्र बन जाता है।

"सिद्धि" से ज्ञान का विकास होता है। जिस क्रिया से जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य में स्थित जगत तिरोहित हो जाता है तथा ज्ञान शक्ति एवं क्रिया शक्ति विकसित होती है, उसी को सिद्धि साधना कहते हैं।

जीवात्मा को उचित है कि वे सम्पूर्ण जगत के कारण, रक्षक, अन्तर्यामी आदिशक्ति तथा उनके अंशी देवियों के प्रति प्रेम, विश्वास, एवं श्रद्धा की, बुद्धि

रक्षा का सम्पूर्ण भार उन भगवती पर डाल दे, जिसके कारण वह परमात्मा रूपी परमेश्वरी का कृपा पात्र बन जाता है।

सिद्धि काल में शुद्ध भावनावों का महत्व

सिद्धि करने वाले साधको ! अपने इष्टदेव या इष्टदेवी के समक्ष [तस्वीर या प्रतिमा के समक्ष] विधिवत् पूजन सामग्री स्थूल रूप से अर्पित करते हुए अराधना की जाये अथवा मंत्रोच्चार करते हुए साधना महत्व पूजन सामग्री की नहीं बल्कि आपकी–"भावना" की होती है।

देवी–देवताओं को किसी वस्तु की कमी नहीं है जो हम उन्हें दे सकते हैं। सिद्धि साधना में जो वस्तुएँ देवताओं को अर्पित की जाती हैं वे भी हमारी भावनावों का ही दिग्दर्शक होती हैं, जबकि सिद्धि काल में हम केवल भावों का ही पुष्प चढ़ाते हैं।

भक्तों के दुखहरणी माहेश्वरी महाकाली की सिद्धि की जाय अथवा दस महाविद्याओं के किसी रूप का जप किया जाये या मूर्ति पूजन, अपने अराध्य की सेवा पूजा और अर्चना–सिद्धि का यह क्षेत्र है, जहाँ हमें अपनी भावना के अनुरूप ही फलों की प्राप्ति होती है। भक्तवत्सला के सभी रूप अत्यन्त दयालू हैं, परन्तु हम उन्हें विद्या के द्वारा प्राप्त की गई तर्क शक्ति, बुद्धि, धन और बल से प्राप्त नहीं कर सकते। इनके लिए तो हमें अपने हृदय की सम्पूर्ण गहराई के साथ समर्पित भाव से पुकारना याद करना और नमन करना होगा।

जो व्यक्ति निष्कपट भाव से भगवती का स्मरण करते हुए उनके श्री चरणों में मन लगाकर संसार के प्रति अनाशक्त रहते हुए कर्म करते हैं, उनके तो सभी कार्य पमेश्वरि के प्रति समर्पित होने के कारण स्वयं ही साधना बन जाती है।

परन्तु भक्ति के प्रथम चरण में ऐसा सम्भव नहीं।

साधको ! सिद्धि का क्षेत्र तो पूरी तरह से "भावना" पर ही आधारित है, जबकि साधकों को सिद्धि में सफलता भी उसकी भावनावों के अनुरूप ही मिलती है। एक सीधे–सादे उदाहरण द्वारा यह समझने में हमें आसानी रहेगी–

आप्रेशन करने वाला एक शल्य चिकित्सक (डॉक्टर) भी शरीर पर छूरी चलाता है और एक क्रुर हत्यारा भी। परन्तु डॉक्टर को धन, यश, मान सम्मान और पुण्य मिलता है तो हत्यारों को "प्राणदण्ड"। कार्य तो दोनों ने एक ही किया, दोनों के कार्य का माध्यम भी छूरा था और समान रूप से ही व्यक्ति रक्तरंजित भी हुआ।

फिर यह अन्तर क्यों ? एक को पुरस्कार दूसरे को दण्ड, एक को मान–सम्मान दूसरे को अपमान, एक का गुणगान दूसरे से घृणा क्यों ?

क्योंकि दोनों की "भावना" में अन्तर था। शल्य चिकित्सक की भावना रोग का निदान कर, रोगी को रोग मुक्त कर सुखी और संतुष्ट करना था तो हत्यारे की

भावना व्यक्ति को असमय काल के गाल में पहुँचाना। यही भावना का फर्क था उन्हें मिलने वाले प्रतिफलों का अन्तर।

ठीक यही अवस्था जगदम्बा की सिद्धि साधना में है। यदि हमारे भाव दूषित होंगे तो भक्त वतस्ला भगवती हम पर अनुकम्पा क्या करेंगी, अधिक सम्भावना यही है कि हमारी सिद्धि का हमें कोई फल ही न मिले। यही कारण है कि हृदय की निर्मलता साधना की प्रथम शर्त है और उसका सबसे आसान उपाय है लोभ और मोह जैसी बुराईयों को छोड़ते हुए अधिक से अधिक धार्मिक साहित्य का सतत् अध्ययन मनन।

हम सांसारिक जीव हैं जो अनेक वस्तुओं के आकांक्षी हैं और प्रायः किसी कामना के वशीभूत होकर ही हम करते हैं-भगवती की सिद्धि साधना। जो व्यक्ति लोभ, मोह और सांसारिक वस्तुओं की कामनाओं पर विजय प्राप्त कर चुके हैं, उनका तो प्रत्येक कर्म ही साधना है। परन्तु हम तो उस मंजिल के राही हैं-जहाँ से सिद्धि उपासना आरम्भ होती है, अतः हम कामना रहित हो गए हों, ऐसा तो होही नहीं सकता, परन्तु इतना तो कर ही सकते हैं कि दयानिधि भगवती से कोई सांसारिक वस्तु न मांगकर उनके चरणों में भक्ति की भावना की वृद्धि का ही वरदान बार-बार मांगते रहें।

कोई भी सांसारिक कामना चाहे वह साहित्य संगीत अथवा कला में विशेष योग्यता की प्राप्ति की हो अथवा मान-सम्मान और पुरस्कारों की प्राप्ति की, धन दौलत की आकांक्षा हो या पदोन्नत की कामना मन में रखकर सिद्धी साधना या उपासना करना वास्तव में भक्ति नहीं-भगवती से की जाने वाली सौदेबाजी है।

मातेश्वरी से मांगिये, अवश्य मांगिये, उनसे निरन्तर सद्भावों ज्ञान और भक्ति भावना का वरदान। उनसे कहिए हे माँ मैं कभी आपको भुलूं नहीं, आपकी भक्ति मिले और मिले आपका प्रेम। यह मांगना आपका अधिकार ही नहीं कर्तव्य भी है। यही मांगते रहने से ही सांसारिक समस्त सुखों की प्राप्ति, समस्त बाधावों का नाश्स्वतः हो जाता है, क्योंकि परमेश्वरि स्वयं जानती है कि आपको कौन-कौन सी वस्तुओं की आवश्यकता है, जो वे स्वतः पूर्ण कर देती हैं।

सिद्धि काल में अटूट निश्चय और श्रद्धा का महत्व तथा साधना में सहायक

भगवती की सिद्धि करने वाले साधको ! सिद्धि की शक्ति ही साधक को सर्वस्व विजय प्रदान कराती है, किन्तु बहुत कम लोग यह मानते हैं कि साधना की नींव केवल श्रद्धा है और जहाँ पर श्रद्धा है वहीं पर सिद्धि है।

हर प्राणी के लिए आवश्यक है कि जिस साधना से सिद्धि साधना आरम्भ करने जा रहा है उसपर पूर्ण विश्वास रखे उसपर पूरी आस्था होनी चाहिए जो सिद्धि का "मेरूदण्ड" है।

जिस साधना में विश्वास नहीं, श्रद्धा नहीं, उसे मात्र परिक्षार्थ करना अपना समय नष्ट करना है। इसका कारण मात्र यही है कि ऐसे कार्यों से लाभ की आशा करना मात्र मूर्खता है। साधना मार्ग में प्रथम सोपान प्रथम पग की साधना में सम्मिलित नहीं तो फिर कैसी सफलता, कैसी सिद्धि, कैसा विजय ? पराजय असफलता व असिद्धि मात्र की आवश्यमभावी हैं।

वास्तव में ही आप यदि उपासना या सिद्धि साधना में सफल होना चाहते हैं तो उसके लिए बहुत बड़ी लगन से काम लेना होगा। लगन, तपस्या, साधना और उपासना का दूसरा नाम ही सफलता और सिद्धि है।

यदि आप सिद्धि साधना में सफल होना चाहते हैं, यदि आप भगवती के कृपापात्र बनना चाहते हैं तो तप करना होगा, त्याग करना होगा, दृढ़ संकल्प करना होगा, तपस्या करनी होगी। इस कार्य के लिए आपको बार-बार दृढ़ निश्चय को दुहराना होगा, उनको श्रद्धा भाव से हृदय में बिठाना होगा, तभी आप भक्तवत्सला भगवती की कृपा प्राप्त कर सकेंगे।

साधको ! सिद्धि के प्रारम्भिक चरण ज्ञान और इसमें सहायक गुरू के अतिरिक्त कुछ यम-नियम आदि भी इस मार्ग में सहायक होते हैं।

संक्षिप्त में-शरीर की भीतरी-बाहरी स्वच्छता और सात्विक भोजन, वाणी द्वारा मधुर हितकारी और सत्य वचन बोलना, मन और इन्द्रियों द्वारा सांसारिक सुख भोग में संयम साधक का आत्मिक आनन्द की प्राप्ति में सर्वदा सहायक होते हैं। इसके अतिरिक्त आत्मिक स्तर पर सहयोगी तत्व है- विश्वास, संकल्प, लगन और अभ्यास। अर्थात् सर्व प्रथम सृष्टि की संचालक शक्ति और उसके स्वरूप [अपने इष्ट देव के, जिनकी आप सिद्धि करने जा रहे हैं] पर दृढ़ विश्वास, फिर साधना मार्ग पर चलने हेतु दृढ़ निश्चय जरूरी है।

दृढ़ निश्चय या संकल्प से प्रेरित होती है "लगन" अर्थात् अथक प्रयास, और सतत् अभ्यास से प्राप्त होती है सिद्धि जो मनुष्य और समाज के चरम आनद से ओत-प्रोत हो जाने की अवस्था है।

वैदिक साहित्य और ईस्लामी, यहूदी, पारसी, ईशाई आदि सम्प्रदायों में प्रतिपादित मोक्ष, कैवल्य, निर्वाण आदि सभी का लक्ष्य एक है। वही चरम शास्वत, निर्विकल्प आत्मिक आनंद जो सृष्टि के आरम्भ से मनुष्य की आदम खोज है, और जिसका सहज मार्ग है-सिद्धि साधना।

मन की चंचलता एवं सिद्धि का प्रदर्शन सफलता में बाधक

सिद्धि मार्ग पर अग्रसर होने वाले साधको ! खेल-तमाशों सांसारिक कर्मों में मानव का मन तुरंत लग जाता है, परन्तु सिद्धि साधना, उपासना, भजन, पूजन, कीर्तन आदि में प्रारम्भ में कुछ दिनों तक मन नहीं जमता, चित्त चंचल बना रहता है। कई बार तो उकताहट और घबराहट जैसी होती है, परन्तु यह स्थिति चन्द दिन

ही रहती है। शुरू–शुरू में तो बालक को स्कूल में तथा नववधू को ससुराल में घबराहट होती है, परन्तु कुछ समय बाद ही बालक का स्कूल में और वधू का पतिगृह में न केवल मन लगने लगता है, बल्कि उन्हें वहां पूर्ण आनंद भी आने लगता है।

ठीक यही स्थिति अराधना, उपासना और सिद्धि साधना की है। प्रारम्भ में कुछ दिनों तक ही साधना काल में मन नहीं लगता, परन्तु कुछ समय बादल ही साधना या उपासना में भी सच्चा आनंद आने लगता है।

यदि प्रारम्भ में मन नहीं लगता तो भक्त और भगवान के रक्षक आदिशक्ति परमेश्वरी की आकृति के समक्ष सच्चे हृदय से रोईये, गिड़गिड़ाईये और प्रार्थना कीजिए कि–''हे माँ ! मैं तुम्हारी मूर्ख सन्तान हूँ, निपट अनाड़ी हूँ–परन्तू में क्या करूँ ? हे दयालू मैया ! हम पर कृपा करें, अपने चरणों में मेरा मन लगावें, हमें अपनी भक्ति दें।''

दया की सागर माहेश्वरी को साधक की पुकार को सुननी ही पड़ेगी, क्योंकि हमारे ही नहीं वे सम्पूर्ण जीवों की माता हैं। हम उनसे विमुख हो सकते हैं परन्तु वे हमसे विमुख नहीं हो सकतीं।

साधको ! किसी भी महाशक्ति की सिद्धि प्राप्ति के लिए आप एकान्त स्थान में, शान्त मन से साधना उपसाना करें। सिद्धि साधना, अराधना, उपासना, पूजा–पाण, जप–तप अथवा भक्ति का कोई भी मार्ग अपनाया जाये यदि उसका प्रदर्शन हो जाता है तो पुण्य फलों में न केवल न्यूनता आ जाती है बल्कि बड़ी सीमा तक उसका लोप भी हो जाता है।

सिद्धि साधना या उपासना न तो बिक्री की वस्तु है और न ही प्रदर्शन की। उपासना का थोथा प्रदर्शन आप को समाज में सम्मान और आत्म प्रदर्शन का थोथा सुख और स्वयं को विशिष्ठ समझने का झूठे गर्व तो दिला सकता है परन्तु मातेश्वरी का सच्चा प्यार और कृपाएँ नहीं। माँ हमारी हैं और हम उनके पुत्र, फिर माता–पुत्र के मध्य में अन्यों का क्या काम ? इसलिए जहाँ तक हो सके एकान्त में ही सिद्धि साधना करें।

''साधना का प्रदर्शन'' किस प्रकार भक्तों को कष्ट में डाल देता हैं, इसके हजारों जीवन्त उदाहरण हमारे धार्मिक ग्रन्थों में मिलते हैं–

''भक्तराज प्रह्ललाद'' और ''भक्त ध्रुव'' को बचपन से ही वर्षों तक कठोर तपस्याएँ करनी पड़ी, तब जाकर उन्हें कहीं भगवान के दर्शन हुए, क्योंकि उनकी भक्ति का सम्पूर्ण समाज को ही पता लग गया था। इसके विपरीत महाराज रावण का भाई विभीषण प्रातः काल उठते समय ही चन्द क्षणों के लिए ईश्वर का सुमिरन करता था, परन्तु रावण तो क्या उनकी पत्नी तक से छुपी हुई थी–''उसकी भक्ति''। यह विभीषण की छिपी हुई भक्ति का ही कमाल था कि ध्रुव और प्रह्ललाद की अपेक्षा सौवें अंश से भी कम समय तक अराधना करने पर ही न केवल उसे भगवान राम का सानिन्ध्य प्राप्त हुआ बल्कि इस लोक में लंका का राज्य और परलोक में विष्णु के लोक में वास भी मिला।

इसलिए भगवती की सिद्धि पाने के लिए, कामनावों की प्राप्ति के लिए, धन-जन, सुख-सम्पत्ति, प्रसन्नता, शान्ति एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए सिद्धि-साधना का प्रदर्शन मत कीजिए, तो आप सिद्धि में अवश्य सफलता प्राप्त कर लेंगे।

साधक की योग्यता

सिद्धि करने वाले साधकों के लिए लक्षण निर्देश करते हुए शास्त्रों में कहा है कि उपासक को शीलवान, विनम्र, निश्छल, श्रद्धालु, धैर्यवान, शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ, कार्य सक्षम, सच्चरित्र, इन्द्रिय सयंमी और कुल प्रतिष्ठा का पोषक होना चाहिए।

यह तो स्वयं सिद्ध है कि यदि कोई साधक गुणों से रहित है तो वह श्रद्धा विधान पूर्वक, स्थिर चित्त होकर न तो साधना कर सकता है और न ही उसे कोई लाभ ही मिल सकता। साधना सिद्धि में सफलता का पात्र वही होता है, जो विधि-विधान और पूर्ण मनोयोग के साथ साधना पूरी कर सके।

सिद्धि करने हेतु स्थान का चुनाव

साधको ! सिद्धि-साधना प्रारम्भ करने से पूर्व ''साधना का स्थान'' कैसा हो, उसे भली-भांति समझा लेना चाहिए। जहाँ भी पायें, बैठकर साधना करने लगें, ऐसा ठीक नहीं, क्योंकि साधना करते समय बाह्य रूप से कोई कर्म नहीं कर रहा होता, वह निश्चल बैठा रहता है, इसलिए कि साधना पूर्ण रूपेण ''मानसिक क्रिया'' है। कोई भी मानसिक क्रिया-ऐसा कार्य जिससे आप हृदय की सम्पूर्ण गहराई से जुड़कर अपने तन-मन-सुध तक भूल जाएं-भीड़-भाड़ में हो ही नहीं सकती चाहे वह गम्भीर विषयों का अध्ययन हो या आध्यात्मिक चिन्तन मनन। अतः साधना विशिष्ठ स्थान पर ही किया जाये, तभी लाभप्रद होता है।

प्राचीन शास्त्रों में साधना ग्रन्थ का निर्देश है कि काशी, प्रयाग जैसे तीर्थों, गंगातट पर, या कोई वाटिका, पार्क एवं खेत तथा खलिहानों में बताया गया है। अंततः इसके लिए अपने निवास का शुद्ध साफ कमरा ही माना गया है, जहाँ मानव एकान्त में बैठकर साधना कर सकता है।

सिद्धि की साधना में आसनों का प्रयोग

साधको ! साधना काल में निम्न प्रकार के आसनों का प्रयोग होता है-

1. कुशा आसन, 2. मृगचर्म, 3. ब्याघ्र चर्म, 4. ऊनी वस्त्र, 5. रेशमी वस्त्र और 6. लकड़ी का आसन।

कुशा आसन पर साधना करने पर लाभ

साधको ! साधारण कोई भी सिद्धि साधना हो, यदि कुशा आसन पर बैठकर साधना एवं पूजा-पाठ किया जाये तो सफलता अवश्य मिलती है और इनसे निम्नलिखित लाभ होता है-

(क) साधक का अन्तःकरण पवित्र होता है।
(ख) साधक को सिद्धि प्राप्ति में सुविधा हो जाती है।
(ग) साधक को दृढ़ इच्छा शक्ति और स्वास्थ्य में वृद्धि होती रहती है।
(घ) दुषित प्रभावों अर्थात् भूत बाधाओं का शमन होता है।
(ङ) साधक की साघनात्मक प्रवृत्ति एवं उपलब्धि प्रबल होती है।

मृग चर्म आसन पर साधना का लाभ

मोक्ष प्राप्ति अथवा धन के उद्‌देश्य से की जाने वाली उपासना या सिद्धि साधना में "कृष्ण मृर्ग चर्म" विशेष रूप से अनुकूल प्रभाव देता है।

व्याघ्र चर्म आसन पर साधना का लाभ

यह रजोगुणी आसन है। राजसिक वृत्ति वाले साधकों द्वारा राजसी उद्‌देश्य की पूर्ति की जाने वाली साधना में इसका प्रयोग विशेष प्रभावशाली होता है। सिंह के स्वभाव वाले लगभग सभी गुण इनमें आंशिक रूप से विद्यमान रहते हैं।

परिक्षणों से सिद्ध हुआ है कि व्याघ्र चर्म के पास कोई विषैले जीवन जन्तु नहीं जाते। इसपर बैठे हुए साधक को सांप-बिच्छु का भय नहीं रहता, क्योंकि ये जन्तु व्याघ्र चर्म पर चढ़कर उनपर आसीन साधक को छूने का साहन नहीं कर पाते। निर्विघ्न साधना के लिए व्याघ्र चर्म विशेष उपयोगी है।

वैसे इसका भी वैज्ञानिक महत्व है और पवित्रता में भी यह किसी से कम नहीं। आर्य संस्कृति के सबसे बड़े देवता और सृष्टि के सबसे महान योगी तथा मन्त्र साधक भगवान शिव को यह इतना प्रिय है कि वे उसे ओढ़ने-बिछाने और पहनने तक के काम में लाते हैं।

कम्बल के आसन की उपयोगिता

"कर्म सिद्धि" की लालशा से की जाने वाली उपासना में कम्बल का आसन लाभदाय होता है।

रेशमी आसन की उपयोगिता

रेशमी आसन भी साधना काल में प्रयुक्त होते हैं। इस पर बैठकर जप व सिद्धि साधना करने वाले साधक की शारीरिक विद्युत शक्ति पृथ्वी में प्रवेश न करके सुरक्षित रहती हैं। वस्तुतः ये आसन कुचालक (असंक्रामक नान कण्डक्टर) पदार्थों की कोटि में आते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टि से ऊनी आसन को विशेष महत्वपूर्ण माना गया है। कामना की पूर्ति हेतु लाल कम्बल का प्रयोग विशेष प्रभावी होता है। अनेक रंगों वाला कम्बल और भी श्रेष्ठ माना जाता है।

सिद्धि काल में वर्जित आसन

(क) बांस के बनाए आसन पर बैठकर जप करने से दरिद्रता आती है।

(ख) पत्थर का आसन साधक को व्याधिग्रस्त करता है।

(ग) धरती पर बैठकर [बिना आसन बिछाए] अर्थात् खुली भूमि पर उपासना करने वाले साधक दुःख से आक्रान्त होता है तथा उनकी साधना का फल आधी धरती प्राप्त कर लेती है।

(घ) छेद वाली लकड़ी [घुन वाले काष्ट आसन] का प्रयोग दुर्भाग्यकारी होता है।

(ङ) तिनकों के बने आसन का प्रभाव साधक को धन हानि और यश क्षीण का संताप देता है।

(च) पल्लवों [पत्तों] से निर्मित आसन मानसिक विभ्रम उत्पन्न करता है। और सामान्य वस्त्र कपड़ा तथा कुर्सी का प्रयोग भी साधना में निन्दित कहा गया है।

सिद्धि काल में माला की उपयोगिता और फेरने का नियम

साधको ! आचार्यों ने सिद्धि काल में मंत्र जप करने के लिए माला विशेष का नियम बनाया है। व्यवहारिक रूप में हम रूद्राक्ष, तुलसी, कमलगट्ठा, बैजयन्ती, शंख, चन्दन, राजमणि, पुत्रजीवा, हल्दी और स्फटिक आदि की मालाएँ जप कार्य में उपयोग करते हैं।

मंत्र जप के लिए माला का पूर्ण और शुद्ध होना आवश्यक है। प्रायः माला 108 दानों की होती है। अतः दस माला फेरने का अर्थ हुआ कि साधक ने अपने मंत्र का 1080 बार जप किया। जपते समय माला का एक फेरा पूर्ण हो जाने पर "सुमेरू" तक पहुंच कर वहां से फिर विपरीत दिशा में जप प्रारम्भ कर देना चाहिए।

"सुमेरू" को लांघकर आगे बढ़ना वर्जित है।

जप करते समय निर्धारित मणियों द्वारा बनी माला ही होनी चाहिए। काम चलाऊ या सजावट के रूप में रेडियम, प्लास्टिक या कांच की माला का प्रयोग निसिद्ध है। जप में माला का उपयोग बांये हाथ से न करें। माला के मणियों को नाखून का स्पर्श वर्जित है। माला जपते समय उँगलियों और मणियों के बीच कोई व्यवधान अन्तर नहीं आना चाहिए।

जप करते समय मंत्र को गुप्त रखना चाहिए, अर्थात् मन ही मन में मंत्र जप करना चाहिए। लाल कपड़े की "गोमुखी" में हाथ रखकर जप करें। खुली माला से जप करने पर यक्ष, राक्षस, बैताल, पिशाच, सिद्ध और विद्याधर आदि सफलता का प्रभाव ग्रहण कर लेते हैं और खुली माला से जप करने पर आपका ध्यान सुमेरू या माला समाप्ति की ओर भी जा सकता है, जिससे विघ्न उत्पन्न होता है।

प्रातः काल जप के समय में माला नाभि के सामने मध्याह्न में हृदय के सामने और सायंकाल मस्तक के सामने रखकर जप करना चाहिए। जप करते समय उच्चारण साफ एवं स्पष्ट हों।

माला को मध्यमा उँगली मध्य पर्व पर अथवा अनामिका के मध्य पर्व पर रखें व अंगुष्ठ (अंगूठे) के प्रथम पर्व से एक-एक मनके को एक-एक मंत्र बोलने के बाद आगे बढ़ाईये। तर्जनी माला से स्पर्श नहीं होनी चाहिए। जप के समय परस्पर बातें नहीं करनी चाहिए। सुमेरू तक पहुंचने पर हृदय की ओर से माला को घुमाकर पुनः जप आरम्भ करें। सुमेरू का उलंघन करना वर्जित है।

"सुमेरू" एक माला के पूर्ण होने का "संकेतक" है। सुमेरू पर जप नहीं होता है। माला घुमाते समय बांटे से दाहिनी ओर घुमावें। माला जप के समय हाथ से गिरने पर दोष होता है, अतः इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

जप के समय मन प्रसन्न रखें, पूर्ण निष्ठा भाव रखें। स्वयं को जप के योग्य व समर्थ समझें। इष्ट के प्रति श्रद्धा रखें। एकाग्रचित हो, मन में उत्साह हो, दृढ़ विश्वास हो तथा अहंकार, घंमड और गर्व भाव मन में न लायें, तभी आप जप के द्वारा अपने इष्ट की कृपा व दया प्राप्त कर सकेंगे। मंत्र के निर्धारित संख्या का पूर्ण जप करने से ही सिद्धि में सफलता मिलती है।

माला की बनावट–सामान्यः माला में 108 मनके अर्थात दाने होते हैं तथा एक सुमेरू होता है। प्रत्येक मनके के बीच में गांठ लगी होनी चाहिए, ताकि प्रत्येक मनका अलग-अलग रहे।

माला को गूंथने के लिए सोने, चांदी अथवा रेशमी धागे का प्रयोग करना चाहिए। यह मनका साफ, स्वस्थ हों, टूटा-फूटा न हो। मंत्र जप के लिए माला का पूर्ण और शुद्ध होना आवश्यक है।

विभिन्न जप कार्यों में विभिन्न मालाओं का प्रयोग

देवी साधना हेतु	लाल चन्दन एवं रूद्राक्ष की माला।
वैष्णवी मत साधना हेतु	तुलसी की माला।
शत्रु नाश के लिए	कमलगट्ठे व हल्दी की माला।
सन्तान प्राप्ति हेतु	पुत्रजीवा की माला।
श्री गणेश साधना हेतु	हाथी दाँत की माला।
अभिष्ट सिद्धि हेतु	चांदी की माला।
धन प्राप्ति हेतु	मूंगी की माला।
पाप नाश हेतु	कुशा जड़ की माला
भैरवी विद्या सिद्धि हेतु	मूंगा, शंख, मणि अथवा स्फटिक की माला।

सिद्धि काल में पूजन हेतु पुष्प तोड़ने की विधि और मंत्र

साधको ! सिद्धि काल में अपने इष्ट देव अथवा इष्ट देवी की पूजा करने हेतु पुष्प, बिल्व पत्र, तुलसी पत्र आदि चढ़ाने का विधान है। इन पुष्पों को वृक्ष से तोड़ने की विधि शास्त्रों में निर्मित है। "लिंग पुराण में" वर्णित है कि साधक स्नान के पश्चात् ही तुलसी पत्र, बिल्वपत्र व पुष्प तोड़ें। पुष्प तोड़ने से पहले पूर्व की ओर मुख कर हाथ जोड़कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

मा नु शोकं कुरुष्वं त्वं स्थान त्यागं च मा कुरु।
देव पूजनार्थाय प्राथयामि वनस्पते॥

पहला फूल तोड़ते समय-"**ॐ वरूणाय नमः**" दूसरा फूल तोड़ते समय "**ॐव्योमाय नमः**" और तीसरा फूल तोड़ते समय "**ॐ पृथिब्ये नमः**" बोलें, फिर आवश्यकतानुसार बिना मंत्र का ही आवश्यकतानुसार फूल तोड़ लें।

बिल्वपत्र तोड़ने का मंत्र और विधि तथा बिल्वपत्र तोड़ने का निषिद्ध काल

साधको ! स्नान से पवित्र होकर निम्नलिखत मंत्रोंच्चारण करते हुए क्रमशः पाँच बिल्वपत्र पाँच बार मंत्र पढ़कर तोड़े। इसके पश्चात् इच्छानुसार बिल्वपत्र तोड़ लें। बिल्वपत्र तोड़ने का मंत्र-

अमृतोद्भव श्री वृक्ष महादेव प्रिय सदा।
गृहणामि तव पत्राणि देवी पूजनार्थ मादरात्॥

ध्यान रहे–

चतुर्थी, अष्टम, नवमी, चतुर्दशी, अमावास्या, संक्रान्त के दिन और सोमवार को बिल्वपत्र न तोड़ें। निषिद्ध समय से पहले दिन का तोड़ा बिल्वपत्र चढ़ाना चाहिए। शास्त्रों ने तो यहाँ तक कहा है कि यदि नूतन बिल्वपत्र न मिल सके तो चढ़ाए हुए बिल्वपत्र को ही धो–धो कर बार–बार चढ़ाते रहे। [लिंग पुराण से]

वासी जल और पुष्प पूजन में वर्जित

जो फूल, पत्ते और जल बासी हो गए हों उन्हें देवताओं पर न चढ़ाऐं। किन्तु तुसली पत्र और गंगाजल वासी नहीं होते। तीर्थों का जल भी बासी नहीं होता। वस्त्र, यज्ञोपवीत और आभूषण में भी निर्माल्य का दोष नहीं आता। माली के घर में रखे हुए फूलों में बासी दोष नहीं आता। मणि, रत्न, वस्त्र, सुवर्ण आदि से बनाये गए फूल बासी नहीं होते। इन्हे प्रोक्षण कर (पोंछकर) चढ़ाना चाहिए।

[तत्व सागर संहिता से]

सामान्यतया निषिद्ध पुष्प

सिद्धि करने वाले भक्तो ! यहाँ उन निषेधों को दिया जा रहा है जो सामान्यतया सब पूजा में सब फूलों पर लागू होते हैं–

भगवान या भगवती पर चढ़ाया हुआ फूल "निर्माल्य" कहलाता है। सूंघा हुआ या अंग में लगाया हुआ फूल इसी कोटि में आता है–इन्हें न चढ़ायें। भौरे के सूंघने से फूल दुषित नहीं होता। जो फूल अपवित्र बर्तन में रख दिया गया हो, अपवित्र स्थान में उत्पन्न हो, आग से झुलस गया हो, कीडों से विद्ध हो, सुन्दर न हो, जिसकी पंखुडियां बिखर गयी हों, जो पृथ्वी पर गिर पड़ा हो, जो पूर्णतः खिला न हो, जिस में खट्टी गंध या सड़ांध आती हो, निर्गन्ध हो या उग्र गंध वाला हो–ऐसे पुष्पों को नहीं चढ़ाना चाहिए।

जो फूल बाँए हाथ, पहनने वाले अधोवस्त्र, आक और रेंड़ के पत्ते में रखकर लाए गये हों, वे फूल त्याज्य हैं। कलियों को चढ़ाना मना है, किन्तु यह निषेध कमल पर लागू नहीं है।

फूल को जल में डूबोकर धोना मना है। केवल जल से इसका प्रोक्षण कर देना चाहिए।

कदम्ब, सारहीन फूल या कठूमर, केवड़ा, शिरीष, तिन्तिणी, बकुल, कोष्ठ, कैथ, गाजर, बहेड़ा, कपास, गंभारी, पत्रकंटक, सेमल, अनार, धव, बसंत ॠतु में खिलने वाले कंद विशेष, कुंद, जूही, मदन्ती, सर्ज और दोप में खिले फूल भगवान को नहीं चढ़ाना चाहिए। [वीर मित्रोदय पूजा प्रकाश से]

पूजन के लिए विहित पत्र पुष्प एवं विभिन्न प्रकार के फूलों को चढ़ाने से मिलने वाले फल का तारतम्य

पूजा उपासना में या सिद्धि साधना में अपने इष्टदेव पर फूल चढ़ाने का बहुत अधिक महत्व है। बताया गया है कि तपशील सर्वगुण सम्पन्न वेद में निष्णांत किसी ब्राह्मण को सौ सुवर्ण मुद्रा दान करने पर जो फल प्राप्त होता है, वह भगवान पर सौ फूल चढ़ा देने से प्राप्त हो जाता है।

शास्त्रों ने कुछ फूलों के चढ़ाने से मिलने वाले फल का ''तारतम्य'' बतलाया है-

दस सुवर्ण के माप के बराबर सुवर्ण दान का फल एक आक के फूल को चढ़ाने से मिल जाता है। हजार आक के फूलों की अपेक्षा एक कनेर का फूल, हजार कनेर के फूलों को चढ़ाने की अपेक्षा एक बिल्वपत्र से फल मिल जाता है और हजार बिल्वपत्रों की अपेक्षा एक गूमा फूल (द्रोण पुष्प) होता है। इस तरह हजार गूमा से बढ़कर एक चिचिड़ा, [चिरचिरा, अपामार्ग] हजार चिचिड़ों से बढ़कर एक कुशा का फूल, हजार कुशा पुष्पों से बढ़कर एक शमी का पत्ता, हजार शमी के पत्ते से बढ़कर एक धतूरा, हजार धतूरे से बढ़कर एक शमी का फूल होता है। अन्त में बतलाया गया है कि समस्त फूलों की जातियों में से बढ़कर ''नील कमल'' होता है।

महर्षि ब्यास जी ने ''कनेर'' की कोटि में-चमेली, मौलसिरी, पाटला, मदार, श्वेत कमल, शमी के फूल और भटकैया को रखा है। इसी तरह धतूरे की कोटि में नाग चंपा और पुनांग को माना है।

भविष्य पुराण में-भगवान व भगवती पर चढ़ाने योग्य और भी फूलों के नाम गिनायें हैं-करवीर, (कनेर) मौलसिरी, आक, धतूरा, पाढ़र, बड़ी कटेरी, कुरैया, काश, मन्दार, अपराजिता, शमी का फूल, कुब्जक, शंख पुष्पी, चिचिड़ा, कमल, चमेली, नाग चम्पा, चम्पा, खस, तगर, नाग केशर, किंकिरात [पीले फूल वाली कट सरैया] गूमा, शीशम, जयन्ती, बेला, पलाश, बेल पत्ता, कुशुम पुष्प, केशर, लाल कमल और नील कमल, गेंदा गुलाब। ये सभी पुष्प भगवान पर चढ़ाये जाते हैं। ***[वीर मित्रोदय पूजा प्रकाश]***

पुष्पादि चढ़ाने और उतारने की विधि

शास्त्रों में प्रमाण है कि-फूल, फल और पत्ते जैसे उगते हैं, वैसे ही इन्हें चढ़ाना चाहिए। उत्पन्न होते समय इनका मुख ऊपर की ओर होता है, अतः चढ़ाते समय इनका मुख ऊपर की ओर ही रखना चाहिए।

दुर्वा एवं तुलसी दल को अपनी ओर नीचे मुख कर चढ़ाना चाहिए। इनसे भिन्न पत्ते को ऊपर मुख कर या नीचे मुख कर दोनों ही प्रकार से चढ़ाया जा सकता है।

दाहिने हाथ के करतल को उतान कर मध्यमा, अनामिका और अंगूठे की सहायता से फूल चढ़ाना चाहिए।

चढ़े हुए फूल को अंगूठे और तर्जनी की सहायता से उतारें।

[सार दीपिका, आचारेन्दु, चिन्तामणि और कालिका पुराण से आधारित प्रमाण।]

निवास स्थान में एक ही देवता या देवी के कई प्रतिमा रखना निषेध

साधना करने वाले साधकों ! घर में कभी-कभी एक ही देवता की अनेक मूर्तियों का संग्रह हो जाता है, अतएव साधक को उनकी संख्या का औचित्य ध्यान में रखना आवश्यक है-

घर में दो शिवलिंगों, दो शंखों, दो सूर्य प्रतिमाओं, दो शालिग्रामों, दो गोमती चक्रों, तीन गणपति प्रतिमाओं की स्थापना नहीं करनी चाहिए।

देखें प्रमाण-

गृहे लिंग द्वयं नाचर्यं गणेश त्रियं तथा।
शंख द्वयं तथा सूर्यो नाद्यां शक्ति त्रय तथा॥
द्वे चक्रे द्वारका याश्य शालिग्राम शिला द्वयम्।
तषां तु पूजने नैव हुद्वेगं पाप्नुयाद् गृही॥

[प्रतिष्ठा मयूरव]

सिद्धि साधना आरम्भ से पूर्व साधकों के लिए अति आवश्यक निर्देश

भगवती की साधना करने वाले साधको ! सिद्धि साधना अथवा मंत्रानुष्ठान हेतु नियमों का पालन करना तो अपरिहार्य है ही, साध ही कुछ अन्य नियम भी है, जिनका पालन करना आवश्यक होता है। अनेक विद्वानों मर्मशों ने परीक्षण करके इनकी व्यवहारिक उपयोगिता और प्रभाव को स्वीकार किया है। सिद्धि साधना विधान के अन्तर्गत साधकों को इस प्रकार का निर्देश दिए गये हैं-

1. स्नान करके शुद्ध स्वच्छ वस्त्र पहन कर उपासना स्थल में जाना चाहिए।
2. वस्त्र दो हों और सिले हुए न हों।
3. साधना या उपासना स्थल पूर्णतया शान्त सुरक्षित और एकान्त हो।
4. दिन भर के पहने हुए वस्त्र साधना के समय नहीं पहनने चाहिए।
5. आसन पर एक बार बैठ जाने पर बार-बार उठना उचित नहीं होता।

6. बैठने में सदैव शरीर सीधा रहे, मेरूदण्ट को झुकाना नहीं चाहिए।

7. सिद्धि अनुष्ठान में पूजन, जप और आहुतियों की पूर्ति आवश्यक होनी चाहिए।

8. सिद्धि साधना आरम्भ करते समय शुभ दिन, तिथि, मुहुर्त आदि का विचार अवश्य कर लेना चाहिए। लघु साधना के लिए दोनों नवरात्रि [चैत्र और आश्विन मास में होने वाली] उत्तम होता है।

9. जप काल में नित्य देवता या देवी का आवाह्न विसर्जन करते रहना आवश्यक होता है। किन्तु मन्दिरों में स्थापित विशाल देव प्रतिमाओं के समक्ष साधना करने पर आवाहन विसर्जन की आवश्यकता नहीं होती।

10. धूप, दीप, अक्षत, चन्दन, गंगाजल, बिल्वपत्र, पुष्प और नैवेद्य नियमानुसार प्रयोग नित्य ही अवश्य ही किया जाये।

11. सिद्धि अनुष्ठान की समाप्ति कर हवन, तर्पण, मार्जन, क्रिया एवं कुमारी कन्यावों का पूजन-भोजन, दान तथा ब्राह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा दान देकर संतुष्ट करना चाहिए।

12. पूरी साधना काल में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिए।

13. श्रृंगार, सज्ञा, स्वादेच्छा, पर स्पर्श न करके अपना कार्य स्वयं करें। कार्य व विचार दोनों ही पवित्र एवं स्वच्छ हों।

14. सिद्धि अनुष्ठान आरम्भ के समय जैसा संकल्प किया जाये, उसका अन्त तक पालन करना चाहिए।

15. सिद्धि काल से बचे समय में भी धार्मिक विषयो का चिन्तन, धर्म-चर्चा, आध्यात्मिक विचार वाले लोगों का सामीप्य और इष्ट देवता का स्मरण कल्याण कारी होता है।

16. मंत्र का उच्चारण पूर्णतः शुद्ध हो।

17. सिद्धि अनुष्ठान में मंत्र जप पूर्ण होने के बाद निर्धारित मंत्र का "दशांस भाग" मंत्र जप करते हुए हवन में आहुतियां देनी चाहिए।

सिद्धि काल में आवश्यक निषेध

1. साधना के दिनों में प्रतिकूल भोजन सर्वथा त्याज्य है। गरिष्ठ, तामसिक भोजन से साधक की मनोशान्ति और शुचिता नष्ट होती है।

2. कुत्संग, अश्लील दृश्य, अनैतिक विषयों की चर्चा, काम-चिन्तन, श्रृंगार उत्तेजक वस्तु, दृश्य अथवा वार्तालाप सर्वथा वर्जित है।

3. मादक द्रव्यों का निषेध। बहुतेरे साधु, फकीर गांजे-भंग-चरस का दम लगाकर कहते हैं इससे ध्यान लगता है-यह सर्वथा असंगत है। साधक के लिए किसी भी प्रकार के मादक पदार्थ की स्वीकृति नहीं दी गई है। साधना काल में समस्त प्रकार का विलासित और मादक पदार्थों का निषेध कहा गया है।

4. साधक के लिए अनुष्ठान काल में गांजा, भांग, चरस, अफीम, शराब,

ताड़ी, सिगरेट, बीड़ी, तम्बाकू, मांस, मछली, अंडे, मुर्गे, लहसुन, प्याज आदि को सर्वथा त्याग कर संयमित जीवन व्यतीत करना चाहिए।

5. शिखा खोलकर साधना नहीं करनी चाहिए।

6. बिना स्नान किए, अपवित्र अवस्था में साधना करना वर्जित है।

7. नग्न होकर साधना करना निषेध है।

8. बिना आसन बिछाए, नंगी भूमि पर जप व साधना करना निषेध है।

9. जप के समय में वार्तालाप नहीं किया जाता।

10. भीड़भाड़ वाले जनसंख्या स्थान में जप या साधना करना वर्जित है।

11. माला जपते समय हाथ और सिर खुला नहीं रहना चाहिए।

12. राह चलते या राह में कहीं बैठकर जप नहीं किया जाता।

13. भोजन करते समय अथवा शयन काल में जप नहीं किया जाता।

14. आसन विरूद्ध किसी भी स्थिति में बैठकर, लेट कर, या पैर पसार कर जप नहीं किया जाता।

15. छींक, खखार, खाँसी, थूकना जैसी व्याधि के समय जप न करें।

16. प्रत्येक यंत्र-मंत्र व तंत्र साधना की सिध्दि साधक के आचरण पर निर्भर करती है। मन-वचन तथा कर्म से पवित्र, विश्वासी, श्रद्धालू, परोपकारी, स्वार्थ सहित एवं विवेकी साधक ही भगवती की सिध्दि साधना में सफलता प्राप्त कर पाते हैं।

17. काम, क्रोध, मद्, लोभ, मोह, हिंसा, एवं दूसरों को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से की गई साधना निष्फल हो जाती है।

18. तांत्रिक साधना अथवा यंत्र-मंत्र साधना में या देवि-देवताओं की सिध्दि में सफलता प्राप्ति के लिए किसी अनुभवी गुरू का मार्ग दर्शन प्राप्त करना आवश्यक होता है। सामान्य प्रयोग तो अध्ययन एवं अभ्यास से ही सिद्ध हो जाते हैं, परन्तु विशिष्ठ प्रयोगों की सिध्दि के लिए किसी सुयोग्य गुरू का शिष्यत्व ग्रहण करके ही साधना आरम्भ करनी चाहिए।

19. धर्म, नीति, सत्य, न्याय, सदाचार, नैतिकता एवं कानून के विरूद्ध तांत्रिक सिध्दि का प्रयोग भूल कर भी नहीं करना चाहिए।

20. प्रस्तुत संकलन प्राचीन सिध्दि साधना विधियों से साधकों को सुपरिचित कराने के उद्देश्य से लेखन एवं प्रकाशित किया गया है। इन साधनों का प्रयोग किसी को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से कभी नहीं करना चाहिए। प्रमादवश होने वाली हानि का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व स्वयं साधक पर ही होगा। ठंड़ा शीतल जल प्राप्त करने हेतु कुँआ बनाया जाता है। यदि कोई मन्द बुध्दि स्त्री या पुरुष घर से कलह या किसी भी कारण कुँए में गिरकर आत्महत्या कर ले तो कुआँ बनाने वाले का क्या दोष ? पर प्रभु के आगे किसी का वश नहीं चलता। इस पुस्तक के पूर्व भी हमारी लिखी हुई कई सिध्दि साधना व तांत्रिक पुस्तकें अमित पॉकेट बुक्स जालंधर सिटी से प्रकाशित हैं, जिसके प्रयोग से अनेक नेक लोग लाभान्वित हो रहे हैं और कुछ लोग प्राण से भी हाथ धो बैठे हैं। इसका कारण है-साधना का गलत प्रयोग।

सिद्धि साधना की अवधि और ब्रह्मचर्य

पाठको ! सिद्धि-साधना का प्रयोग लम्बे समय तक चलने वाले थोड़े दिनों तक चलने वाले भी होते हैं। तीन, सात, ग्यारह, पन्द्रह, इक्कीस और इक्तालीस दिन के प्रयोगों में ब्रह्मचर्य अर्थात् स्त्रीं संसर्ग से दूर रहना माना जाता है, किन्तु लम्बे समय तक किए जाने वाले प्रयोग "राजसी" कहलाते हैं। राजसी प्रयोग में मन के अद्विग्न होने पर पत्नी के साथ सम्पर्क करने की आज्ञा शास्त्र विहित है, किन्तु वह भी प्रतिदिन नहीं। संभोग को भोजन की तरह दैनिक आवश्यकता बनाने की आज्ञा कोई भी शास्त्र नहीं देता।

सिद्धि में सफलता के आवश्यक सूत्र

[विश्व विख्यात तांत्रिक पंड़ित वाई.एन. झा "तूफान" का स्वयं अपनी साधना सफलता का अनुभव]

1. श्रद्धा "सिद्धि" का प्राण है। श्रद्धा सहित रहकर साधना करना जीवन है। यदि आप सिद्धि साधना करने जा रहे हैं तो इष्ट देव या अपनी इष्टेदवी पर परम विश्वास करके साधना में एकाग्रचित्त हो जाइये, तभी आपको इसकी वास्तविकता का पता लगेगा।

2. सिद्धि काल में अपने इष्टदेव के प्रति सन्देह करने पर सिद्धि की सफलता शक्तिहीन हो जाती है, अर्थात् मृत हो जाती है और मृत वस्तु कोई भी कार्य नहीं कर सकती। अतः साधना काल में इष्टदेव, मंत्र व गुरू के प्रति सन्देह न करें।

3. जिस प्रकार स्त्री अपने पति को परमेश्वर मान कर मोक्ष प्राप्ति करती हैं, उसी प्रकार साधना काल में अपने इष्ट देव को परमेश्वर या पमेश्वरी मानें, तभी सिद्धि प्राप्त होगी।

4. यंत्र-मंत्र-तंत्र व सिद्धियाँ-ये सब भगवान के ही स्वरूप हैं। सिर्फ आवश्यकता है उनसे एकाकार होने की। दिव्य प्रकाश का दर्शन उसी को होता है, जो अपने लक्ष्य के प्रति दीवाना हो जाता है। साधना के प्रति समर्पण का भाव पैदा कर जो अपने लक्ष्य पे दीवाना हो जाता है, सारी सिद्धियाँ व शक्तियाँ उसी की होकर रह जाती हैं। क्योंकि आप उन शक्तियों के अंश हैं। अतः उन शक्तियों से हृदय का एकाकार स्थापित करने के पश्चात् ही सिद्धि में सफलता मिलेगी।

5. साधना काल में अपने आप को, अपने मन को, अपने कर्म को इष्ट देव को समर्पित कर दें। वह आपके अन्तः करण में विद्यमान हैं। यदि आप में उनके प्रति निष्ठा है, प्रेम है, लग्न है, सचाई है तो वे आपके सारे कार्यों को अवश्य सम्पन्न करेंगे। साधना काल में अपने इष्ट देवी का इष्ट देव से उज्ज्वल हृदय से कहें-"हे ...तेश्वरी ! मैं तो एक कठपुतली मात्र हूँ और इस महान ईश्वरीय कार्य कर रहा हूँ।

हे भगवती ! अब इस पापी को यश, मान, सम्मान देना आपके हाथ में है।" इस प्रकार के मन में भाव पैदा करें। करके तो देखें–सफलता आपकी सहचरी होकर रह जाएगी।

6. भगवती प्रेम–भाव से मिलती है, तर्क या बुद्धि से कदापि वे नहीं मिलती, इसलिए तर्क से दूर रहकर सिद्धि साधना करनी चाहिए।

7. साधना करने से पूर्व किसी सिद्ध गुरू की शरण में जाकर ही सिद्धि करना आपके लिए हितकर रहेगा। अभ्यास के बाद आप स्वतंत्र साधना कर सकते हैं।

8. साधना करने का स्थान एकान्त हो, साफ तथा पवित्र हो। वहां कोई दूसरा न आए–जाए और न ही वहां कोई शब्दार्थ हो।

9. सिद्धि साधना में क्रियाहीनता का अर्थ ही मृत्यु है। इसलिए स्नानादि से पवित्र होकर ही अपने इष्टदेव की अर्चना करनी चाहिए।

10. शुभ मुहूर्त में की गई साधना का परिणाम अच्छा होता है। इसलिए साधक को पंचाङ्ग का ज्ञान होना भी आवश्यक है।

11. जब तक साधना पूर्ण न हो जाय तब तक ब्रह्मचर्य व्रत पालन, भूमि शयन तथा एक बार भोजन करना चाहिए।

12. अपने यहां आने–जाने वाले रिश्तेदारों और मित्रों को सूचित कर दें कि वे आपकी साधना में रूकावट अथवा साधना के दौरान खलल न डालें।

13. साधना के समय हुई अनुभूति या स्वप्न अपने गुरू के सिवा किसी को कहना ठीक नहीं। इनको प्रकाशित करने से सिद्धि मिलने के आसार क्षीण हो जाते हैं तथा इस तरह के दृष्टान्त, स्वप्न और अनुभव होना बन्द हो जाता है।

14. साधना में उपयोग होने वाली सामग्री पहले से ही एकत्रित कर लेनी चाहिए, तभी साधना आरम्भ करें।

15. साधना के बीच में अपने आसन से उठना नहीं चाहिए।

16. साधना काल में नित्य प्रति सर्वप्रथम गायत्री मंत्र की एक माला एवं श्री गणेश मंत्र की एक माला जप करना आवश्यक है।

17. साधना सिद्धि प्राप्त होने के पश्चात् उसकी शक्ति को मानव–कल्याण के लिए जितना ही लोगों में बाँटेंगे, उतना ही आपमें अपूर्व शक्ति भरती चली जाएगी।

18. यदि साधना काल में कोई रोग–पीड़ा या पारीवारिक क्लेश उत्पन्न हो रहा हो तो आपको निराश होकर मंत्र जप छोड़ना नहीं चाहिए, क्योंकि साधना में गहराई आने पर दुःख क्लेश दूर हो जाते हैं।

19. बुरे कार्यों में साधना शक्ति का प्रयोग न करें, अन्यथा वही शक्ति कुछ दिनों के पश्चात् आपका प्राण हर लेंगी। साथ ही आप शक्तिहीन हो जायेंगे।

20. साधना प्रारम्भ से पूर्व माता–पिता एवं गुरू जनों का आर्शीवाद परम आवश्यक है। जो व्यक्ति इन तीनों का आदर करते हैं, उसे समस्त सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं।

21. सिद्धि साधना में कुछ ऐसी भी साधना हैं जिनकी साधना हेतु श्मशान में जाना पड़ता है। यदि आपको वहाँ जाना अच्छा न लगता हो तो श्मशान की मिट्टी लाकर आसन के नीचे रखने पर श्मशान के बराबर सिद्धि प्राप्त होती है।

22. सिद्धि के पश्चात् गुरू को दक्षिणा देकर ही आगे का कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

23. साधना के दिनों में बराबर गुरू से परमार्श करते रहना चाहिए।

24. घर में जप करने या सिद्धि करने पर यदि एक गुणा फल मिलता है, तो सौ गुणा जंगल में, हजार गुणा सरोवर में, लाख गुणा नदी, करोड़ गुणा पर्वत शिखर, अरबों गुणा देव मंदिर और सिद्धपीठ में सिद्धि करने पर साधक को अनंतगुणा फलों की प्राप्ति होती है।

25. साधना काल में माला हाथ से छूटकर गिरनी नहीं चाहिए। माला का टूटना (साधना काल में) मौत का आना ही है। ऐसा समझकर निरतन्तर साधना रहना चाहिए।

26. जप करते समय यदि शौच अथवा लघुशंका आ जाए तो उसका विरोध नहीं करना चाहिए। बल्कि शीघ्र ही वह कार्य पूरा कर पुनः स्नान से पवित्र हो जप प्रारम्भ करना चाहिए।

27. जप की गिनती माला के आधार पर पूर्ण रूप से सही रखनी चाहिए।

28. सिद्धि साधना आरम्भ कर देने पर यदि साधक के घर में मरण शौच या जन्मशौच पड़ जाये तो भी सिद्धि अनुष्ठान नहीं छोड़ना चाहिए।

29. शान्ति कर्म की सभी साधनाएँ पूर्व की दिशा में मुँह करके करनी चाहिए। उच्चाटन, स्तम्भन आदि की क्रियाएँ पश्चिम की दिशा में मुख करके करनी चाहिए।

सिद्धि साधना के दिनों में आहार

साधको ! साधना के दिनों में साधक को शुद्ध व पवित्र शाकाहारी भोजन करना चाहिए। ध्यान रहे–दुषित आहार लेने से साधना असफल हो जायगी।

दुषित आहार तीन प्रकार के होते हैं–

1. **वर्ण या जाति दुषित आहार**–जिस घर में मांस, मछली, अंडे, लहुसन, प्याज आदि तामसिक पदार्थों का सेवन होता है, जिस घर के व्यक्ति सात्विक प्रवृत्ति तथा सदाचारी न हों, नास्तिक परिवार हो या अशांत वातावरण का परिवार हो, उसके घर भोजन करने से साधक की साधना में खलल पहुँचता है।

2. **आश्रय दोष दुषित आहार**–अपवित्र स्थान पर बनाया हुआ या रखा हुआ भोजन या व्यभिचारी अथवा दुराचारी द्वारा स्पर्श किया हुआ भोजन सात्विक एवं शुद्ध ही क्यों न हो, त्याग कर देना चाहिए।

3. **निमित्र विधि दुषित आहार**–साधक को शुद्ध व पवित्र भोजन ही करना चाहिए। भोजन ग्रहण करने से पूर्व यदि किसी का मन उस भोजन पर ललच गया हो तो उसे भी त्याग कर देना चाहिए।

साधना के दिनों में साधक हेतु भोजन पात्र

साधक यदि केले के पत्ते पर भोजन करे तो अत्यन्त ही शुभ, अभाव में तांबे या पीतल के बर्तन में भोजन करना चाहिए। साधक को चाहिए कि साधना काल में तेल, उड़द, नमक, गाजर, मांस, मछली, अंडे, मुर्गे, लहुसन और प्याज का स्पर्श भी नहीं करना चाहिए।

सूर्यग्रहण या चन्द्र ग्रहण के समय सिद्धि करने का फल

उपासको ! सूर्यग्रहण अथवा चन्द्रग्रहण लगने पर साधकों के लिए सिद्धि करने का विधान सम्पूर्ण सिद्धि विधान से आसान है। जब ग्रहण लगे तो गंगा नदी में सीने तक पानी में खड़े होकर, ग्रहण के प्रारम्भ से अन्तिम समय तक अपने इष्ट देव [जिसकी आप सिद्धि करना चाहते हैं] के मूल मंत्र का जप करते रहें। तत्पश्चात् गंगा के किनारे ब्राह्मण (वैदिक पंडित) के द्वारा विधि पूर्वक ११ माला हवन करें, अर्थात इष्ट देव के मूल मंत्र पढ़कर हवन में आहुति डालें। इसके बाद माता गंगा की आरती करें और यह वन्दना करें कि–"हे माँ ! मेरी मनोकामना पूर्ण करें।"

बस समझिए कि आपको सिद्धि मिल गई। आजमा कर देखें।

सिद्धि साधना में सावधानी

साधको ! क्या आप "सिद्धि" करना चाहते हैं ?

सावधान ! यदि आप साधना प्रारम्भ कर मध्य में ही छोड़ देंगे या गुरू के परामर्श के बिना अथवा "गुरू कवच यंत्र" धारण किए बिना आप सिद्धि आरम्भ कर रहे हैं तो आपकी मृत्यु भी हो संकती है, आप पागल हो सकते हैं, आपका सर्वनाश हो सकता है। "गुरू कवच यंत्र" धारण कर पहले अपने हृदय को दृढ़ बना लें कि यह कार्य हमें करना ही है, चाहे मर ही क्यों न जाऊँ। जिद्‌दी बन इष्टदेव पर विश्वास कर विधिपूर्वक जप करने से अवश्य सफलता मिलती है–यह स्वयं आजमाएँ हैं।

वैसे तो कोई भी शक्तियाँ किसी के वश में नहीं होना चाहती फिर भी साधकों की अटूट साधना पर साधक को आर्शीवाद देने उन्हें आना ही पड़ता है।

साधना काल में अत्यन्त विकराल, डरावनी दृश्य, भूत, प्रेत, राक्षस, बैताल, नाचते हुए नर कंकाल, आगों की वर्षा, पत्थरों की वर्षा, भयंकर नाद और भयंकर विकराल जीव आदि भी दिखाई पड़ते हैं, परन्तु भय से साधक को साधना नहीं

छोड़नी चाहिए। यदि आप साधना जारी रखेंगे तो आपको कुछ नहीं होगा, बल्कि यह डरावना दृश्य आपकी सफलता का प्रथम राज है। यदि आप उस समय भयभीत होकर जप छोड़ देंगे तो आपकी मृत्यु भी हो सकती है। इसलिए पूर्ण रूपेण दृढ़ होकर, सोच-समझकर ही सिद्धि साधना आरम्भ करें।

साधना आरम्भ से पूर्व पवित्री धारण का विधान

जब साधक साधना करने बैठे तो साधना प्रारम्भ के पूर्व स्वर्ण, रजत, तांबा या कुशा की पवित्री (अंगूठी) दाहिने हाथ में अंगूठे से चौथी ऊँगली में अवश्य धारण करले, अन्यथा सिद्धि साधना में बाधा आती है।

सिद्धि काल में मंत्र जप हेतु स्वच्छ व शुद्ध माला का चुनाव

साधको ! सिद्धि साधना काल में इष्टदेव का मंत्र जप हेतु जो माला उपयोग में लावें, उसके चुनाव में निम्नलिखित बातों पर अवश्य ध्यान दें, वरना जप कार्य में विघ्न उत्पन्न हो सकता है।

1. माला के दाने छोटे-बड़े न हो।
2. "सुमेरू" के अतिरिक्त एक सौ आठ (१०८) दाने होने चाहिए।
3. शुद्ध सूत्र (धागे) में दाने पिरोए हुए हों।
4. ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और शूद्र के लिए क्रमशः श्वेत, पीला, लाल और कुम्भ वर्ण के सूत्र में माला पिरोने का विधान है।
5. विधान के तार में पिरोई माला सब वर्णों के लोग सब प्रकार के सिद्धि अनुष्ठान में प्रयोग कर सकते हैं।
6. दाने के बीच में गांठ (माला के धागे में) अवश्य लगावें।
7. सुमेरू के लिए "ब्रह्मग्रन्थि" लगानी चाहिए।
8. रूद्राक्ष के दानों में "मुख" और "पुच्छ" का भी भेद होता है। मुख कुछ ऊँचा होता है और पुच्छ नीचा। माला पिरौते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि दानों का मुख या पुच्छ परस्पर में मिलता रहे।
9. माला में अपने इष्ट देवता की प्राण प्रतिष्ठा कर लेनी चाहिए।

साधकों के लिए माला पूजन मंत्र

जप आरम्भ करने से पूर्व माला का पूजन करना जरूरी है। निम्नलिखित मंत्र से माला का पूजन करें-

"ॐ ऐं श्री अक्षमालायै नमः"

ऊपरलिखित मंत्र से गंगाजल, अक्षत, चन्दन, पुष्प, बिल्वपत्र आदि पूजन सामग्री से माला का पंचोपचार पूजन करें। तत्पश्चात् माला पर इष्ट देव का पूजन भी करें। इसके बाद ही सिद्धि हेतु जप आरम्भ करें।

करमाला द्वारा जप विधि

साधको ! "करमाला" द्वारा जप या तो उँगलियों पर किया जाता है या ऊँगलियों के पर्वों पर।

इसकी विधि यह है कि अनामिका के मध्य भाग से नीचे की ओर चलें। फिर कनिष्ठा के मूल अग्र भाग तक, फिर अनामिका और मध्यमा के अग्रभाग पर होकर तर्जनी के मूल तक। गिनती संख्या दस हो जाएगी। मध्यमा के दो पर्व सुमेरू रूप में छोड़ देने चाहिए।

करमाला जप में सावधानी

1. हथेली जप के समय थोड़ी सी मुड़ी होनी चाहिए।
2. हथेली की उँगलियां जप के समय पृथक-पृथक नहीं होनी चाहिए.
3. सुमेरू का उल्लंघन और पर्वों की सन्धि (गाँठ) का निषिद्ध है।
4. अपने करकमल को हृदय के सामने लाकर, लाल वस्त्रों से ढककर केवल दहिने हाथ से ही जप करना चाहिए।

जप करते समय उँगलियों का विधान

विविध सिद्धि कार्यों में विविध प्रकार से माला फेरने का विधान है-

1. मारण प्रयोग में कनिष्ठा और अंगूठे से माला फेरें।
2. विद्वेशन एवं उच्चाटन में अंगूठे और तर्जनी से माला फेरें।
3. आकर्षण में अंगूठे और अनामिका से माला फेरें।
4. शन्ति कर्म वशीकरण तथा स्तम्भन में अंगूठे और बीच की उँगली से माला फेरें।

सिद्धि साधना के क्षेत्र में गुरू की महानता

साधको ! समस्त सिद्धियाँ एवं तांत्रिक वाङ्मय में उपासना का मंगल प्रस्थान श्री गुरू की उपासना से ही होता हैं। गुरू शब्द का अर्थ शास्त्रों ने इस प्रकार वर्णित किया है-

गु शब्दश्चांधकारः स्याद्र शब्द स्तन्नि रोधकृताः।
अंधकार विरोधित्वाद गुरू रित्य भिधीयते॥

भावार्थ–"गु" का तात्पर्य अंधकार है और "रू" का तात्पर्य अंधकार का निरोध करना हैं। अर्थात जो अज्ञान रूपी अंधकार का निरोध कर दे या नाश कर दे–वही "गुरू" है।

"गुरू" शब्द की उपमा एक और इस प्रकार है–

गुकारः सिद्धिदः प्रोक्तो रकारः पाप हारकः।
उकारस्तु भवेद्विष्णु स्त्रित्रयात्मा गुरूः स्वयम्॥

भावार्थ–"गु" अर्थात् सिद्धदाता, "रू" अर्थात् पापहर्ता, "उं" अर्थात् विष्णु स्वरूप। आशय यह है कि गुरू सिद्धिदाता, पापहर्ता और विष्णु रूप होता है।"

इसीलिए–**"गुरू बिनु ज्ञान नहीं"** वाली उक्ति वस्तुतः सत्य है। प्रत्येक प्रकार का ज्ञान गुरू द्वारा ही प्राप्त होता है। यह बात सिद्धि साधना व तांत्रिक उपासना के क्षेत्र में और भी अधिक महत्व रखती है, क्योंकि इस क्षेत्र में अनेक रहस्यों को गुप्त रखने के लिए पद–पद पर शास्त्रकारों ने आदेश दिए हैं। इनके साथ ही मंत्र–तंत्र, सिद्धि–साधना में ज्ञान के साथ–साथ कर्म का भी उतना ही महत्व दिया गया है। जिस प्रकार कोई पक्षी आकाश में एक पंख से नहीं उड़ सकता, उसी प्रकार केवल ज्ञान अथवा केवल कर्म से इस मार्ग में सिद्धि नहीं मिलती है। ज्ञान तो हमें ग्रन्थों से भी कुछ अंशों में मिल जाता है, किन्तु कर्म–क्रिया की पद्धति तो गुरू से ही प्राप्त होती है।

एक और महत्व की बात यह है कि गुरू द्वारा मिले हुए मार्ग दर्शन से एक निश्चित संरक्षण मिल जाता है। उसमें शंकाओं को कोई अवकाश नहीं रहता।

रूद्रयामल उत्तर तन्त्र में "गुरू महिमा" बतलाते हुए कहा गया है कि–

गुरूपाद विहीना ये, ते नश्यन्ति ममाज्ञया।
गुरूर्मूलं हि मन्त्राणां, गुरूर्मूलं परम तपः॥१/१८८॥
गुरोः प्रसाद मात्रेण, सिद्धि रेव न संशयः।
अहं गुरू रहं देवो, मन्त्रार्थोस्मि न संशयः॥१८९॥

अर्थात्–भगवती भैरवी ने यहाँ स्वयं कहा है कि "गुरू सेवा से विहीन मेरी आज्ञा से नष्ट हो जाते हैं। समस्त मंत्रों का मूल गुरू ही है। गुरू ही परम तप है। गुरू की केवल प्रसन्नता से ही अवश्य सिद्धि मिलती है, इसमें संशय नहीं है। मैं भैरवी ही गुरू हूँ और मैं ही मन्त्रार्थ हूँ।"

इस कथन से यह स्पष्ट है कि उपास्यदेव और गुरू दोनों में सामान श्रद्धा रहने पर ही उपासना फलवती होती है। गुरू की कृपा से शक्ति प्रसन्न होती है और शक्ति की प्रसन्नता से मोक्ष प्राप्ति होता है। गुरू की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए तथा अहिर्नस दास की तरह उनकी आज्ञा माननी चाहिए। इतना ही नहीं, गुरू की पादुका, वस्त्र, शैय्या, भूषण आदि देखकर भी उन्हें प्रणाम करना चाहिए।

गुरू प्रणाम के लिए कतिपय नियमों का निर्देश भी यहां किया गया है। जिसमें बतलाया गया है कि सदा पादुका मंत्र का स्मरण करता रहे। जब गुरू और शिष्य

एक स्थान अथवा एक ग्राम में रहते हों तो प्रतिदिन उनके पास जाकर प्रणाम करना चाहिए। सातयोजन तक के विस्तार में यदि गुरू रहते हों तो मास में एक बार दर्शन करना चाहिए। श्री गुरू जिस दिशा में रहते हों, उस दिशा में भक्तिपूर्वक प्रणाम करें। उनके साथ एक आसन पर नहीं बैठें।

सिद्धि साधना में गुरू द्वारा प्राप्त सिद्धि यंत्र सिंहासन पर स्थापित करना, व मंत्र जप की आवश्यकता क्यों ?

साधको ! सद् गुरूदेव की लीला एवं स्वरूप को जानना सहज नहीं कहा जा सकता। गुरू तत्व, गुरू शिष्य सम्बन्ध, गुरू यंत्र कृपा, गुरू योग इत्यादि क्रियावों की विशद् विवेचना से भारतीय संस्कृति की आर्य परम्परा में उपनिषदों में गुरू की परम महत्ता स्वीकार की गई है। माया से आवद्ध इस संसार के दुःखों से त्रस्त जीवों के उद्धार हेतु गुरू ही एकमात्र गति हैं। शास्त्रों में गुरू को भगवान शिव स्वरूप माना गया है, क्योंकि वे ही वास्तव में "शं" अर्थात् कल्याण, "कर" अर्थात् करने वाले हैं। वस्तुतः श्री भगवान की अनुग्रह शक्ति ही शुभ योग, शुभ आग्रह और शुभ सन्धि द्वारा केन्द्रीभूत होकर गुरू शक्ति के रूप में मूर्त हो अभिव्यक्ती होती है।

गुरू देव की उपस्थिति बिना, उनकी छत्रछाया के बिना कोई भी सिद्धि में सफलता मिल ही नहीं सकती। सभी साधकों के सिद्धि काल में गुरू का उपस्थित होना भी मुश्किल है। अतः इस समस्या का समाधान होना भी मुश्किल है। अतः इस समस्या का समाधान हेतु गुरू द्वारा-"सिद्ध यंत्र" सिंहासन पर स्थापित करने का प्रावधान है। गुरू द्वारा प्रदत्त-"सिद्ध यंत्र राज" में गुरू की परम दिव्य शक्ति छिपी रहती है, जो सिंहासन पर स्थापित होकर-"रिमोट कंट्रोल" बनकर साधक के तन-मन ज्ञान और मस्तिष्क को संचालित करते हैं और साधना काल में आनेवाली समस्त बाधाओं का नाश करते रहते हैं। परिणाम स्वरूप साधक "प्रथम बार में ही" साधना में सफलता प्राप्त कर लेता है। इसलिए गुरू द्वारा सिद्ध यंत्र साधना काल में पूजन स्थल के सिंहासन पर स्थापित करने का प्रावधान है। सिद्ध गुरू यंत्र की शक्ति सिंहासन पर स्थापित होकर साधक को साधना में लीन कर देता है।

गुरूदेव जानते हैं कि साधक के भीतर उर्जा है और जब उसका संचारण बाहर की दिशा में होता है, तो वह उर्जा बाहर निकलकर छिन्न-भिन्न हो जाती है, उसका प्रभाव तीव्रतम नहीं हो सकता। सिद्ध गुरू यंत्र उस उर्जा को भीतर से उर्ध्वगति प्रदान करता है, उसे संयोजित करके साधना सफलता की दिशा में मोड़ देता है। गुरू यंत्र इस उर्जा के वर्तुल को निरस्त नहीं होने देता। यंत्र की शक्ति साधक को हृदय में अवस्थित "आज्ञा चक्र" को स्पर्श करता है, तब आज्ञा चक्र शरीर में स्थित नीचे पुर, अनाहत, विशुद्ध चक्रों में उर्जा का प्रवाह, शक्ति का प्रवाह जहां भी अवरूद्ध हो गया है उसे हटाकर आज्ञा चक्र की ओर उर्ध्वगति देता

है और यह आज्ञा चक्र से सहस्त्रार में स्थापित हो जाता है, तो साधना काल के रोग, शोक, अनिष्ट, व्याधि आदि समाप्त हो जाते हैं और साधक अपनी साधना में प्रथम बार में ही सफल हो जाता है।

साधको ! मंत्र जप की आवश्यकता सिद्धि काल में क्यों पड़ती ? इसे ऐसे समझें–

मनुष्य के मुख से जो भी शब्द निकलता है, वह पूरे ब्रह्माण्ड में फैल जाता है। वह शब्द या ध्वनि कभी मिटता नहीं है। यह एक वैज्ञानिक सत्य है। महाभारत काल में भी ध्वनि संवाद हुए थे, वे आज भी वायुमण्डल में व्याप्त हैं, आवश्यकता है–उस **"FREQUENCY"** को पकड़ने की, जिसके माध्यम से हम उस ध्वनि को सुन सकें।

वैज्ञानिकों के अनुसार ध्वनि कंपनों के माध्यम से जो कार्य सामान्यतः असम्भव लगते हैं, उन्हें भी सम्पन्न किया जा सकता है, परन्तु ध्वनि कम्पनों में विशिष्ठ गुण हों।

"डॉ० फ्रिस्टलोव" ने ध्वनि कंपनों के माध्यम से शरीर के परमाणुवों में कंपन उत्पन्न कर दिखाया। इसी कंपन से शारीरिक रोगों को ध्वनि तरंगों द्वारा दूर करने में सफलता मिली है। जेट विमान के तीव्र ध्वनि तरंगों से ही खिड़कियों के शीशे चटक जाते हैं या टूट जाते हैं। इस प्रकार ध्वनि तरंगों का प्रभाव पड़ता है और निर्विवाद रूप से होता है।

मंत्र का उच्चारण करने से भी एक विशिष्ठ ध्वनि कम्पन्न उत्पन्न होता है। जब साधक मंत्र जप करता है तो मंत्र से उत्पन्न कम्पन "ईथर" के माध्यम से कुछ ही क्षणों में यंत्र–मंत्र देव तक पहुंचकर लौट आते हैं। लौटते समय उन कम्पनों में यंत्र–मंत्र देव की सूक्ष्म शक्ति, तेजस्विता एवं प्राणवत्ता व्याप्त हो जाती है, जो पुनः साधक के शरीर से टकराकर उसमें उन गुणों को बढ़ा देती है, जिससे साधक साधना में सफल हो जाता है।

यंत्र-मंत्र साधना में कितने साधकों को सफलता पहली बार ही क्यों नहीं मिलती

उपासको ! यहाँ तक ध्यान देने योग्य और भी बात हैं कि "साधक" उपहास का पात्र तब ही बनता है, जब तक उसे कोई सिद्धि प्राप्त नहीं हो जाती, और यही बात प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के जीवन में भी लागू हुई है। जब तक उन्होंने कोई आविष्कार कर नहीं लिया, लोगों ने उपहास ही किया कि–"क्या पागलों की तरह हर समय अपनी प्रयोगशाला में बन्द रहता है।" और जब एक दिन व्यक्ति प्रसिद्धि पा लेता है तो वही उपहास करने वाले लोग उनका यशोगान करते हैं–कि अमुक को मैंने अथक परिश्रम करते देखा है, अमुक अपनी प्रयोगशाला में घंटों जुटे रहते थे–भूख–प्यास की सुध–बूध छोड़कर।

आज भी हजारों लोग हैं, अनेकों मेरे शिष्य ही हैं, जिन्होंने यंत्र–मंत्र साधना में सफलता प्राप्त की है और कर रहे हैं इन्ही साधनात्मक विधि–विधान को अपनाकर।

किसी-किसी साधक को तो सफलता पहली बार इसलिए नहीं मिलती, क्योंकि साधक पूर्ण रूप से अनुभवी नहीं होता हैं, "गुरू यंत्र" का उपयोग नहीं करता है। रेडियो में जब गाने सुनने होते हैं, तो उसकी सूंई को एस निश्चित आवृत्ति **[FREQUNCY IN MHZOKHZ]** पर ट्यून किया जाता है। यदि 500 **KHZ** का स्टेशन है तो किसी अन्य **FREQNCY** पर आवाज नहीं आएगी या साफ नहीं आएगी और कई बार यह सेटिंग ठीक से नहीं हो पाती, **KHZ** या **KHZ** ही रह जाती है। यही हाल साधनावों में भी होता है। हमारे मन की भी सेटिंग ठीक ढंग से नहीं हो पाती। कभी घर में अशान्त वातावरण होता है तो कभी मंत्र का उच्चारण अस्पष्ट अशुद्ध होता है आदि।

इन सब कारणों से कई बार साधक साधना लक्ष्य के बिल्कुल निकट भी पहुंचकर सफल नहीं हो पाता। वह 499 या 501 पर पहुंचकर निराश हो जाता। परन्तु बार-बार प्रयास करने पर जिस तरह वह 499 पर पहुँचा था 500 पर भी पहुँच सकता है, और वह पहुँचाने की शक्ति गुरू यंत्र रूपी "रिमोट कंट्रोल" के पास होती है। जो "गुरू यंत्र" सिद्ध गुरू से प्राप्त कर साधना आरम्भ करता है तो उस साधक के समक्ष "सिद्धि" हाथ बांधे खड़ी हो जाती है।

सिद्धि-साधना के मंत्रों में सांकेतिक शब्दों का तात्पर्य

साधको ! सिद्धि मंत्रों में "नमः, स्वाहा, वषट, वौषट, हुम और फट्" शब्दों का उपयोग होता है। यहां इन्हीं सांकेतिक शब्दों का तात्पर्य बतला रहा हूँ।

अन्तः करण को शान्त अवस्था में "नमः" शब्द का प्रयोग होता है। सारी दुर्धर्ष, घातक एवं अपकारी शक्तियां विनय के सामने नत हो जाती हैं। जो मनुष्य यथाशक्ति परोपकार में रत रहकर दूसरों के हित के लिए अपनी सारी शक्ति लगा देता है, अथवा यों कहिये कि अपने आप को "स्वाहा" कर देता है वह अपने शत्रुवों की सारी विरोध भावनावों को हटाकर उनपर पूरा अधिकार कर लेता है। "वषट" अन्तःकरण की उस वृत्ति का लक्ष्य कराता है जिसमें अपने शत्रुवों के सम्बन्धियों का अनिष्ट साधन करने अथवा उनका प्राण हरण करने की भावना रहती है। "वौषट्" अपने शत्रुवों के हृदयों में एक दूसरे के प्रति द्वेश उत्पन्न करने का सूचक है। "हुम" बल तथा अपने शत्रुवों को स्थानच्युत करने के निमित्त क्रोध का ज्ञापक है। "फट्" अपने शत्रु के प्रति शस्त्र प्रयोग को व्यक्त करता है।

उपयुर्क्त शब्दों का उड्डीस तन्त्र (श्लोक १६३) में वर्णन मिलता है। महानिर्वाण तंत्र (५-१२६-१२८) में इन्हीं शब्दों का प्रयोग अंगन्यास तथा करन्यास के लिए किया गया है। इस प्रकार के सांकेतिक शब्दों का प्रयोग केवल तंत्र शास्त्र में ही नहीं, अपितु वेदों में भी उसी रूप में मिलता है। वेदों में इनके अतिरिक्त और भी कई शब्द मिलते हैं। अर्थवेद (११-९-९-१०) में उल्कापात के शुभ फल के लिए, आभिचारिक

प्रयोगों की निष्फलता के लिए तथा पुल इत्यादि को उड़ा देने के निमित्त प्रयुक्त हुए डाय्न जैसे-विध्वंशक पदार्थों की व्यर्थता तथा सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों की शन्ति के लिए प्रार्थना की गई है। यहाँ ''शम्'' इस सांकेतिक शब्द का प्रयोग किया गया हैं। उक्त वेद के एकादश काण्ड के द्वितीय सूक्त में रूद्र की शक्ति एवं ऐश्वर्य का खासा वर्णन किया गया है और ''नमः'' शब्द के द्वारा उनका कई बार अभिवादन किया गया है। जिस प्रकार अग्निहोत्र एवं वषट् कार से यश का लाभ होता है, उसी प्रकार वरूण वृक्ष की मणि से यश एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। ''अग्निहोत्र'' का अर्थ है अग्नि अथवा परम गुरू को अपना मन ''WILL'' सौंप देना और ''वषट्कार'' का अर्थ है मन के समर्पण के मार्ग में आनेवाली विघ्न बाधाओं का नाश करना अथवा उन्हें असक्त बना देना।

''अर्थवेद'' (७/९७) में ''वषट'' का प्रयोग एक दूसरे अर्थ में भी आता है। वहाँ एक ''स्वाहा'' शब्द और है, जिसका प्रयोग इस मंत्र के अतिरिक्त अन्य स्थलों में भी मिलता है। ''स्वाहा'' का अर्थ बहुधा यह होता है कि-''मैं अमुक बात को सच्चे मन से कहता हूँ।'' एक जगह ''वषड्हुतेभ्यः वषड् हुतेभ्यः''-इन शब्दों का प्रयोग मिलता है, जिसका अर्थ है-''वर्तमान एवं अनागत विघ्नों का निराकरण।''

''नमः'' का भाव हम ऊपर में बतला चुके हैं। उदाहरणार्थ अथर्ववेद (७/८७) का पहला मंत्र देखिये। उसमें रूद्र का अग्नि रूप से वर्णन किया गया है। ''वे अग्नि में, जल में, वनस्पति में, लताओं में सर्वत्र व्याप्त हैं और समस्त लोकों के रचयिता हैं। उनकी वन्दना करो।'' वेदों में ऐसे अनेक स्थल हैं जहाँ किसी शक्तिशाली पुरूष के सामने विनय का भाव प्रदर्शित किया गया है। विनय शक्तिशाली पुरूष की शक्ति का ह्रास कर देता है। वेद में इस भाव का ध्वनि मिलती है कि विनय से बढ़कर शक्ति पर विजय प्राप्त करने का कोई और प्रबल उपाय नहीं है।

अब हम ''फट'' के सम्बन्ध में कुछ निवेदन करेंगे। अथर्ववेद (४/१८/३) में इस शब्द का उल्लेख मिलता है। जो लोग पुल, जेल इत्यादि को उड़ा देने के लिए शक्तिशाली ''डिनेमाइट'' जैसे-ध्वंसक पदार्थ बनाते हैं उन्हें इस बात का पता है कि इस प्रकार उड़ाये जाने पर पत्थर, कंकड आदि ''फट'' इस प्रकार शब्द करते हैं। ''फट'' यह फूटने के शब्द का अनुकरण है।

''अथर्ववेद'' (१/२/१) में से हम एक उदाहरण और उद्धत करेंगे। उपर्युक्त मंत्र सुगमता से प्रसव कराने के सम्बन्ध में है। प्रसव की सुगमता के लिए गर्भाशय के बन्धनों को शिथिल करना आवश्यक है। यह कार्य एक कुशल दाई के हाथ से होता है। वेद में यह कार्य ''पूषण'' का बताया गया है। ''वषट्'' शब्द से इस बात की ध्वनि निकलती है। इसीलिए ''वषट्'' का अर्थ है बन्धनों का श्लथीकरण। इसी प्रकार ''अथर्ववेद'' [५/२६/१२] में इसी शब्द का प्रयोग शत्रु विनाश के अर्थ में हुआ है। अर्थवेद (९/७/५) में प्राणायाम के द्वारा मन को स्थिर करते उसका निरोध करने के अर्थ में ''वषट्'' का प्रयोग किया गया है। ''वषट्'' का यह अर्थ अथर्ववेद (१५/१४/१७) में जिस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग किया गया है उससे ठीक मेल खाता है।

सिद्धि साधना में भगवती को नर बलि एवं पशु बलि चढ़ाना भयानक अपराध

भगवती की साधना करने वाले साधको ! यद्यपि "तंत्र शास्त्र" समस्त श्रेष्ठ साधन शास्त्रों में एक बहुत उत्तम शास्त्र है, उसमें अधिकांश बातें सर्वथा अभिनन्दनीय और साधकों को परम सिद्धि मोक्ष प्रदान कराने वाली है। तथापि सुन्दर बगीचे में भी जिस प्रकार असावधानी से कुछ जहरीले पौधे उत्पन्न हो जाया करते हैं और फलने-फूलने भी लगते हैं, इसी प्रकार तंत्र में भी बहुत सी अवांछनीय गन्दगी आ गई हैं। यह विषयी कामान्ध मनुष्यों और मांसाहारी, मद्यलोलुप, अनाचारियों की ही "काली करतूत" मालूम होती है, नहीं तो श्रीसीय ऋषिप्रणीत मोक्ष प्रदायक "पवित्र तंत्र शास्त्र" में ऐसी बातें कहाँ से और क्यों आती ?

जिस शास्त्र में अमुक-अमुक जाति की स्त्रियों का नाम ले लेकर व्यभिचार की आज्ञा दी गई हो और उसे धर्म तथा साधना बताया गया हो, जिस शास्त्र में पूजा की पद्धति में बहुत ही गन्दी वस्तुएँ पूजा सामग्री के रूप में आवश्यक बतायी गयी हो, जिस शास्त्र के मानने वाले साधक हजार स्त्रियों के साथ व्यभिचार को, और अंष्टोत्ररशत नर बालकों की बलि को अनुष्ठान की सिद्धि में कारण मानते हैं, वह शास्त्र तो सर्वथा "अशास्त्र" और शास्त्र के नाम को कलंकित करने वाली ही है।

व्यभिचार की आज्ञा देने वाले तन्त्रों के अवतरण हमने पढ़े हैं, और तंत्र के नाम पर व्यभिचार और "नरबलि" करने वाले मनुष्यों की घृणित गाथाएं विश्वस्त सूत्रों से सुनी है। ऐसे महान तामसिक कार्यों को शास्त्र सम्मत मानकर भलाई की इच्छा से इन्हें करना सर्वथा भ्रण है, भारी भूल हैं और ऐसी भूल में कोई पड़े हुए हों तो उन्हें तुरन्त ही इससे निकल जाना चाहिए। और जान-बुझकर धर्म के नाम पर व्यभिचार, हिंसा आदि करते हों, उनको तो माँ काली का भीषण दंड प्राप्त होगा, तभी उनको होश ठिकाने लगेंगे। दयामयी माँ अपनी भूली हुई सन्तान को क्षमा करें और उन्हें रास्ते पर लावें, यही प्रार्थना है।

इसके अतिरिक्त "पंचामकार" के नाम पर भी बड़ा अन्याय अनाचार हुआ तथा अब भी बहुत जगह हो रहा है, उससे भी सतर्कता से बचना चाहिए। बलिदान और मद्य प्रदान भी सर्वथा त्याज्य हैं। माता की जो सन्तान अपनी भलाई के लिए उसी माता की प्यारी भोली-भाली सन्तान की हत्याँ करके उसके खून से माँ को पूजती है, जो माँ के बच्चे को खून से माँ के मन्दिर को अपवित्र और कलंकित करता है, उस पर माँ कैसे प्रसन्न हो सकती है।

माँ दुर्गा, काली "जगज्जननी विश्वमाता" है। स्वार्थी मनुष्य अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए धन, पुत्र, स्वार्थ, वैभव सिद्धि या मोक्ष के लिए भ्रम वश निरीह बकरे, भैंसे और अन्यान्य पशु-पक्षियों के गले पर छूरी फेरकर माता से सफलता का वरदान चाहता है, यह कैसी असंगत और असम्भव बात हैं। निरपराध प्राणियों की नृशंसता पूर्वक हत्या करने कराने वाला कभी सुखी हो सकता है ? उसे कभी

शान्ति मिल सकती है ? कदापि नहीं।

दयाहीन मांस लोलुप मनुष्यों ने ही इस प्रकार की प्रथा चलायी है, जिसका शीघ्र ही अन्त हो जाना चाहिए। जो दूसरे निर्दोष प्राणियों की गर्दन काटकर भला मनावेगा, उसका यथार्थ भला कभी नहीं हो सकता। यह बात स्मरण रखनी चाहिए। ख्याल करो–तुम्हें खूंटे से बांधकर यदि कोई मारे या तुम्हारे गले पर छूरी फेरे तो तुम्हें कितना कष्ट होगा ? नन्हीं सी सूई या कांटा चुभ जाने पर ही तिल–मिला उठते हो। फिर इस पापी पेट के लिए राक्षसों की भांति मांस से जीभ को तृप्त करने के लिए गरीब पशु–पक्षियों को धर्म के नाम पर–अरे, माता के भोग के नाम पर मारते तुम्हें शर्म नहीं आती ? मानो उन्हें कोई कष्ट ही नहीं होता। याद रखो, वे सब तुमसे बदला लेंगे। और तब तुम्हें अपनी करनी पर निरूपाय होकर ''हाय तौबा'' करना होगा। अतएव सावधान ! माता के नाम पर गरीब निरीह पशु–पक्षियों का बलि देना तुरन्त बन्द कर दो। माता की पवित्र मंदिरों को उसी की प्यारी सन्तान के खून से रंगकर माँ के अकृपा भाजन मत बनो।

''बलिदान'' जरूर करो, परन्तु करो अपने स्वार्थ का और अपनो दोषों का। माँ के नाम पर माँ की दुखी सन्तान के लिए अपना न्यायोपार्जित धन दान कर धन का बलिदान करो। माँ की दुखी सन्तान का दुख दूर करने के लिए अपने सारे सुखों की, अपने प्यारे शरीर की भी बलि चढ़ा दो निष्काम भाव से माँ के चरणों पर अपना सारा धन, जन, बुद्धि, बल, ऐश्वर्य, सत्ता और साधन, उसकी दीन–हीन, दुखी, दलित सन्तान को सुखी करने के लिए। तब तुमपर माँ की कृपा होगी। माँ के पुलकित हृदय से जो आर्शीवाद मिलेगा, माँ की गद्‌गद् वाणी तुम्हें अपने दुखी भाईयों की सेवा करते देखकर जो स्वाभाविक वरदान देगी उससे तुम निहाल हो जाओगे। तुम्हारे लोक–परलोक दोनों उत्तम हो जायेंगे। तुम प्रेय और श्रेय दोनों को अनायाश पा जाओगे, माँ तुम्हें गोद में लेकर तुम्हारा मुख चुमेगी और फिर तुम कभी उसी शीतल–सुखद नित्यानन्द मयपरम धाममय गोद से नीचे नहीं उतरोगे।

''बलिदान'' करना है तो–

बलि चढ़ाओ काम की, क्रोध की, लोभ की, हिंसा की, असत्य की और इन्द्रिय विषया शक्ति की। माँ तुम्हारी इन चीजों को नष्ट कर दे–ऐसी माँ से प्रार्थना करो। माँ के चरण रज रूपी तीक्ष्ण धार तवार से इन दुर्गुण रूपी असुरों को बलि चढ़ा दो। अथवा प्रेम की कटारी से ममत्व और अभिमान रूपी राक्षसों की बलि दे दो।

तुम कहोगे फिर माँ के हाथ में ''नरमुण्ड'' क्यों है ? माँ भैंसे को क्यों मार रही हैं ? क्या वे माँ के बच्चे नहीं है ? उन अपने बच्चों की बलि माँ क्यों स्वीकार करती हैं ? तुम इसका रहस्य नहीं समझते । उनकी बलि दूसरा कोई चढ़ाता नहीं, वे स्वयं आकर बलि चढ़ जाते हैं। अवश्य ही वे भी माँ के बच्चे हैं, परन्तु वे ऐसे दुष्ट हैं कि माँ के दूसरे असंख्य निरपराध बच्चों को दुःख देकर–उनके गले काटकर स्वयं राजा बने रहना चाहते हैं, स्वयं माँ लक्ष्मी को भोग्या बनाकर मातृगामी होना चाहते हैं, माँ उमा से विवाह करना चाहते हैं, ऐसे दुष्टों को भी माँ मारना नहीं चाहती, शिव को दूत बनाकर उनको समझाने के लिए भेजती। पर जब वे किसी

प्रकार नहीं मानते, तब दयापरवश हो उनका उद्धार करने के लिए उनको बलि के लिए आवाहन करती हैं और वे आकर जलती हुई अग्नि में पतंगों की भांति माँ के चरणों पर चढ़ जाते हैं।

माँ दूसरे बालकों को आश्वासन देने और ऐसे दुष्टों को शासन में रखने के लिए ही "मुण्डमाला" धारण करती हैं। मारकर भी उनका उद्धार करती हैं। इन असुरों की इस बलि के साथ तुम्हारी आज की यह स्वार्थ पूर्ण बकरे और पक्षियों की निर्दयता और कायरता पूर्ण बलि से कोई तुलना नहीं हो सकती। हाँ, यह तुम्हारा आसुरी पन, राक्षसी पन, अवश्य है, और इसका फल तुम्हें भोगना पड़ेगा। अतएव राक्षस न बनो, माँ की प्यारी–दुलारी सन्तान बनकर उसकी सुखद गोद में चढ़ने का प्रयत्न करो।

राग द्वेश पूर्वक किसी का बुरा करने के लिए माँ की आराधना कभी न करो। याद रखो, माँ तुम्हारे कहने से अपनी सन्तान का बुरा नहीं कर सकती। जो दूसरे का बुरा चाहेगा, उसकी अपनी बुराई होगी। स्त्री वशीकरण, मारण, मोहन, उच्चाटन आदि के लिए भी उनको मत पूजो, उन्हें पूजो दैवी गुणों की उत्पत्ति के लिए, सबकी भलाई के लिए अथवा मोक्ष के लिए।

पाठको ! साधना हो या उपासना, इनमें षोड़शोपचार पूजन इष्टदेव का करना अत्यन्त जरूरी है और इस पूजा में "बलिदान" एक प्रधान उपचार है, इसके बिना पूजा पूरी ही नही होती। इसका कारण यह है कि साधक ने यदि साधना के अन्त में, पूजक ने पूजा के अन्त में इष्टदेव में अपना सब कुछ बलिदान देकर उपाष्यदेव से अपना भेद–भाव मिटा न दिया तो पूजा की पूर्णता ही क्या हुई ? इसी कारण "बलिदान" पूजा का प्रधान अंग है। बलिदान के बिना न जगन्माता ही प्रसन्न होती और न भारत माता ही प्रसन्न हो सकती है। जिस देश में जितने बलिदान करने वाले देश सेवक, देश नेता उत्पन्न होते हैं, उस देश की उतनी ही सच्ची उन्नति होती है।

यह बलिदान चार प्रकार का होता है–

सबसे उत्तम कोटि का बलिदान "आत्म बलिदान" कहलाता है। इसमें साधक जीवात्मापन को काटकर परमात्मा पर आहुति चढ़ा देता है। इस बलिदान के द्वारा परमात्मा से अज्ञानवश जीवात्मा की जो पृथकता दिखती थी वंह एक बारगी ही नष्ट हो जाती है और साधक स्वरूप स्थित होकर अद्वितीय ब्रह्म का साक्षात कार करता है। जब तक यह न हो सके तब तक द्वितीय कोटि का बलिदान करना चाहिए। इसमें कामरूपी बकरे, क्रोध रूपी भेड़, मोह रूपी महिष आदि का बलिदान किया जाता है। अर्थात् षडरिपु का बलिदान ही द्वितीय कोटि का बलिदान है। तृतीय कोटि में, इतना न हो सकने पर किसी इन्द्रिय प्रिय वस्तु का बलिदान होता है। प्रत्येक विशेष पूजा के अन्त में जिसको जिस वस्तु पर लोभ है उसका बलिदान अर्थात् संकल्प पूर्वक त्याग कर देना चाहिए। यही तृतीय कोटि का बलिदान है। इस प्रकार से मिठाई, प्याज–लहुसन, मादक वस्तु आदि के प्रति आसक्ति छूट सकती है। यदि ऐसा भी नहीं हो सके तो क्रमशः छुड़ाने के लिए चतुर्थ कोटि का बलिदान है।

महाकाल संहिता में "बलि" शब्द का रहस्य इस प्रकार उपदेशित किया गया है–

सात्त्विको जीव हत्यां वै कदाचिदपि नाचरेत।
इक्षुदण्डश्च कुवमाण्डं तथा वन्य फलादिकम्॥
क्षीरपिण्डैः शालिचूर्णे पशुं कृत्वा चरेद्बलिम्।

हिन्दी अनुवाद–"सात्विक अधिकार के उपासक कदापि पशु बलि देकर जीव हत्या नहीं करते, वे ईख, कोहड़ा तथा वन्य फलों की बलि देते हैं। अथवा खोआ, आटा या चावल के पिंड का पशु बनाकर बलि देते हैं। यह सब भी रिपुओं (दुष्टों) के बलिदान का निमित्त मात्र ही है।"

महानिर्वाण तन्त्रानुसार–

काम क्रोधो पशु इमावेव मनसा बलिमर्पयेत।
काम क्रोधो विघ्नकृतौ बलिं दत्वा जपं चरेत्॥

हिन्दी अनुवाद–"काम और क्रोध रूपी दोनों विघ्नकारी पशुओं का बलिदान करके उपासना करनी चाहिए। यही शास्त्रोत्क बलिदान रहस्य है।"

देवि-देवताओं की साधना में षोड़शोपचार पूजन की प्रधानता और षोड़शोपचार पूजन का अर्थ

सिद्धि-साधना करने वाले साधको ! किसी भी देवी-देवताओं की सिद्धि साधना आरम्भ में उपास्य देव की षोड़शोपचार पूजन करना अति आवश्यक होता है। इस पूजन के बिना साधना सम्पन्न नहीं हो सकती। षोड़शोपचार पूजन का अर्थ होता है–"सोलह उपचारों द्वारा पूजन" ये सोलह उपचार निम्न प्रकार है–

1. आवाहन, 2. आसन, 3. पाद्य, 4. अर्घ्य, 5. आचमन, 6. स्नान, 7. वस्त्र, 8. यज्ञोपवीत, 9. चन्दन, 10. अक्षत, 11. पुष्प, 12. सिन्दूर, 13. पान-सुपारी, 14. धूप-दीप, 15. नैवेद्य और 16. दक्षिणा एवं प्रदक्षिणा।

उपासको ! इन षोड़शोपचार पूजन में एवं सिद्धि साधना में निम्नलिखित पूजन सामग्रियों की आवश्यकता होती है–

पूजन सामग्री

महाकाली साधना में :– गुरू द्वारा प्रात सिद्ध गुरू कवच यंत्र, आम की लकड़ी से बना काले रंग से बना सिंहासन (यदि प्रतिमा स्थाई रूप से मंदिर में प्रतिष्ठित हो तो सिंहासन की आवश्यकता नहीं) सिंहासन पर बिछाने हेतु काला नवीन वस्त्र, माता हेतु काली साड़ी व अन्य वस्त्र, श्रृंगार की वस्तुएँ, पूजन सम्पन्न कराने वाले पुरोहित के लिए एवं साधक के लिए नवीन वस्त्र (पुरोहित के लिए धोती एक जोड़ा, बनियान, चादर, तौलिया और साधक के लिए काली धोती व काला चादर, जनेऊ-10, लाल अबीर, (गुलाल) गेहूं का आटा, पान पत्ता, सूपारी, काले तिल, सिन्दूर, लाल चन्दन, गाय का घी, धूप, सुगन्धित अगरबत्ती,

रूई, कपूर, पंचरत्न, सर्वोसधि, कलश हेतु मिट्टी का घड़ा, पानी वाला नारियल-1, सुखा नारियल-1, केले, फल 5 तरह का, लड्डू, फूल माला, पुष्प, बिल्वपत्र, आम का पल्लव, केले का पत्ता, गंगाजल, अरघी, पंचपात्र, कांशे का कटोरी-2, थाली-2, ग्लाश-2, आसन कम्बल का-2, चौमुखी दीपक, रूद्राक्ष की 108 दाने वाली पवित्र माला, आम की लकड़ी, माचिस, दुर्वादल, गाय का गोबर, शहद, गाय का दही, गाय का कच्चा दूध, शक्कर (गुड़) काली माता की तस्वीर, आरती स्टेन्ड, साधना की पुस्तक, जौ, अभिषेक पात्र, विग्रह को पोंछने हेतु काला वस्त्र, शंख, केसर, पंचमेवा, मोली, सात रंगों में रंगाया चावल, भेंट में देने हेतु द्रव्य आदि।

पूजा के कुछ आवश्यक नियम

आसन सर्म्पण में—आसन के ऊपर पाँच पुष्प भी रख लेने चाहिए।

पाद्य में—चार पल जल और उसमें श्यामाघास, (दूर्व) कमल और अपराजिता देनी चाहिए।

अर्घ्य में—चार पल जल और गन्ध-पुष्प, अक्षत (चावल) दूर्वादल, काले तिल, कुशा का अग्र भाग तथा श्वेत सरसों देना चाहिए।

आचमनीय में—छः पल जल, जायफल, लौंग और कंकोल का चूर्ण देना चाहिए।

मधुपर्क में—कांश्य पात्र स्थित घृत, मधु (शहद) और दधि (दही) देना चाहिए।

स्नान कराने हेतु (विग्रह को)—पचास पल जल का विधान है।

वस्त्र—जोड़ा देना चाहिए।

आभरण—स्वर्ण निर्मित हों और उसमें मोती आदि जड़े हों।

गन्ध द्रव्य में—चन्दन, अगर, कपूर आदि एक में मिला दिये गये हों। एक पल के लगभग उनका परिमाण कहा गया है।

पुष्प—पचास से अधिक हों और अनेक रंग के हों।

धूप—गुग्गल का हो और कांश्य पात्र में निवेदन किया जाए।

नैवेद्य—एक पुरूष के भोजन योग्य वस्तु होनी चाहिए।

दीप—कपास की बत्ती से कपूर आदि मिलाकर बनाया जाये। बत्ती की लम्बाई चार अंगुल के लगभग हो और दृढ़ हो। दीप के साथ "शिलापिष्टका" भी उपयोग करना चाहिए।

दूर्वा और अक्षत की संख्या—सौ से अधिक समझनी चाहिए।

एक-एक सामग्री अलग-अलग पात्र में रखी जाए। वे पात्र सोने, चांदी, तांबे पीतल या मिट्टी के हों। व्यवस्था अपनी शक्ति अनुसार ही करनी चाहिए। जो वस्तु अपने पास नहीं हो, उसके लिए चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं और अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुसार जो सामग्री मिल सकती है, उनके प्रयोग में आलस्य, प्रमाद और संकीर्णता नहीं करनी चाहिए।

(नित्य पूजा प्रकाश से उद्धृत)

3



माता महाकाली षोड़षोपचार पूजन एवं साधना खण्ड

महाकाली साधना

साधको ! सावधान !! माता महाकाली की साधना समस्त साधनावों में से सर्वोत्तम साधना है और अति जटिल व कठिन साधना है, अतः छोटी-छोटी साधनाएँ सम्पन्न करने के पश्चात् ही यह महान साधना करने की हिम्मत करें।

यह महान साधना करने के पश्चात् साधक समस्त कामनावों की पूर्ति करने में सक्षम हो जाता है। साथ ही शत्रुवों पर विजय, मुकद्दमें में जीत धन की प्राप्ति, प्रगति, व प्रसन्नता के साथ अन्त काल में मोक्ष की प्राप्ति होती है।

महाकाली की साधना के लिए सर्वोत्तम स्थान श्मशान भूमि है। श्मशान भूमि एक ऐसा स्थान है, जहां जाते ही संसार की नश्वरता का आभास होता है और वैराग्य की भावना जागृत होती है।

शास्त्रों का मत है–

भोजनांते मैथुनांते श्मशानांते च या मते।
सामते सर्वदा चेतसात् नरो नारायण भवेत॥

हिन्दी अनुवाद– "भोजन के पश्चात् पेट भर जाने पर जिस प्रकार भोजन से जीव उपरांत हो जाता है, जिस प्रकार स्त्री सम्भोग के पश्चात् कुछ समय सम्भोग से मन हट जाता है, उसी प्रकार श्मशान में किसी दाह कर्म में जाने के पश्चात् कुछ समय संसार से वैराग्य हो जाता है। मस्तिष्क का यह विचार थोड़ी देर के लिए होता है। यदि ऐसा विचार सदैव रह जाये तो नरसाक्षात नारायण हो जाये।"

वास्तविकता यह है कि श्मशान भूमि में साधना करने से जातक का मन माया मोह से बाहर होकर साधना में पूर्ण नियंत्रित हो जाता है।

यह साधना दिवाली की रात्रि में, अमावस्या की रात्रि में या किसी भी

शनिवार की रात्रि में बारह बजे आरम्भ करनी चाहिए। साधना आरम्भ करने के लिए तिथि, मुर्हुर्त आदि का शुभ लग्न पंडित से निकलवा लेना चाहिए और यह महान साधना का प्रारम्भिक पूजन किसी योग्य वैदिक पंड़ित द्वारा ही सम्पन्न करावें। ये साधना 40 दिन की है। प्रथम रात्रि पूजन का शुभारम्भ पंडित से सम्पन्न करावे, फिर दूसरे दिन से स्वयं मंत्र जप करें। फिर अन्तिम दिन पंडित को बुलवा कर हवन कर्म, बिसर्जन आदि सम्पन्न करावें। बिसर्जन के बाद ब्राह्मण भोजन व कुमारी कन्यावों को भोजन करावें। ब्राह्मण की संख्या 5 और कुमारी कन्यावों की संख्या 11 होनी चाहिए।

यदि श्मशान भूमि में साधना करना मुश्किल लगे तो शिव मंदिर, काली मंदिर अथवा अपने घर के पवित्र कमरे में ही यह साधना सम्पन्न कर सकते हैं।

उपरोक्त दिन रात्रि के बारह बजे स्नानादि से पवित्र हो जावें। पूजा स्थल पर गंगाजल छिड़कर आम लकड़ी से बना, काले रंग से रंगा हुआ सिंहासन स्थापित करें। समस्त पूजन सामग्री अपने पास कर लें। सिंहासन उत्तर दिशा में स्थापित करें। स्वयं उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठे। सिंहासन उत्तर दिशा से दक्षिण तरफ रूख होगा अर्थात् आपके सामने होना चाहिए। वैदिक पंडित पश्चिम के तरफ मुख करके बैठे। बैठने हेतु साधक व पंडित दोनों ही कम्बल के आसन का प्रयोग करें। इसके बाद सिंहासन पर काला वस्त्र बिछाकर माता काली की प्रतिमा या तस्वीर स्थापित करें। इसके पश्चात् स्वयं नवीन काला वस्त्र धारण कर, पवित्र तन मन से धूप, गाय का घी और रूई की बाती का चौमुखी दीपक प्रज्ञवलित करें। दीपक प्रज्ञवलित कर माता जी सिंहासन के सामने पास में दाहिनी ओर अक्षत पूंज पर (चावल छिड़क कर) रख दें। पूजन आरम्भ से पहले सिर पे काला रूमाल या काला तौलिया अवश्य रख लें।

याद रखें। कोई भी साधना गुरू के बिना सम्पन्न नहीं हो सकती। गुरू भी वही होना चाहिए जिसने महाकाली की साधना पूर्व सम्पन्न किए हुए हों। साधना काल में गुरू का होना भी जरूरी है। यदि गुरू स्वयं उपस्थित नहीं हो सकें तो उनके द्वारा सिद्ध किया हुआ–"सिद्ध गुरू कवच यंत्र" पूर्व ही प्राप्त कर लें। पूजन (साधना) आरम्भ से पूर्व गुरू द्वारा प्राप्त यंत्र को पवित्र जल या गंगाजल से धोकर, माता काली सिंहासन पर तांबे के प्लेट में स्थापित करें।

इसके बाद साधना का प्रथम चरण षोड़शोपचार पूजन आरम्भ करें।

षोड़शोपचार पूजन आरम्भ

नोट–पूजन आरम्भ से पूर्व दाहिने हाथ में अंगूठे से चौथी उँगली में सोने, चांदी, तांबे या कुशा की बनी पवित्री धारण करें और पवित्री धारण करते समय निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें–

पवित्री धारण मंत्र

ॐ पवित्रे स्थौ वैष्णब्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुणाम्याच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्यते पवित्रपते पूतरस्य यत्कामः पुणे तच्छकेयम॥

नोट—पवित्री धारण करने के बाद दाहिने हाथ की अंजुली में गंगाजल लेकर निम्न मंत्र पढ़े और मंत्र समाप्ति के पश्चात् अंजुली का जल अपने शरीर पर छिड़क लें।

शरीर पवित्र करने का मंत्र

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरते पुण्डरी काक्षं स बाह्यभ्यंतरः शुचिः॥
ॐ पुण्डरी काक्षं पुनातु॥

हिन्दी अनुवाद—कोई पवित्र हो, अपवित्र हो अथवा किसी भी अवस्था में क्यों न हों, जो "पुण्डरी काक्ष" का स्मरण करता है, वह बाहर और भीतर से भी परम पवित्र हो जाता है। अतः हे ॐ रूप पुण्डरी काक्ष हमें पवित्र करें।

नोट—अब दीपक की पूजा करें।

प्रज्वलित दीप पूजन मंत्र

"ॐ ज्योतिषे नमः"

उपरोक्त मंत्र मुख से बोलकर—दीपक के पास जल, अक्षत, पुष्प, चन्दन, बिल्वपत्र, नैवेद्य चढ़ावें। फिर उस दीप में माता काली रूप की भावना करते हुए हाथ जोड़कर यह श्लोक बोलें—

"भो दीप देवी रूपस्त्वं कर्म साक्षी ह्यविघ्न कृत।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥"

हिन्दी अनुवाद—"हे दीप ! आप माता काली के रूप हैं, कर्म के साक्षी तथा विघ्न के निवारक हैं। जब तक पूजन कर्म पूर्ण न हो जाये, तब तक आप सुस्थिर भाव से सन्निकट रहें।" नोट—अब निम्न मंत्र पढ़कर शिखा (टीक) बांधें—

शिखा बन्धन मंत्र

ॐ मानस्तोके तनये मानङ्ग आयुषि मानौ गोषु मानोऊ अश्वेषु रीरिषः। मानो वीरान रूद्र भामिनो वधीर्ह है विष्मन्तः सदमित्वा हवामहे॥

नोट—अब "आचमन" करें। आचमन क्रिया में दाहिने हाथ की अंजुली में जल लेवें और मंत्र पढ़कर वह जल अपने होंठ से लगाकर एक बूंद मुख में लें। आचमन का जल कंठ से नीचे नहीं उतरना चाहिए। यह क्रिया नीचे लिखित मंत्र द्वारा क्रमशः तीन बार करें।

आचमन मंत्र

ॐ केशावय नमः।
ॐ नारायणाय नमः।
ॐ माधवाय नमः।

तत्पश्चात्–

"ॐ हषिकेषवाय नमः"–मंत्र पढ़कर हाथ धो लें। इसके पश्चात् मस्तक पे त्रिपुण्ड चन्दन अथवा तिलक के समान लाल चन्दन निम्न मंत्र पढ़कर धारण करें।

मस्तक चन्दन लेपन मंत्र

ॐ चन्दनस्य—महत्वपुण्यं पवित्र पाप नाशनम्।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मी स्तिस्थि सर्वदा॥

नोट–अब वैदिक पुरोहित यजमान के हाथ में निम्न मंत्र पढ़कर मौली (रक्षा सूत्र) बांधें।

रक्षा सूत्र बन्धन मंत्र

ॐ मंगलम् भगवान विष्णु मंगलम गरूड़ऽध्वजः।
मंगलम् पुण्डरी काक्षं मंगलायच तनो हरिः॥

नोट–अब दोनों हाथ जोड़कर नीचे लिखित "विनियोग मंत्र" का जप करें अर्थात् पढ़े–

विनियोग मंत्र

अस्य श्री महाकाली मन्त्रस्य भैरव ऋृषिः, उष्णिक—
छन्दः, महाकाली देवता, ह्रीं बीजं हुं शक्ति, क्रीं कीलकं
मम अभिष्ठ सिद्धि यर्थे जपे बिनियोगः॥

नोट–अब "न्यास" करें। न्यास कई प्रकार के होते हैं, किन्तु महाकाली के किसी भी रूप की साधना हो या दस महाविद्याओं की साधना, इनमें ऋृष्यादि न्यास, हृदयादि न्यास अंगन्यास, करन्यास मुख्य हैं। न्यास विधि में दाहिने हाथ की पांचों उँगलियों द्वारा अंगों का क्रमशः स्पर्श करने का विधान है।

सर्वप्रथम ऋृष्यादि न्यास सम्पन्न करें–

ऋृष्यादि न्यास

"ॐ भैरव ऋृषये नम शिरसि"–दाहिने हाथ की पाँचों उँगलियों से सिर का स्पर्श करें।

"ॐ उष्णिक छन्दसे नमः मुखे"–मुख स्पर्श करें।

"ॐ महाकालिका देवतायै नमः हृदि"–हृदय का स्पर्श करें।

"ॐ ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये"–मल निकाश मार्ग का स्पर्श करें।

"ॐ शक्तये नमः पादयोः"–दोनों घुटनों एवं पैर के दोनों पंजों को स्पर्श करें।

"ॐ क्रीं कीलकाय नमः नाभौः"–नाभिस्थल का स्पर्श करें।

"ॐ विनियोगाय नमः सर्वांगे"–इस क्रिया में दोनों हाथों की पाँचों उँगलियों से दोनों भुजाओं एवं समस्त बाकी अंगों का स्पर्श करें।

नोट–अब "करन्यास" क्रिया सम्पन्न करें। पद्मासन की मुद्रा में दोनों हाथ दोनों घुटनों पर रखकर यह न्यास सम्पन्न किया जाता है। यह क्रिया दोनों हाथों की हथेलियों एवं उँगलियों से की जाती है।

करन्यास मंत्र और विधि

"ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः"—मंत्र बोलकर तर्जनी को मोड़कर अंगूठे की जड़ से जहां मंगल का क्षेत्र है, वहां लगावें।

"ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः"—मंत्र उच्चारण करते हुए अंगूठे की नोक से तर्जनी के छोर का स्पर्श करें।

"ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां नमः"—मंत्र उच्चारण करते हुए अंगूठे से मध्यमा के अन्तिम भाग का स्पर्श करें।

"ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः"—मंत्रोच्चारण करते हुए अनामिका का स्पर्श करें।

"ॐ क्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः"—मंत्रोच्चारण करते हुए कनिष्ठका उँगली के अंतिम भाग के साथ अंगूठे की नोक का स्पर्श करें।

"ॐ क्रः करतल पृष्टाभ्यां नमः"—यह मंत्र पढ़कर दोनों हाथों की हथेलियों को एक दूसरे के ऊपर नीचे दो बार घुमाईये।

नोट—अब "हृदययादि न्यास" क्रिया सम्पन्न करें। पद्मासन की मुद्रा में बांया हाथ घुटनों पर रखे हुए दाहिने हाथ की पाँचों उँगलियों से निम्नलिखत अंगों का स्पर्श करें—

हृदयादि न्यास मंत्र और विधि

"ॐ क्रां हृदयाय नमः"—दाएँ हाथ की पाँचों उँगलियों से हृदय का स्पर्श करें।

"ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा"—मस्तक का स्पर्श करें।

"ॐ क्रूं शिखायै वषट्"—शिखा स्थान का स्पर्श करें।

"ॐ क्रैं कवचाय हुमं"—दोनों हाथों से दोनों भुजावों का स्पर्श करें।

"ॐ क्रौं नेत्रयाय वौषट"—सीधे हाथ से तीनों नेत्रों का स्पर्श करें। तीसरा नेत्र मस्तक के मध्य में माना जाता है।

"ॐ क्रः फट् स्वाहा"—बाएँ हाथ पर दाहिने हाथ का सीधा पंजा मारकर "फट्" की ध्वनि करें, अर्थात् एक ताली बजाएँ।

नोट—इसके पश्चात् पूजन कराने वाले आचार्य का वरण करें। इस क्रम में अपने दोनों हाथों पर वैदिक पंड़ित के लिए लाए गये वस्त्र, वस्त्र के ऊपर पान का पत्ता, सूपारी (5–5) यज्ञोपवीत तथा द्रव्य रखकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें। मंत्र समाप्ति के पश्चात् हाथ की वस्तुएँ आचार्य के हाथों में प्रदान करें।

आचार्य वरण मंत्र

ॐ अद्य अमुक गोत्रोत्पन्न अमुक प्रवरान्वितः अमुक नाम शर्माऽहं अमुक गोत्रोत्पन्नं अमुक प्रवरान्वितं शुक्ल यजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेय माध्यन्दिनी यशाखाध्या यितं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् महाकाली सिद्धि कर्मणि एभिः वरण वस्त्र द्रव्यैः आचार्य त्वेन त्वां अंह वृणे।

नोट–वरण सामग्री लेते समय आचार्य को "वृतोस्मि" शब्द का उच्चारण करना चाहिए। अब साधक हाथ जोड़कर आचार्य की वन्दना करें।

आचार्य प्रार्थना मंत्र

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां वृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत॥

नोट–अब आचार्य साधक द्वारा प्रदत्त नवीन वस्त्र धारण करें, तत्पश्चात् साधक गोल सूपारी में मोली लपेट कर, महाकाली सिंहासन के सामने केले के पत्ते पर रखें और उनपर भगवान गणेश के रूप का ध्यान कर पूजन करें। किसी भी उपासना या तांत्रिक सिद्धि साधना आरम्भ में सर्वप्रथम भगवान श्री गणेश की पूजा की जाती है, तभी साधक को उपासना या सिद्धि साधना में सफलता मिलती है।

श्री गणेश पंचोपचार पूजन

[आवाहन मंत्र]

गदा बीज पूरे धनुः शूल चक्रे सरोजोत्पले पाशधान्या ग्रदंताम्।
करैः संदधानं स्वशुंडा ग्रराजन मणीकुंभ मंकाधि रूढं स्वपत्न्या॥
सरोजन्मा भूषणानाम्भ रेणोज्ज्वलं द्धस्तन्वया समालिंगिताम्।
करीद्रानन चंद्रचूड़ं त्रिनेत्र जगन्मोहनं रक्तकांतिं भजेत्तमम्॥

भावर्थ–"अपने दाएँ हाथों में गदा, शूल, बीजपूर, चक्र, पद्म व बाएं हाथों में धनुष, कमल और पाश, धान्य मंजरी एवं दन्तधारी, मणि कलश से सुशोभित, सूंड के अग्र भाग वाले, अंक में अपनी पत्नी को बैठाए हुए तीन नेत्रों वाले, गजमुखी, चंद्रकला धारी, त्रैलोक्य को मोह लेने वाले, रक्तवणी कांति से शोभायमान भगवान गणपति मेरे पूजन स्थल में सिद्धि साधना में सफलता देने हेतु दयाकर पधारने की कृपा करें। मैं आपका ध्यान करता हूँ।"

नोट–अब मोली लिपटे सूपारी के ऊपर क्रमशः जल, अक्षत, मोली, चन्दन, बिल्वपत्र पुष्प और नैवेद्य से क्रमशः भगवान गणेश का पूजन करें।

ॐ गंगाजले स्नानियम् समर्पयामि श्री गणेशाय नमः।
ॐ अक्षतम् समर्पयामि भगवते श्री गणपति नमः।
ॐ वस्त्रम समर्पयामि भगवान श्री गणपति नमः।
ॐ चन्दनम् समर्पयामि भगवन गणपति यहा गच्छ इहतिष्ठ।
ॐ बिल्वपत्रम समर्पयामि भगवते श्री गणपति नमः।
ॐ पुष्पम् समर्पयामि भगवन श्री गणेशाय नमः।
ॐ नैवेद्यं समर्पयामि भगवान गणपति यहा गच्छ इहतिष्ठ।

नोट–अब दोनों हाथ जोड़कर भगवान श्री गणेश की अराधना करें।

श्री गणेश अराधना मंत्र

विश्वेश माधवं ढुन्ढि दण्डपाणि।
बंदे काशी गुह्या गंगा भवानी मणिक कीर्णकाम्॥
वक्रतुण्डं महाकाव्य कोटि सूर्य सम प्रभ।
निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
सुमश्वश्येव दन्तस्य कपिलो गर्जकर्ण कः।
लम्बोदरस्य विकटो विघ्ननासो विनायकः॥
धूम्रकेतु र्गणाध्यक्ष तो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नमामि च पठेच्छणु यादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।
शुक्लां वर धरं देवं शशि वर्ण चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत सर्वविघ्नोप शान्तये॥
अभित्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो य सुरासुरैः।
सर्व विघ्नच्छेद तस्मै गणाधिपते नमः॥

हिन्दी अनुवाद–"हे विश्वनाथ, माधव दुण्ढिराज गणेश, दण्डपाणि, भैरव, काशी, गुह्या, गंगा तथा भवानी कर्णिका का मैं वन्दना करता हूँ। टेढ़ी सूंड वाले गणपति देव। आप सर्वदा सदैव समस्त कार्यों में मेरे विघ्नों का निवारण करें।

सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्ण, लम्बोदर, विकट, विघ्ननाशक, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र और गजानन–ये विवाह, गृह प्रवेश, यात्रा, संग्राम तथा संकट के अवसर पर इन बारह नामों का पाठ और श्रवण करता है, उसके कार्य में विघ्न उत्पन्न नहीं होता हैं।

शक्ल धारण करने वाले चन्द्रमा के समान और गोरे, चार भुजाधारी और प्रसन्न मुख वाले गणपति देव, मैं आपका ध्यान करता हूँ। हमारे सम्पूर्ण विघ्नों को शान्त करें।

देवताओं और असुरों नें भी अभिष्ट मनोरथ सिद्धि के लिए जिनकी पूजा की है, जो विघ्न बाधाओं को हरने वाले हैं, उन गणपति जी को नमस्कार है।"

नोट–साधको ! साधना में सफलता के लिए श्री गणेश पूजन के पश्चात् "सिद्ध गुरू" का पूजन करें। साधना काल के आरम्भ में यदि गूरूदेव स्वयं उपस्थित हों तो उन्हें पीले रंग का वस्त्र (धोती 1 जोड़ा, चादर–1, बनियान–कुर्ता–11, जनेऊ और द्रव्यादि) प्रदान कर, उन्हें कारण कराकर, उनके चरणों की पूजा करें। यदि गूरूदेव उप्रस्थित न हों तो उनके द्वारा प्रदत्त "सिद्ध गुरू कवच यंत्र" तांबे के प्लेट में सिंहासन पर स्थापित कर, उन्हें गुरू स्वरूप समझकर पूजन करें। गुरू पूजन के बिना और श्री गणेश अराधना के बिना कोई भी साधक सिद्धि साधना में सफल हो ही नहीं सकता, अतः अवश्य ही गुरू पूजन करें।

इस पूजन के क्रम में सर्वप्रथम गुरू का "आवाहन" करें। गुरू यदि पूजन स्थल पर मौजूद हों तो गुरू में दिव्य शक्ति का आवाहन करें। यूं तो गुरू साधारण मानव दिखलाई पड़ते हैं, परन्तु जब गुरूदेव अपने आसन पर विराजमान होते हैं तो उनमें शक्ति का आवाहन होता है, तब वे साधारण इन्सान ही नहीं होते बल्कि उनमें ब्रह्मा, विष्णु और महेश से भी बढ़कर शक्ति आ जाती है। यदि गुरू उपस्थित न हों तो "गुरू कवच यंत्र" में गुरू स्वरूप का आवाहन करें।

श्री गुरूदेव आवाहन मंत्र

सहस्त्रदल पद्मस्थ मंतरात्मा नमुज्ज्वलम्।
तस्योपरि नादविंदो र्मध्ये सिंहासनोज्ज्वले॥
चिंतयेन्निज गुरूं नित्यं रजता चल सन्निभम्।
वीरासन समासीनं मुद्रा भरण भूषितम॥
शुभ्रमाल्यां बरधरं वरदा भय पाणिनम्।
वामोरूशक्ति सहितं कारूण्येना वलंकितम्॥
प्रियया सब्यहस्तेन धृत चारू कलेवरम्।
वामेनोत्पल समायुक्तं स्मरेतन्नाम पूर्वकम्॥

भावार्थ—हजार दल (पंखुड़ियों) युक्त कमल के बीच में ज्योतिस्वरूपा अंतरात्मा का निवास है। उसके ऊपरी भाग पर नाद व बिंदु के मध्य में उज्जवल सिंहासन पर श्री गुरू विराजमान हैं। चांदी के पर्वत समशुभ्र निजगुरू का सदैव स्मरण करता हूँ। हे गुरू देव ! आप सदैव वीरासन मुद्रा में स्थित रहते हैं। आप मुद्रा भरणादि से विभूषित हैं। आप श्वेत माला धारण करते हैं और वस्त्र भी श्वेत हैं। आपके हाथ वर और अभय मुद्रा में उठे हैं। वाम उरू (बांईं जांघ) पर शक्ति है तथा आप करूणापूरित नेत्रों से देख रहे हैं। लाल वस्त्रों से सुशोभित व हाथ में कमल लिये प्रिया (लक्ष्मी) अपने दांए हाथ से कलेश्वर धारण किए हैं व लाल वस्त्रों से सुशोभित व ज्ञान शक्ति से आप सुशोभित हैं। ऐसे गुरूदेव का मैं आवाहन करता हूँ।

नोट—इसके पश्चात्–सिद्ध गुरू कवच यंत्र पर जल, अक्षत, चन्दन, पुष्प, बिल्वपत्र, नैवेद्य आदि से पूजन करें। यह "पंचोपचार पूजन" उसी प्रकार करें, जिस प्रकार "गणेश पूजन" में पंचोपचार पूजन सम्पन्न किए हैं। पूजन में श्री गणेशाय: नम: के बदले "श्री गुरूवे नम:" बोले। इसके पश्चात् गुरू देव का ध्यान करें।

श्री गुरूदेव ध्यान मंत्र

गुरू: ब्रह्मा गुरू: विष्णु: गुरू र्देवो महेश्वर:।
गुरू: साक्षात पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नम:॥
ध्यानमूलं गुरो: मूर्ति: पूजा मूलं गुरो: पदम्।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरो कृपा।

न गुरोरधिकं तत्वं न गुरोरधिकं तपः।
गुरोः परतरं नास्ति तस्मात्सम्पूज्यते गुरूः॥
नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्तक्षं शिवं रूपणिम्।
शिरसा यज्ञपीठस्थं तस्मै श्री गुरुवे नमः॥
त्वं पिता त्वं च मे माता त्वं बन्धु त्वं च देवता।
त्वं मोक्ष प्राप्ति हेतुश्च तस्मै श्री गुरवे नमः॥

पृथ्वी शुद्धि मंत्र

ॐ अपर्षन्तु ये भूता ये भूता भूवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्ता रश्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

नोट–अब पूजन का "संकल्प" करें–

इस संदर्भ में दाहिने हाथ की अंजुली पर पान, सूपारी द्रव्य, गंगाजल, अक्षत, पुष्प, तिल लेकर निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें। संकल्प मंत्र के मध्य जहां-जहां भी "अमुक" शब्द का उच्चारण किया गया है, वहां क्रमशः मास, तिथि, नक्षत्र, करण, राशि, निवास स्थान आदि उच्चारण करें।

काली पूजन "संकल्प" मंत्र

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णु श्री मद् भगवतो महा पुरूषस्य विष्णो राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्राह्मणोह्निं द्वितीय प्रहरार्द्धे, श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत-मनवन्तरे अष्टांविशा तितमे युगे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भूर्लोक जम्बू द्विपे भारत वर्षे भरत खण्डे आर्यावर्त देशे "अमुक" नगरे, अमुक ग्रामे, अमुक स्थाने वा वोद्धावतारे अमुक नाम संवत्सरे श्री सूर्य अमुकायने अमुक तौ महामांगल्य प्रद मासोत्तमे मासे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक नक्षत्रै अमुक वासरे अमुक योगे अमुक करणे अमुक राशि स्थिते देव गुरौ शेषेसु ग्रहेषु च यथा अमुक शर्मा महात्मनः मनोकामना पूर्ति, धन, जन, सुख सम्पदा प्रसन्नता परिवार सुख शान्ति, ग्राम सुख शान्ति हेतु, सफलता हेतु श्री महाकाली पूजन-कलश स्थापन-हवन-कर्म-आरती कर्म अहम् करिष्येत।

नोट–हथेली की वस्तुएं माता जी के सिंहासन पर समर्पित कर दें। अब आप "स्वस्ति वाचन" के ग्यारह मंत्र पढ़ें। इस मंत्र का उच्चारण करते समय उपासक हाथ में चावल लेकर–दो चार दाने कर पूजा स्थल के सिंहासन पर छिड़कते जाएं, यह चावल तब तक छिड़कते रहें जब तक सम्पूर्ण (ग्यारह) मंत्र पढ़कर पूर्ण न कर लें।

"स्वस्ति वाचनम" के पांच मंत्र

(पहला मंत्र)

ॐ स्वस्तिनः इन्द्रो पद्धश्रवा स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिन स्ताक्षर्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।

हिन्दी अनुवाद—अत्यन्त यशस्वी इन्द्र हमारा कल्याण करने वाले हों। जिनके संकट नाशक चक्र को कोई रोक नहीं सकता वह परमात्मा गरुड़ और बृहस्पति हमारा कल्याण करें। (यं० वे० २५/१९/ से प्राप्त)

(दूसरा मंत्र)

पचः पृथिव्यां पचः ओषधिषु पयो दिव्यन्त।
रिक्षे पयोधाः पश्यवति प्रदिशाः सन्तु मह्यम।।

हिन्दी अनुवाद—हे अग्ने तुम पृथ्वी में रस को धारण करो, औषधि में रस की स्थापना करो, स्वर्ग में और अन्तरिक्ष में भी रस को स्थापित करें। मेरे लिए दिशा—प्रदिशा सभी रस देने वाले हो। (य० वे० १८/३९)

(तीसरा मंत्र)

ॐ द्यौः शान्ति रन्तरिक्षग्वं शान्तिः पृथिवी शान्तिः रापः शान्तिः रोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिः विश्व देवाः शान्ति ब्रह्म शान्तिः स्र्वग्वं शान्तिः शान्ति रेव शान्तिः सामा शान्तिः शान्ति रेधि।। सुशान्ति-र्भवतु।।

हिन्दी अनुवाद—स्वर्ग, अन्तरिक्ष और पृथ्वी शान्त रूप हो। जल औषधि, वनस्पति, विश्व देवता, ब्रह्म रूप ईश्वर, सब संसार शान्ति रूप हो, जो साक्षात शान्ति है, वह भी मेरे लिए शान्ति देने वाली हो। (य० बे० ३६/१७)

(चौथा मंत्र)

इमा रूद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्विराय प्रभरामहे मतीः।
यथा शमशादि द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन नातुरम।।

हिन्दी अनुवाद—पुत्रादि मनुष्यों और गादि मनुष्यों में जैसे कल्याण की प्राप्ति हो और इस ग्राम के मनुष्य उपद्रव से रहित हों, उसी प्रकार मैं अपनी श्रेष्ठ मतियों को जटाधारी रूद्र के निमित्त अर्पित करता हूं। (य० बे० १६/४८)

(पांचवां मंत्र)

ॐ गणानात्वा गणपति ग्वं हवामहे प्रिया नांत्वा प्रियपति ग्वंहवामहे निधिनांत्वा निधिपति ग्वं हवामहे वसो नम।

आहम जानि गर्भध मात्व मजासि गर्भधम्।।

हिन्दी अनुवाद–हे गणपति ! तुम सब गणों के स्वामी हो, हम तुम्हें आहुत करते हैं। प्रियों के मध्य निवास करने वाले प्रियों के स्वामी हम तुम्हें आहुत करते हैं। हे निधियों के मध्य निवास करने वाले निधिपते ! हम तुम्हें आहुत करते हैं। तुम श्रेष्ठ निवास करने वाले रक्षक होओ। मैं गर्भधारण जल को सब प्रकार से आकर्षित करते हैं, तुम गर्भधारण करने वाले को अभिमुख करते हो। तुम सब पदार्थों के रचयिता होते हुए सब प्रकार से अभिमुख होते हो। (य० ब० २३/१९)

नोट–उपासको ! इसके पश्चात् भगवान विष्णु का पूजन करें। किसी भी पूजन में गणपति पूजन के बाद भगवान विष्णु एवं पंच देवता की पूजा की जाती है। इस संदर्भ में केले के पत्ते पर सिंहासन के दाहिने तरफ पांच पान के पत्ते, पांच सुपारी और नैवेद्य रखें और उसी पर भगवान विष्णु एवं पंचदेवता की पूजा करें। इस क्रम में सर्वप्रथम दाहिने हाथ की अंजुली में जल लेकर निम्न मंत्र पढ़ें, मंत्र समाप्ति के बाद जल पान पत्ते पर रख दें। इसी प्रकार क्रमशः अक्षत, तिल, चन्दन, बिल्वपत्र, पुष्प, तुलसी दल, नैवेद्य और पुनः जल से पूजन करें।

भगवान विष्णु एवं पंचदेवता का पूजन

गंगा जल से–

ॐ गंगाजले स्नानियम् भगवते श्री विष्णवे नमः। अक्षत से-

अक्षत से–

इदम् अक्षदम् समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

तिल से–

एते तिला समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

चन्दन से–

इदम् चन्दनम लेपनम समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः

बिल्वपत्र से–

इदम बिल्व पत्राणियम समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः

पुष्प से–

इदम् पुष्पम् समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

नैवेद्य से–

इदम नैवेद्यं समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

पुनः गंगाजल से–

एतानि गंध पुष्प धूप दीप ताम्बूल यथा भाग नैवेद्यानि भगवते श्री विष्णेव नमः।

नोट–उपरोक्त विधि और मंत्र से ही "पंचदेवता" का पूजन उसी स्थान पर करें। पूजन के अन्तर्गत जहां "विष्णवे नमः" शब्द कहा गया है उस स्थान पर "पंचदेवता नमः" शब्द उच्चारण करें।

पंचदेवता पूजन समाप्त होने के पश्चात् माता काली जी के "कलश" की स्थापना करें।

माता काली कलश स्थापना विधि और कलश पूजन

नोट–सर्वप्रथम सतंरगे गुलाल से अष्टदल कमल पूजा स्थल पर माता काली सिंहासन के आगे बनावें। पश्चात् शुद्ध मिट्टी या जौ का थड़ा बनावें। उस थड़ा के मध्य सिन्दूर से पांच तिलक किया हुआ जल से भरा घड़ा रखें। तत्पश्चात् कलश के पेंदे के पास हाथ रखकर यह मंत्र पढ़ें–

कलश भूमि स्पर्श मंत्र

ॐ भूरसि भूमिरस्य दितिरसि विश्वछाया विश्वस्य भुवनश्य धत्रीं पृथिवीं दुरवहिं पृथिवीं मां हिंसी।

नोट–इसके पश्चात् कलश के मुख को दाहिनी हथेली से बन्द करके निम्नलिखित मंत्र पढ़े–

ॐ वरूणस्योत्तम्भ वरूणस्य स्कम्भ सर्जनी स्थां वरूणस्य ऋतसदन्यसि वरूणस्य ऋतसदनमीस वरूणस्य ऋतसदनमासीद्।

नोट–अब कलश में सर्वोसधि डालें।

कलश सर्वोसधि समर्पण मंत्र

ॐ या औषधि पूर्वाजाता देवेभ्य स्त्रियुगम्पुरा।
मनैनुवभ्रणामहग्वं शतन्धामणि सप्त च।।

नोट–कलश में दुर्वा डालें।

कलश दुर्वादल समर्पण मंत्र

ॐ काण्डात-काण्डात प्ररोहन्ति पुरुषः परूषस्परि।
एवानो दुर्वेप्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।

नोट–कलश में पुंगीफल (सुपारी) डालें–

कलश पुंगीफल समर्पण मंत्र

ॐ या फलिनीयां अफलां अपुष्पा यास्य पुविषणीः।
बृहस्पतिः प्रसूतास्तानो मुञ्चनत्वग्वं हसः।।

नोट—अब कलश में पंचतत्न डालें—

कलश पंचरत्न समर्पण मंत्र

ॐ परिवाज पतिः कविरग्नि र्हव्यान्य क्रमी दधद्रत्नानि दाशुषे।

अब कलश में सुवर्ण या द्रव्य डालें—

कलश द्रव्य समर्पण मंत्र

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीद्या मुतोमाङ्ग कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

अब कलश में आम का पल्लव डालें—

आम्र पल्लव समर्पण मंत्र

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयंति कस्यद्।
किंजिद वासिनं कलशं दद्यात।।

नोट—अब कलश पे पानी वाला नारियल रखें—

कलश श्री फल समर्पण मंत्र

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्य पत्न्या बहोरात्रो पार्श्वे नक्षत्राणि रूप मश्विनो व्याप्तम। इष्पान्नि षाणां मुम्म इषाण सर्व लोकम्प ईषाण।।

नोट—कलश में लाल वस्त्र एवं मौली लपेटें।

कलश वस्त्र समर्पण मंत्र

ॐ वस्त्रो पवित्रमसि शतधारं वसो पवित्र मसि सहस्त्र धारम।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुत्वा काम धुक्षः।।

नोट—अब कलश के साथ गाय का गोबर स्पर्श करावें।

कलश में गाय का गोबर स्पर्श मंत्र

ॐ मानस्तोषे तनयेमान आयुष्मान व्यर्दिवृविषः सदमित्वा हवामहे इति गोमयेन कलश स्पर्शयेत।

नोट—अब हाथ जोड़कर वरुण देव का आवाहन करें—

श्री वरूण देव आवाहन मंत्र

ॐ तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्त यजमानो हविर्भिः।
अहेऊ मानो वरूणेह बोध्युषग्वं आयुः प्रमोषि।।
ॐ भुर्भूवः स्वः भो वरूण इहतिष्ठ। स्थापयामि पूजयामि।

नोट—इसके पश्चात् सम्पूर्ण तीर्थ एवं नदियों का कलश पे आवाहन करें—

सम्पूर्ण तीर्थों एवं नदियों का आवाहन

ॐ सर्वे समुद्रा सरित्संतिर्थानी जलदाः नदाः आयान्तु देविः पूजार्थ दुरितक्ष्कारकाः। कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रूद्रः समाश्रितः।।

कलश प्राण प्रतिष्ठा मंत्र

नोट—निम्न मंत्र पढ़ते हुए कलश पर अक्षत छिड़कें—

ॐ मनोजूतिर्जुषताभाज्यस्य बृहस्पति र्यज्ञामिवं तनोत्व रिष्टं यज्ञ सीममं दधातु। विश्व देवास इह महाकाली महाकाल सर्व देव सवेदेवि मादयन्तामे इह प्रतिष्ठ।

नोट—अबं कलश पर वरूण देव, नवग्रह, इष्टदेव लक्ष्मी, सरस्वती, नवदुर्गा, राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान, राधा–कृष्ण, ग्राम देवता, कुदेवता, भगवान शिव, गौरी, आदि समस्त देवि–देवताओं की पूजा इस प्रकार करें जैसे पीछे भगवान विष्णु का पूजन किए हैं। तत्पश्चात् माता काली का आवाहन करें।

माता काली आवाहन मंत्र

आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्प निषूदिनि।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्त शंकर प्रिये।।

नोट—सिंहासन पर बिछे वस्त्र का स्पर्श करते हुए यह मंत्रोच्चारण करें—

महाकाली आसन समर्पण मंत्र

ॐ विचित्र रत्न खचितं दिव्यास्तरण संयुक्तम्।
स्वर्ण सिंहासन चारू गृहीष्व महाकाली पूजितः।।

हिन्दी अनुवाद—हे मातेश्वरी काली माता ! यह सुन्दर स्वर्णमय सिंहासन ग्रहण कीजिए, इसमें विचित्र रत्न जड़े गये हैं, तथा इस पर दिव्य बिस्तर बिछा हुआ है।

नोट—अब हाथ की अंजुली में जल लेकर निम्न मंत्र पढ़े, मंत्र समाप्त होते ही जल सिंहासन पर छोड़ दें।

पाद्य जल समर्पण मंत्र

ॐ सर्वतीर्थ समूद भूतं पाद्यं गन्धदिभिर्युतम।
अनिष्ट हर्त्ता गृहाणेदं भगवति भक्त वत्सला।।
ॐ श्री दक्षिणा काली नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि।।

हिन्दी अनुवाद—हे भक्त वत्सला माता काली ! यह सारे तीर्थों के जल से तैयार किया गया तथा गंध (चन्दन) आदि से मिश्रित पाद्य जल, पैर पखारने हेतु ग्रहण करे।

नोट—पुनः अरघी से चन्दन युक्त जल सिंहासन पर निम्न मंत्र उच्चारण कर समर्पित करें।

माता काली को अर्घ्य समर्पण मंत्र

ॐ श्री मातेश्वरी दक्षिणा कालिकाय नमस्तेस्तु गृहाण करुणाकारी।
अर्घ्यं च फलं संयुक्तं गंधमाल्याक्षतै-युतम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे माता दक्षिणा काली ! आपको नमस्कार है। आप गन्ध, पुष्प अक्षत और फल आदि रसों से युक्त यह अर्घ्य जल स्वीकार करें।

नोट—अब निम्न मंत्र उच्चारण करते हुए अरघी से तीन बार जल सिंहासन पर छोड़ें।

माता काली को आचमन कराने का मंत्र

मातेश्वरी दक्षिणा कालिका नमस्तुभ्यं त्रिदेशेरेभिवन्ति।
गंगोदकेन देवेशि कुरुष्वा चमनं भगवतिः।।
श्री माता काली नमः। आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

हिन्दी अनुवाद—हे शिव महाशक्ति भगवती काली मां ! आपको नमस्कार है। आप गंगाजल से आचमन करें।

नोट—इसके पश्चात् अरघी में दूध भरकर माता काली की प्रतिमा को स्नान करावें।

माता काली को दूध से स्नान कराने का मंत्र

भगवति कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवन परम्।
पावनं यज्ञाहेतुश्य पयः स्नानार्थं समर्पितम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे भगवती ! काम धेनु के थन से निकला, सबके लिए पवित्र, जीवन दायी तथा यज्ञ के हेतु यह दुग्ध आपके स्नान हेतु समर्पित है।

नोट—अब अरघी में दही लेकर माता काली को स्नान करावें।

दधि स्नान मंत्र

शिवा भवानी पयस्तु समुद्भुतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे शिवा भवानी महेश्वरी काली जी ! यह दूध से निर्मित खट्टा-मीठा चन्द्र के समान उजला दही ले आया हूँ। आप इससे स्नान कीजिए।

नोट—इसके पश्चात् अरघी में गाय का घी लेकर माता काली को स्नान कराईये।

माता काली को घृत से स्नान कराने का मंत्र

भो भगवती नवनीत समुत्पन्नं सर्वसंतोष कारकम्।
धृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे खड़ग वाली माँ ! मक्खन से उत्पन्न तथा सबको संतुष्ट करने वाला यह गाय का घृत आपको अर्पित करता हूँ! आप इससे स्नान कीजिए।

नोट—अब अरघी में शहद भरकर माता काली को स्नान करावें।

माता काली को शहद से स्नान कराने का मंत्र

भो खप्पड़वाली मातुः पुष्प रेणु समुद भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेज पुष्टि करं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यन्ताम।।

हिन्दी अनुवाद—हे खप्पड़वाली माता जी ! पुष्प के पराग से उत्पन्न, तेज की पुष्टि करने वाला दिव्य स्वादिष्ट मधु आपके समक्ष प्रस्तुत है, इसे स्नान के लिए ग्रहण करें।

नोट—इसके पश्चात् शक्कर घोले रस से माता काली को स्नान करावें।

शर्करा रस से स्नान कराने का मंत्र

मुण्डमालिनी मातेश्वरी इक्षुसार समुद भुतं शर्करा पुष्टिवा शुभा।
मलाप हारिका दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे मुण्डमालिनी मातेश्वरी काली माँ ! ईख के सार तत्व से यह शर्करा रस निर्मित है, जो पुष्टि कारक, शुभ तथा मैल को दूर करने वाली है, यह दिव्य शर्करा रस आपकी सेवा में प्रस्तुत है।

नोट—अब माता काली की प्रतिमा को पुनः गंगा जल से स्नान करावें।

शुद्धोदक स्नान मंत्र

गंगा च यमुनाचैव गोदावरी सरस्वती।
नर्वदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे दयामयी अम्बे ! यह शुद्ध जल के रूप में गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्वदा, सिन्धु और कावेरी यहां विद्यमान हैं। शुद्धोदक स्नान के लिए यह जल ग्रहण करें।

नोट—अब माता जी के उपर सुगन्धित इत्र छिड़कें।

सुवासित स्नान मंत्र

चम्पा काशोक सकुल मालती मोगरादिर्भिः।
वासित स्निग्धता हेतु तैल चारू प्रतिगृह्यन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे भक्त रक्षिका काली माता जी ! चम्पा, अशोक, मौलसरी, मालती और मोगरा आदि से वासित तथा चिकनाहट के हेतु यह तेल और इत्र आप ग्रहण करें।

माता काली को वस्त्र समर्पण मंत्र

भो भक्तप्रिया मातुः शीतवातोष्ण संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम देव लंकारणं वस्त्रभतः शान्ति प्रयच्छ मे।।

हिन्दी अनुवाद—हे भक्तप्रिया मातेश्वरी यह वस्त्र आपकी सेवा में समर्पित है। यह सर्दी गर्मी, हवा से बचाने वाला, लज्जा का उत्तम रक्षक तथा शरीर का अलंकार है, इसे ग्रहण कर हमें शान्ति प्रदान करें।

नोट—अब प्रतिमा के मस्तक में चन्दन लगावें।

चन्दन समर्पण मंत्र

श्री खण्ड चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपन दक्षिणा कालीः चन्दनं प्रतिगृहयन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे करुणामयी दक्षिणा काली माँ ! यह दिव्य श्री खण्ड रक्त चन्दन सुगंध से पूर्ण तथा मनोहर है। विलेपन के लिए यह चन्दन स्वीकार करें।

नोट—अब माता काली जी के ऊपर अक्षत छिड़कें।

माता काली जी को अक्षत समर्पण मंत्र

अक्षतास्य भगवतिः कंकु भाक्त् सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि।।

हिन्दी अनुवाद—हे परमेश्वरी ! ये कुंकुम (लाल गुलाल) में रंगे हुए सुन्दर अक्षत हैं, आपकी सेवा में समर्पित करता हूँ, इन्हें ग्रहण कीजिए।

नोट—अब माता काली को बिल्वपत्र एवं पुष्प चढ़ाइये।

बिल्वपत्र एवं पुष्प समर्पण मंत्र

बन्दारूज नाम्बदार मन्दार प्रिये धीमहि।
मन्दार जानि रक्त पुष्पाणि स्वेताकार्दीन्मुपेहि भो।।

हिन्दी अनुवाद—वन्दना करने वाले भक्तों के लिए मन्दार कल्प वृक्ष के समान कामना पूरक है। हे मन्दार प्रिये माहेश्वरी काली जी, मन्दार तथा लाल पुष्प आप कृपया ग्रहण करें।

माता काली जी को पुष्प माला अर्पण मंत्र

भगवतिः माल्यादीनि सुगन्धिनि माल्यादीनि वै देविः।
मयाह्वतानि पुष्पाणि गृहायन्ता पूजनाय भो।।

हिन्दी अनुवाद—हे भगवती ! लाल पुष्प मालती इत्यादि पुष्पों की मालाएं और पुष्प आपके लिए लाया हूँ, आप इन्हें पूजा के लिए ग्रहण करें।

माता काली जी को सिन्दूर समर्पण मंत्र

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुख वर्द्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रति गृह यन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे मातेश्वरी चण्डिके ! सुन्दर लाल, सौभाग्य सूचक, सुखवर्द्धन, शुभद, तथा काम पूरक सिन्दूर आपकी सेवा में अर्पित है। इसे स्वीकार करें।

नोट—इसके पश्चात् माता जी के चरणों में लाल गुलाल समर्पित करें।

लाल गुलाल अर्पण मंत्र

नाना परिमले र्दव्यौ निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
गुलाल नामकं चूर्ण गन्धाढ्यं चारू प्रति गृह यन्ताम।।

हिन्दी अनुवाद—हे मंगला काली माँ ! तरह–तरह के सुगन्धित द्रव्यों से निर्मित यह गन्ध युक्त गुलाल नामक उत्तम चूर्ण ग्रहण कीजिए।

नोट—अब माता काली को सुगन्धित धूप या अगरबत्ती दिखावें।

सुगन्धित धूप अर्पण मंत्र

वनस्पति, रसोद, भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोढ्यं प्रतिगृह यन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद—हे भक्तवत्सला भगवती ! वनस्पतियों के रस से निर्मित सुगन्दित उत्तम गन्ध रूप और समस्त देवि–देवताओं के सूंघने योग्य यह धूप आपकी सेवा में अर्पित है, इसे ग्रहण करें।

नोट—अब माता जी को प्रज्जवलित दीप दिखावें।

माता काली जी का दीप दर्शन मंत्र

साज्यं य वर्तिसंयुक्त वह्निनां योजितं मया।
दीप गृहाण त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवि महेश्वरी।
त्राहि मां निरयाद् घोरा हो पज्योतिर्न भोस्तुतते।।

हिन्दी अनुवाद—हे मातेश्वरी ! घी में डुबोई रूई की बत्ती को अग्नि से प्रज्जवलित करके दीपक आपकी सेवा में अर्पित कर रहा हूँ। इसे ग्रहण कीजिए। यह दीप त्रिभुवन के अन्धकार को मिटाने वाला है। मैं अपनी माता श्री दक्षिणा काली को यह दीप अर्पित करता हूँ। हे देवि! आप हमें घोर नरक से बचाइये।

नोट—इसके पश्चात् विभिन्न प्रकार की मिठाईयां व नाना प्रकार के फल नैवेद्य समर्पित करें।

नैवेद्य समर्पण करने का मंत्र

नैवेद्य गृह यन्ताम देविः भक्ति में ह्यचलं कुरू।
ईप्सित में वरं देहि परत्र च परां गतिम्।।
शर्करा खण्ड खाद्यानि दीव्यक्षीर घृताणि च।
आहारं भक्ष्य भोज्यं च नैवेद्यं प्रति गृहयन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद–हे भक्तवत्सला माहेश्वरि ! आप यह नैवेद्य ग्रहण करें तथा मेरी भक्ति को अविचल करें। मुझे वांछित वर दीजिए और परलोक में परम गति प्रदान कीजिए। शक्कर व चीनी से तैयार किए गये खाद्य पदार्थ दही, दूध, घी, एवं भक्ष्य भोज्य विभिन्न फल आहार नैवेद्य के रूप में अर्पित है, इसे स्वीकार कीजिए।

नोट–अब सिंहासन पर पान बीड़ा चढ़ावें।

पान बीड़ा समर्पण मंत्र

ॐ पूंगीफल महाद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
एला चूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृहयन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद–हे दया सिन्धु मातेश्वरी काली ! महान दिव्य पूंगीफल, इलायची, और चूना आदि से युक्त पान का बीड़ा आपकी सेवा में अर्पित है, इसे ग्रहण करें।

नोट–इसके पश्चात् माता जी को नारियल फल सिंहासन पर भेंट करें।

नारियल फल अर्पण मंत्र

इदं फलं मया भगवति स्थापित पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाति र्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

हिन्दी अनुवाद–हे सर्व सुख दात्री माता काली जी ! यह नारियल फल मैंने आपके समक्ष समर्पित किया है, जिससे हमें जन्म–जन्मांतर तक आप हमें सफलता प्रदान करें।

नोट–इसके बाद द्रव्य आदि दक्षिणा सिंहासन पर समर्पित करें।

माता काली को दक्षिणा अर्पण मंत्र

हिरण्यगर्भ गर्भस्यं हेम बीजं विभावसोः।
अनंत पुण्यं फल दमतः शान्ति प्रयच्छमे।।

हिन्दी अनुवाद–हे दयालु माता ! सुवर्ण हिरण्य गर्भ ब्रह्मा के गर्भ से स्थित अग्नि का बीज है। यह अनन्त पुण्य फलदायक है। परमेश्वरि! यह आपकी सेवा में अर्पित है। इसे ग्रहण कर हमें शान्ति प्रदान करें।

नोट–इसके पश्चात् दोनों हथेलियों में पुष्प भरकर, मंत्र पढ़ने के पश्चात् माता की पुष्पांजलि समर्पित खड़े होकर करें।

पुष्पांजलि समर्पण मंत्र

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कलोद् भवा च।
पुष्पांजलि र्मया दत्तौ गृहाण परमेश्वरिः।।

हिन्दी अनुवाद—हे परमेश्वरि ! यथा समय पर उत्पन्न होने वाले तरह–तरह के सुगन्धित पुष्प मैं पुष्पांजलि के रूप में अर्पित कर रहा हूँ, इन्हें स्वीकार कीजिए।

नोट—अब हाथ जोड़कर खड़े होकर माता काली जी के सिंहासन या प्रतिमा के चारों ओर घूम–घूम कर पांच बार ''प्रदक्षिणा'' करें और निम्नलिखित मंत्र उच्चारण करते रहें।

प्रदक्षिणा मंत्र

यानि कानि च पापानि च ज्ञाताज्ञात कृताणि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे-पदे।।

हिन्दी अनुवाद—हे कृपालु माता जी ! मनुष्यों से जाने–अनजाने में जो पाप हो जाते हैं, वे पाप आपकी परिक्रमा करते समय पद–पद पर नष्ट हो जाते हैं।

नोट—इसके पश्चात् गड़वी में जल भरकर बूंद–बूंद सिंहासन के पास गिरावें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

माता काली को विशेष अर्घ्य अर्पण मंत्र

रक्ष रक्ष भक्तवत्सला रक्ष त्रिलोक्य रक्षिकाः।
भक्तानां भयं कर्त्ता त्राता भाव भवार्णवात्।।

हिन्दी अनुवाद—हे त्रिलोक की रक्षा करने वाली माँ काली जी ! रक्षा कीजिए रक्षा कीजिए रक्षा कीजिए। आप भक्तों को अभय देने वाली और भव सागर से उनकी रक्षा करने वाली हैं।

नोट—इसके पश्चात् माता काली के 108 नामों का पाठ करें।

माता काली के 108 नामों की जप माला

(धन, वैभव, समृद्धि, सम्मान एवं यश प्राप्ति हेतु)

(भैरव उवाच)

शतनाम प्रवक्ष्यामि कालिकाया वरानने।
यस्य प्रपठनाद् वाग्मी सर्वत्र विजयी भवेत।।
काली कपालिनी कान्ता कामदा काम सुन्दरी।
कालरात्रिः कालिका च काल भैरव पूजिता।।
कुरूकुल्ला कामिनी च कमनीय स्वभाविनी।

कुलीनाकुलकत्री च कुलवर्त्म प्रकाशिनी।।
कस्तुरी रस नीला च काम्या कामस्वरूपिणी।
ककार वर्णा निलया कामधेनुः करालिका।।
कुलकान्ता करालास्या कामार्त्ता च कलावती।
कुशोदरी च कामाख्या कौमारी कुलपालिनी।।
कुलजा कुलकन्या च कलहा कुलपूजिता।
कामेश्वरी काम कान्ता कुञ्जरेश्वर गामिनी।।
कामदात्री कामहर्त्री कृष्णा च कपर्दिनी।
कुमुदा कृष्णदेहा च कालिन्दी कुलपूजिता।।
काश्यपी कृष्ण माता च कुलिशांगी कला तथा।
क्रीं रूपा कुलगम्या च कमला कृष्णपूजिता।।
कृशांगी किन्नरी कत्रीं कलकण्ठी च कार्तिकी।
कम्बुकण्ठी कौलिनी च कुमुदा काम जीविनी।।
कुलस्त्री कीर्तिका कृत्या कीर्तिश्च कुल पालिका।
कामदेव कला कल्पलता कामांग वर्द्धिनी।।
कुन्ती च कुमुदप्रीता कदम्ब कुसुमोत्सुका।
कादम्बिनी कमलिनी कृष्णा नन्द प्रदायिनी।।
कुमारी पूजनरता कुमारी गण शोभिता।
कुमारीरञ्चनरता कुमारी व्रत धारिणी।।
कंकाली कमनीया च काम शास्त्र विशारदा।
कपाल खट्वाङ्गधरा कलि भैरव रूपिणी।।
कोटरी कोटराक्षी च काशी कैलाश वासिनी।
कात्यायिनी कार्यकरी काब्य शास्त्र प्रमोदिनी।।
कामाकर्षण रूपा च कामपीठ निवासिनी।
कंगिनी काकिनी कुत्सिता कलह प्रिया।।
कुण्ड गोलोद् भवप्राणा कौशिकी कीर्तिवर्द्धिनी।
कुम्भस्तनी कटाक्षा च काव्या कोकनद प्रिया।।
कान्तार वासिनी कान्तिः कठिना कृष्ण वल्लभा।
इति ते कथितं देवि ? गुह्याद गुह्यतरं परम्।।
प्रपठेद य इदं नित्यं कालीनाम शताष्टकम्।
त्रिषु लोकेषु देवेशि ? तस्याऽसाध्यं न विद्यते।।
प्रातः काले च मध्याह्ने सायह्ने च सदा निशि।

यः पठेत परया भक्त्या कालीनाम शताष्टकम्।।
कालिका तस्य गेहे च संस्थानं कुरुते सदा।
शून्या गारे श्मशाने वा प्रान्तरे जलमध्यतः।।
वह्नि मध्ये च संग्रामे तथा प्राणस्य संशये।
शताष्टकं जपन् मन्त्र लभते क्षेममुत्तमम।।

हिन्दी अनुवाद–1. काली 2. कपालिनी 3. कान्ता 4. कामदा 5. काम सुन्दरी 6. कालरात्रि 7. कालिका 8. काल भैरव पूजिता 9. कुरूकुल्ला 10. कामिनी 11. कमनीय स्वभाविनी 12. कुलीना 13. कुलकर्त्री 14. कुलवर्त्म प्रकाशिनी 15. कस्तुरी रस के समान नीले रंग वाली, 16. काम्या 17. काम स्वरूपिणी 18. ककार वर्णा, 19. कामधेनु 20. करालिका 21. कुल कान्ता 22. करालास्या 23. कामार्त्ता 24. कलावती 25. कृशोदरी 26. कामाख्या 27. कौमारी 28. कुलपालिनी 29. कुलजा 30. कुल कन्या 31. कलहा 32. कुल पूजिता 33. कामेश्वरी 34. काम कान्ता 35. कुब्ज रेश्वर गामिनी 36. काम दात्री 37. कामहर्ती 38. कृष्णा 39. कपर्दिनी 40. कुद 41. कृष्ण देहा 42. कालिन्दी 43. कुलपूजिता 44. काश्यपी 45. कृष्ण माता 46. कुलिशांगी 47. कला 48. क्रीं रूपा 49. कुलराम्या 50. कमला 51. कृष्ण पूजिता 52. कृशांगी 53. किन्नरी 54. कर्त्री 55. कलकण्ठी 56. कार्तिकी 57. कम्बूकण्ठी 58. क्रौलिनी 59. कुमुदा 60. कामेजीविनी 61. कुलस्त्री 62. कार्तिकी 63. कृत्या 64. कीर्ति 65. कुल पालिका 66. कामदेव कला 67. कल्पलता 68. कामांग वर्द्धिनी 69. कुन्ती 70. कुमुद प्रीता 71. कदम्ब कुसुमोत्सुका 72. कादम्बिनी 73. कमलिनी 74. कृष्णनंद प्रदायिनी 75. कुमारी पूजन रता 76. कुमारी गण शोभिता 77. कुमारी रञ्जन रता 78. कुमारी व्रता धारिणी 79. कंकाली 80. कमनीया 81. कोटरी 82. काम शास्त्र विशारदा 83. कपाल खटवाङ्गधरा 84. काल भैरव रूपिणी 85. कोटराक्षी 86. काशी 87. कैलाश वासिनी 88. कात्यायिनी 89. कार्यकरी 90. काव्य शास्त्र प्रमोदिनी 91. काम कर्षण रूपा 92. कामपीठ निवासिनी 93. कंगिनी 94. काकिनी 95. क्रीड़ा 96. कीर्ति वर्द्धिनी 97. कलह प्रिया 98. कुण्डगोलोद भवप्राण 99. कौशिकी 100. कीर्ति 101. कुम्भस्तनी 102. कटाक्षा 103. काव्या 104. कोकन प्रिया 105. कान्तार वासिनी 106. कान्ति 107. कठिना 108. कृष्ण वल्लबा। अष्टोत्तरशत् महाकाली नमस्कार–नमस्कार, बारंबार नमस्कार !

इसके पश्चात् रूद्राक्ष की माला से नीचे लिखित मंत्र का 11 माला 40 दिन नित्य ही जप करें–

"ॐ क्रीं हुं ह्रीं फट् स्वाहा।"

नोट–40 वें दिन की रात्रि में जप समाप्त होने के पश्चात् हवन करें।

हवन मंत्र

ॐ प्रजापत्ये स्वाहा, इदं प्रजापतये।

ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदम इन्द्राय इत्यायाघारो।

ॐ अगन्ये स्वाहा, इदमग्न्ये।

ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम इत्याज्य भागौ।

ॐ भूः स्वाहा, इदं वायवे।

ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय।

ॐ मंगलाय नमः, इदम् मंगलाय स्वाहा।

ॐ बुधाय नमः स्वाहा, इदं बुधाय।

ॐ बृहस्पतये नमः स्वाहा, इदं बृहस्पतये।

ॐ शुक्राय नमः स्वाहा, इदं शुक्राय।

ॐ शनये नमः स्वाहा, इदं शनये।

ॐ राहवे नमः स्वाहा, इदं राहवे।

ॐ केतवे नमः स्वाहा, इदं केतवे।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारूक मिव बन्धनान्मृत्यो र्मुक्षीय मामृतात्। स्वाहा।।

ॐ तत्सवितर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् स्वाहा।

ॐ सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थे साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायण नमोऽस्तुते स्वाहा।

ॐ मंगलम् भगवान विष्णु मंगलम गरूड़ध्वज् मंगलम् पुण्डरी काक्ष मंगलाय तनो हरिः स्वाहा।

ॐ "क्रीं" नमः स्वाहा।

ॐ "ह्रीं" नमः स्वाहा।

ॐ ह्रौं कालि महाकालि किलि किलि फट् स्वाहा।

"ॐ क्रीं नमः स्वाहा"-मंत्र का कमसे कम (1100) ग्यारह सौ आहुतियां डालें।

नोट—उपासको ! हवन के बाद "मूर्द्धान" करें।

मूर्द्धान मंत्र

नोट—इस क्रम में पान, सूपारी, सूखे खड़कते नारियल और बची हुई हवन सामग्री, गुड़द्रव्य सहित दोनों हथेलियों पर रखकर खड़े होकर निम्न मंत्र उच्चारण कर हवन कुंड में डालें।

मंत्र

ॐ मूद्धान दिवो अरति पृथिव्या वैश्वानर् मृत मजात् मग्नि कविम्वं सम्भ्राजम तिथि जनानाम सन्ना पात्रं जयन्तु देवाः स्वाहा।।

अग्नि प्रार्थना मंत्र

हाथ जोड़कर—

ॐ श्रद्धां मेघां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टि श्रियं बलम। तेजः आयुष्य मारोग्यं देहि मेहब्य वाहन।। ततः उपविश्य श्रवेण भस्म मानीय दक्षिणा नामिकया गृहीत भस्मना।

हवन भस्म शरीर के विभिन्न अंगों में लगाने का मंत्र

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने, इति ललाटे, (मस्तक में लगावे)
ॐ कश्य पश्य त्र्यायुषं ग्रीवायाम्। (कंठ में लगावे)
ॐ यद्देवेषुत्रया युषं हृदिः (हृदय में लगावे)
ॐ तते अस्तु त्र्यायुषं, दक्षिणा वाहमले (दोनों वाहु में लगावें)

नोट—अब खड़े होकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए माता काली हवन कुंड सहित स्थानों के चारों तरफ पांच बार "परिक्रमा" करें।

प्रदक्षिणा मंत्र

यानि कानि च पापानि जन्मांतर् कृताणि च।
तानि-त्तानि प्रणशयन्ति प्रदक्षिणा पदे-पदे।।

नोट—उपासको ! प्रदक्षिणा समाप्ति के बाद कांशे की थाली पर पान का पत्ता रखकर कर्पूर जलाकर माँ को "आरती" दिखावें और इस पुस्तक के अन्तिम पृष्ट पर लिखी हुयी "आरती वन्दना" गावें। आरती वन्दना समाप्त होने के पश्चात् "पूजन विसर्जन" करें।

पूजन विसर्जन मंत्र

नोट—दोनों हाथ से गंगाजल की गड़वी पकड़कर खड़े होकर माता काली को अन्तिम पूजन अर्घ्य प्रदान करें, साथ-साथ निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजमादाय मामकीम्।
यजमान हितार्थाय पनराग भनाय च।।

नोट—इसके पश्चात् माता महाकाली को प्रणाम करें, फिर प्रसाद वितरण करें, ब्राह्मण एवं कुमारी 11 कन्याओं को भोजन करावें। कन्याओं को एवं खासकर वैदिक पंडित को पूर्ण सन्तुष्ट कर विदा करें। तत्पश्चात् स्वयं भोजन ग्रहण करें।

माता काली की पूजा में "बकरे की बलि या भैसे की बलि" भूल से भी न चढ़ावें। बलि चढ़ाने से माता क्रोधित हो जाती हैं, इसलिए यह भूल न करें।

साधको ! उपरोक्त सम्पूर्ण नियमानुसार पूजन, जप सम्पन्न करने के पश्चात् आपके द्वारा की गई महाकाली साधना सम्पन्न हुई। इसी साधना काल के मध्य माता महाकाली की स्वप्न में अथवा साक्षात् दर्शन भी आपको प्राप्त होंगे और आप निहाल हो जायेंगे। तत्पश्चात् आप अपने कार्य हेतु या अन्य परमार्थ दुखी लोगों के कार्य हेतु शनिवार के दिन भोजपत्र पर मंत्र लिखकर, सोने, चांदी या तांबे के ताबीज में भरकर, पंचोपचार पूजन कर, 1 माला मंत्र जप कर किसी को प्रदान करेंगे तो उनका कार्य चमत्कारिक रूप से सफल हो जायेगा।

श्री भद्रकाली साधना

भद्रकाली साधना से लाभ—साधको ! श्री भद्रकाली साधना के उपरान्त या तो व्यक्ति के शत्रु रहते ही नहीं और अगर होते हैं, तो वे हमेशा उसके आगे विनीत भाव से रहते हैं, उनकी हर बात स्वीकार करते ही हैं। ऐसे साधक के घर में अटूट सम्पदा, धन-धान्य की प्राप्ति स्वयं ही हो जाती है तथा समाज और देश में मान-प्रतिष्ठा, पद सब कुछ सहज ही प्राप्त हो जाता है। साधक का पारिवारिक जीवन अत्यन्त सुखद हो जाता तथा निश्चय ही पुत्र एवं पौत्रों की प्राप्ति होती है।

साधना विधि—यह साधना किसी भी अमावस्या की रात्रि में आरम्भ करें। भद्रकाली सिंहासन की स्थापना, एवं "षोड़शोपचार पूजन"-"महाकाली साधना" विधि के अनुसार ही सम्पन्न करें। परन्तु "विनियोग" ॠष्यादि न्यास, हृदयादि न्यास, ध्यान मंत्र, जप मंत्र, निम्नलिखित विधि द्वारा सम्पन्न करें। साधको ! यह संक्षिप्त साधना विधि का उल्लेख कर रहा हूँ जो "सिद्ध गुरू कवच" यंत्र सिंहासन पर स्थापित कर, गुरू की आज्ञा प्राप्त कर वैदिक पंडित द्वारा ही सम्पन्न करें। यदि आप बिना गुरू की आज्ञा लिए साधना आरम्भ करेंगे तो उनमें होने वाली हानि का आप स्वयं जिम्मेवार होंगे।

श्री भद्रकाली विनियोग

ॐ अस्य श्री भद्रकाली मंत्रस्य ब्रह्म—ब्रह्मर्षय ऋषयोः गायत्री दीनिच्छंदासि श्री भद्रकाली देवता क्रीं बीजं ह्रीं. शक्ति श्री कीलकं मम् श्री भद्रकाली कृपा प्रसाद सिद्धियर्थे जपे विनियोगः।

श्री भद्रकाली ऋष्यादि न्यास

ब्रह्म—ब्रह्मर्षिभ्य ऋषिभ्यो नमः (शिरसि) गायत्र्यादिच्छंदोभ्यो नमः (मुखे) श्री भद्रकाली देवतायै नमः (हृदये) ह्रीं बीजाय नमः (गुह्ये), ह्रीं शक्त्ये नमः (पादयोः), श्रीं कीलकाय नमः (नाभौ), विनियोगाय नमः (सर्वांगे)

श्री भद्रकाली ध्यान मंत्र

मेधांगी शशिशेखरां त्रिनयनां रक्ताम्बरं बिभ्रतीं।
पाणिभ्यां भयं वरंच विलसद् रक्तारविंद स्थिताम्॥
नृत्यंतं पुरतो निपीय मधुरं माध्वीकमध्यं महाकालं।
वीक्ष्य विकासितान नवरामाद्यां भजे भद्र कालिकाम्॥

श्री भद्रकाली कवच पाठ

नोट—श्री भद्रकाली के ''षोड़शोपचार पूजन'' करने के बाद, हवन से पहले श्री भद्रकाली सिद्धि मंत्र जप आरम्भ करने से पूर्व यह कवच का पाठ अवश्य करें—

इति धात्वा महादेवीं पुनस्तु कवचं पठेत्।
ॐ कालिका घोररूपाद्या सर्वकाम प्रदा शुभा॥
सर्वदेव स्तुतां देवी शत्रु नाशं रूपिणी तथा।
ह्रीं ह्रीं स्वरूपिणी चैव ह्रीं ह्रीं ह्रूं रूपिणी तथा॥
ह्रीं ह्रीं क्षें—क्षें स्वरूपा सा सदा शत्रुन्विदारयेत।
श्रीं ह्रीं ऐं रूपिणी देवी भवबंध विमोचिनी॥
यथा शुंभों हतो दैत्यो निशुंभश्च महासुरः॥

वैरीनाशाय वंदे तां भद्रकालिका शंकर प्रियाम॥
ब्राह्मणी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहिका।
कौमार्येन्दी च चामुंडा खादयंतु मम द्विष।
सुरेश्वरी घोररूपा चंड—मुंड—विनाशिनी।

नोट—महाकाली साधना विधि के समान ही भद्रकाली की साधना सम्पन्न की जाती है। केवल उपरोक्त विनियोग, ऋष्यादि न्यास, ध्यान मंत्र, कवच पाठ व मंत्र का अन्तर है। अब देखें नीचे भद्रकाली साधना का मंत्र स्वरूप—

श्री भद्रकाली साधना मंत्र

"ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि कालिके ह्रीं क्रीं श्रीं स्वाहा।"

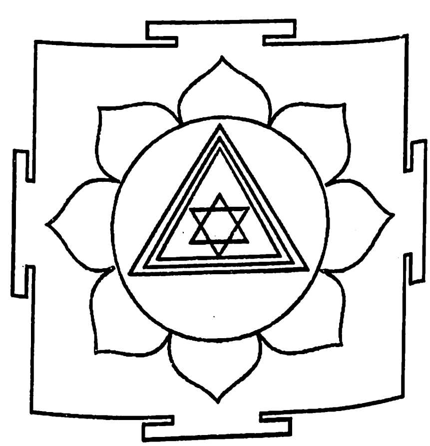
नोट—उपरोक्त मंत्र का 1 (एक) लाख मंत्र जप 31 रात्रि में सम्पन्न पर, हवन, आरती, ब्राह्मण व कन्यावों का भोजन कराकर सम्पन्न करें।

श्री भद्रकाली यंत्र सिद्धि
[शत्रु विनाश हेतु]

साधको ! इस भयानक शत्रु विनाशक श्री भद्रकाली यंत्र की साधना किसी भी शनिवार की रात्रि में आरम्भ कर सकते हैं। यह यंत्र साधना किसी मंदिर में काले कम्बल का आशन बिछाकर, उसपर बैठकर सम्पन्न की जाती है। साधना रात्रि में ठीक बारह बजे आरम्भ करें और तीन बजे रात्रि को समाप्त करें। यह साधना 41 रात्रि में सम्पन्न होती है।

शनिवार की रात्रि में बारह बजे तक स्नान से पवित्र होकर काला वस्त्र धारण करें और श्मशान भूमि जावें। श्मशान भूमि में चित्ता की राख पर काले कम्बल का आसन बिछा दें। सामने माता काली की तस्वीर रखें। उनके पास पाँच सुगन्धित अगरबत्ती जलावें। इसके पश्चात् मुर्दे की खोपड़ी या काले रंग से रंगा कटोरी में चित्ता की राख से स्याही तैयार कर, लोहे की कलम से नीचे वर्णित यंत्र का निर्माण करें।

[श्री भद्रकाली यंत्र स्वरूप]



निर्मित यंत्र को महाकाली तस्वीर के समक्ष रख दें। इसके बाद नीचे लिखित मंत्र का जप आरम्भ कर दें–

यंत्र सिद्धि हेतु मंत्र

"मुंडमाला वृतांगी च सर्वतः पातु माम सदा। ह्रीं ह्रीं कालिके घोरंदष्ट्रे रुधिर प्रिये रुधिर पूर्ण वक्त्रे रुधिरावृत्तस्तनि मम शत्रुन खादय हिंसय हिंसय मारय भिन्दि–भिन्दि छिन्धि छिन्दि उच्चाटय उच्चाटय द्राव्य शोष्य शोष्य स्वाहा–स्वाहा।"

अन्तिम 41 रात्रि में मंत्र जप सम्पन्न होने के बाद 42 वें दिन यंत्र को बहती दरिया में प्रेम भाव से विसर्जित कर दें, तो आपके शत्रु का विनाश हो जायेगा।

यह साधना सम्पन्न करने के बाद शत्रु पिड़ित किसी भी दुखी व्यक्ति को स्वयं शनिवार की रात्रि में घर में ही यंत्र निर्माण कर, यंत्र का पंचोपचार पूजन कर, ऊपर लिखित मंत्र का एक माला जप कर प्रदान कर देंगे तो उनके शत्रु का भी विनाश हो जायेगा।

परन्तु सावधान ! यह यंत्र साधना सिद्ध गुरू की आज्ञा के बिना और "सिद्ध गुरू कवच यंत्र" धारण किए बिना भूल से भी न करें, ऐसा करेंगे तो प्राण हानि का जिम्मेवार तांत्रिक लेखक या प्रकाशक नहीं होगा।

श्री श्यामा काली साधना

श्यामा काली साधना से लाभ

आद्या शक्ति महाकाली के "श्यामा काली" स्वरूप की साधना करने वाले साधक के हाथ में किसी का भी जीवन व मृत्यु प्रदान करने की क्षमता हो जाती है तथा वह अनेक प्रकार के चमत्कारों को जन्म देने वाला हो जाता है।

साधना विधि–यह साधना दिवाली की रात्रि में आरम्भ करें। रात्रिकाल ठीक बारह बजे घर के एकान्त कमरे में दक्षिण दिशा में आम लकड़ी से बने सिंहासन स्थापित करें। सिंहासन पर काला वस्त्र बिछा दें और स्वयं भी काला वस्त्र ही धारण करें। सिंहासन के ऊपर माता काली की तस्वीर स्थापित करें। तस्वीर के आगे तांबे के प्लेट में–"सिद्ध गुरू कवच यंत्र" स्थापित करें। इसके पश्चात् सुगन्धित अगरबत्ती और सिंहासन के चारों कोणों में चौमुखी दीपक (तिल के तेल से) जगावें।

इसके पश्चात् दाहिने हाथ की अंजुली में जल लेकर निम्नलिखित मंत्र पढ़कर शरीर को पवित्र करें। मंत्र समाप्ति के बाद अंजुली का जल अपने शरीर पर छिड़क लें।

शरीर पवित्र करने का मंत्र

ॐ अपवित्र। पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत पुण्डरी काक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचि॥
ॐ पुण्डरी काक्ष पुनातु॥

नोट—अब नीचे लिखित मंत्र का 21 बार जप करें—

"ॐ गं गणपतये श्री श्यामा काली सिद्धि देहु नमो नमः"।

इसके पश्चात् "गुरू यंत्र" पर जल, अक्षत, चन्दन, बिल्वपत्र व पुष्प चढ़ावें। तत्पश्चात् गुरू यंत्र को नमस्कार करें। अब दोनों हाथ जोड़कर विनियोग मंत्र पढ़ें—

श्री श्यामा काली विनियोग मंत्र

ॐ अस्य श्री श्यामा कालिका मंत्रस्य भैरव ऋषिः, उष्णिक्छंदः, श्यामा कालिका देवता, ह्रीं, बीजं, हुं शक्ति, क्रीं कीलकं मम अभिष्ट सिद्धयर्थें जपे विनियोगः।

नोट—अब "ऋष्यादि न्यास" करन्यास, "हृद्यादि न्यास" विधि सम्पन्न करें। [न्यास करने की विधि महाकाली साधना शीर्षक में वर्णित है।]

श्री श्यामा काली ऋष्यादि न्यास

ॐ भैरव ऋष्ये नम—सिर स्पर्श करें।

ॐ उष्णिक छंदसे नमः—मुख स्पर्श करें।

ॐ श्यामा कालिका देवतायै नमः—हृदय स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं बीजाय नमः—गुदा का स्पर्श करें।

ॐ हुं शक्त्ये नमः—दोनों तलवे का स्पर्श करें।

ॐ क्रीं कीलकाय नमः—नाभि स्पर्श करें।

ॐ विनियोग नमः—सर्वांग शरीर का स्पर्श करें।

श्री श्यामा काली "करन्यास"

"ॐ क्रां अंगुष्ठाय नमः"—मंत्र बोलकर तर्जनी को मोड़कर अंगूठे की जड़ से जहां मंगल का क्षेत्र है, स्पर्श करें।

"ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः"—मंत्र उच्चारण करते हुए अंगूठे की नोक से तर्जनी का छोर का स्पर्श करें।

"ॐ क्रुं मध्यमाभ्यां नमः"—मंत्र उच्चारण करते हुए अंगूठे से मध्यमा के अन्तिम भाग का स्पर्श करें।

"ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः"—मंत्रोच्चारण करते हुए अनामिका का स्पर्श करें।

"ॐ क्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः"—मत्रोच्चारण करते हुए कनिष्ठका उँगली के अन्तिम भाग के साथ अंगूठे की नोक का स्पर्श करें।

"ॐ क्रः करतल पृष्टाभ्यां नमः"—यह मंत्र पढ़ते हुए दोनों हाथों की हथेलियों को एक दूसरे के ऊपर नीचे दो बार घुमावें।

नोट—अब हृदयादि न्यास क्रिया सम्पन्न करें। पद्मासन की मुद्रा में बांया हाथ घुटनों पर रखे हुए दाहिने हाथ की पांचों उँगलियों से निम्नलिखित अंगों का स्पर्श करें—

श्री श्यामा काली हृद्यादि न्यास

ॐ क्रां हृद्याय नमः, ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा ॐ क्रूं शिखाये वषट् ॐ क्रैं कवचाय हुम, ॐ क्रौं नेत्रयोय वौषट, ॐ क्रः अस्त्राय फट्।

नोट–अब सिंहासन पर स्थापित "गुरू कवच यंत्र" की कवच प्रार्थना हाथ जोड़कर करें और यंत्र में श्री श्यामाकाली के स्वरूप का ध्यान, करें।

श्री श्यामा काली कवच पाठ

शिरो में कालिका पातु क्रींकार काक्षरी परा।
क्रीं क्रीं क्रीं मे ललांट च कालिका खड़ग धारिणी।
हुं हुं पातु नेत्रयुग्मं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुतिं मम।
श्यामा कालिके पातु घ्राण युग्मं महेश्वरि॥
क्रीं क्रीं क्रीं रसना पातु हुं हुं पातु कपोलकम्।
वदनं शकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहा स्वरूपिणी॥
द्वादश विंशत्यक्षरी स्कन्धी महाविद्या सुख प्रदा।
खड़ग मुंडधरा काली सर्वांग मभितोऽवतु॥
क्रीं हुं ह्रीं त्र्यक्षरी पातु चामुण्डा ह्रदय मम।
ऐं हुं ॐ ऐं स्तनद्वयं ह्रीं फट् स्वाहा ककुत्स्थलं॥
अष्टाक्षरी महाविद्या भुजौ पातु सकर्तृका।
क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं करौ पातु षडक्षरी मम॥
क्रीं नाभिमध्य देशं च दक्षिणे कालिके ऽवतु।
क्रीं स्वाहा पातुपृष्ठंतु कालिका सा दशाक्षरी॥
ह्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके हुं ह्रीं पातु कटिद्वयं।
काली दशाक्षरी विद्या स्वाहा पातूरूयुग्मकम्॥
ॐ ह्रीं क्रीं में स्वाहा पातु कालिका जानुनी मम।
काली हन्नामविद्येयं चतुर्षठी फलप्रदा॥
क्रीं ह्रीं ह्रीं पातु गुल्फं श्यामा कालिका वतु।
क्रीं हुं ह्रीं स्वाहा पदं पातु चतुर्दशाक्षरी मम॥
खड़ग मुण्ड धरा काली वरदा भयहारिणी।
विद्याभिः सकलाभिः सा सर्वान्ग मभितोऽवतु॥
काली कपालिनी कुल्ला कुरूकुल्ला विरोधिनी।
विप्र चिंता तथोग्रोग्र प्रभा दीप्ताधनस्विषा॥
नीला धना बालिका च माता मुद्रामित प्रभा।
एता सर्वाः खड़गधरा मुंडमाला विभूषिता॥
रक्षेतु मां दिक्षुदेवी ब्राह्मणी नारायणी तथा।
माहेश्वरी य चामुण्डा कौमारी चौपराजिता।
बाराही नारसिंही च स्र्वाश्चामित भूषणा।
रक्षंतु स्वायुधै दिक्षु मां विदिक्षु यथा तथा॥

नोट–अब मातेश्वरी श्यामा काली का हाथ जोड़कर, निम्न मंत्र उच्चारण करते हुए ध्यान वन्दना पाठ करें–

श्री श्यामा काली ध्यान वन्दना पाठ

करालवदनां गोरा मुक्तकेशी चतुर्भुजाम्।
कालिकां श्यामा दिव्यां मुण्डमाला विभूषिताम्॥
सद्याश्छिन्न शिरः खड्गवामोधूवधिः करांबुजाम्।
अभयं वरदं चैव दक्षिणोर्ध्व पाणिकाम्॥
महामेघ प्रभां श्यामां तथा चैव दिंगबराम्।
कंठावसक्त मुंडाली गलद्रुधिर चर्चिताम्॥
कर्णावतं सतानीत शवयुग्मं भयानकाम्।
घोर दष्ट्रा करालास्यां पीनोन्नत पयोधराम्॥
बालार्कमंडलाकारां लोचीन त्रतयान्विताम्।
शवानां करसंघातेः कृतकांची हसन्मुखीम्॥
सूक्क द्वयगल दरक्त धारा विस्फरि तानताम्।
घोररूपा महारौद्रीं श्मशानालय वासिनिम्।
दंतुरां दक्षिणा व्यापि मुक्तलंबक चोच्चयाम्।
शिवामिर्घोर रूपाभिश्च तुर्दिक्ष समन्निवताम्॥
महाकालेन सार्धोध्वमु तुर्दिक्ष समन्निवताम्।
महाकालेन सार्धोध्वमु पयिष्टर तातुराम्।
सुख प्रसन्न वदना स्मेरानन सरोरूहाम्।
एवं संचितये काली सर्वसिद्धि समुद्धिदाम्॥

नोट—अब मातेश्वरी श्यामा काली की सिद्धि हेतु रूद्राक्ष की माला में मंत्र जप आरम्भ करें। ग्यारह माला या 21 माला जप नित्य रात्रि तब तक करते रहें जब तक दो लाख मंत्र जप पूर्ण न हो जाये।

श्री श्यामा काली सिद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं पमेश्वरि श्यामा कालिके ह्रीं श्रीं क्रीं स्वाहा।

नोट—मंत्र जप समाप्ति होने वाली रात्रि के दूसरे दिन की रात्रि में आम की लकड़ी पर आग जलाकर उपरोक्त मंत्र उच्चारण करते हुए, हवन सामग्री से 21 माला आहुति डालें। तत्पश्चात् माता श्यामा काली की आरती उतारें। फिर 5 ब्राह्मण एवं 11 कुमारी कन्यावों को मीठा भोजन करावें। आपकी साधना सम्पन्न हुई।

अब आप किसी भी संभव या असम्भव कार्य का मन में संकल्प कर, शनिवार के दिन माता काली तस्वीर के समक्ष धूप-दीप जगाकर, एक माला मंत्र जप करेंगे तो वह कार्य चमत्कारिक ढंग से पूर्ण हो जायेगा। करके देखें, अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे, यह मेरी पूर्ण रिसर्च साधना है।

श्री श्यामा काली यंत्र सिद्धि

श्री श्यामा काली यंत्र सिद्धि व धारण करने से लाभ

1. इस महायंत्र को गले में धारण कर किसी से भी मिलने जाएं, और कोई भी कार्य कहें, तो सामने वाला तुरन्त कार्य कर देता है।

2. जिस लड़के-लड़की के विवाह में विलम्ब हो रहा हो, उसे यह यंत्र धारण करने से तीन महीने के अन्दर विवाह हो जाता है और दाम्पत्य जीवन सदैव सुखी रहता है।

3. यदि इस यंत्रराज को धारण कर किसी अधिकारी या बहुत बड़े व्यापारी के सांमने जाकर अपनी इच्छा प्रकट करें, अथवा प्रमोशन, स्थान्तरण या कोई एजेन्सी प्राप्त करने की बात कहें, तो वह निश्चय ही स्वीकार कर ली जाती है।

4. यदि यंत्रराज को जल से धोकर, वह जल किसी को भी पिला देंगे तो आपके वश में हो जायेगा, (या हो जायेगी) यह अद्‌भुत प्रयोग है और तुरन्त इसका प्रभाव होता है।

5. यह दिव्य यंत्र धारण करने से दुकान या फैक्ट्री अथवा घर के ऊपर किए गये तांत्रिक प्रयोग नष्ट हो जाता है और व्यापार में आश्चर्यजनक वृद्धि होने लगती है।

6. यदि यंत्र धोकर जल रोगी को पिलाया जाये तो वह रोग मुक्त हो जाता है।

7. यह दिव्य यंत्र को धोकर, धोए हुए जल में 101 काली मिर्च डालकर शत्रु के घर आंगन में उड़ेल दिया जाये, या जमीन में गाड़ दिया जाये तो उसका विनाश हो जाता है.

8. यदि इस दिव्य यंत्र को धोकर, रजस्वला समय में स्त्री को तीन दिन तक पिलायी जाये तो वह अवश्य गर्भ धारण करती है और पुत्र ही होता है।

साधको ! मैंने इस यंत्र के प्रयोग को कई स्थानों पर कई प्रकार से आजमाया है, कितने दुःखी व्यक्ति को यह दिव्य यंत्र सिद्ध करके दिया है और इस कलियुग में भी यह दिव्य महान यंत्रराज का प्रभाव देखकर मैं दंग रह गया हूँ। इस महायंत्र की साधना विधि भी अत्यन्त सरल है।

तांत्रिक ग्रन्थों में इसके बारे में बताया गया है-

श्री श्यामा साधना यंत्रः न होमो न च तर्पणम्।
यन्त्र रचनं स्मरण देवि सिद्धि स्यात यद्धिच्छति हि तद् भवेत॥
दशावृत्या तथा विष्णु रूद्र शक्ति र्भवेदिह
सार्व भौमः शतावृत्या भवत्येव न संशयः॥

अर्थात्-यह श्यामा काली यंत्र साधना विश्व की दुर्लभ व सरल साधना है। इसके प्रयोग में होम या तर्पण करने की जरूरत नहीं होती। केवल इस यंत्रराज का निर्माण व मंत्र जप से ही श्रेष्ठ साधक की प्रत्येक इच्छा पूरी हो जाती है।

श्री श्यामा काली यंत्र निर्माण व साधना विधि

इस महायंत्र का निर्माण किसी भी शनिवार की रात्रि में [शुभ मुर्हुत व शुभ नक्षत्र देखकर] आरम्भ करें। यह यंत्र साधना 21 दिन (रात्रि) की है।

रात्रि के समय-ठीक बारह बजे स्नान से पवित्र हो जावें। एकान्त व स्वच्छ कमरे में उत्तर दिशा से दक्षिण मुख आम लकड़ी से बने सिंहासन स्थापित करें, सिंहासन पर नीला वस्त्र बिछावें, सिंहासन भी नीले रंग से रंगा होना चाहिए। उसपर माता काली की तस्वीर रखें और तस्वीर के सामने तांबे के प्लेट में-सिद्ध गुरू से प्राप्त किया-"गुरू कवच यंत्र" लाल कपड़े में लपेट कर रखें। तत्पश्चात् धूप एवं देशी घी का दीपक जगावें। स्वयं नीले रंग का वस्त्र धारण कर नीले कम्बल के आसन पर सिंहासन के सामने उत्तर मुख होकर बैठें।

श्रद्धा पूर्वक 11 बार "श्री गणेशाय नमः" मंत्र का जप करें। इसके पश्चात् "ॐ गुरूवे नमः" मंत्र का जप करते हुए यंत्र के ऊपर गंगाजल, अक्षत, चन्दन, बिल्वपत्र व पुष्प चढ़ावें। सिंहासन पर 5 लड्डू अलग प्लेट में नेवैद्य रखें। इसके पश्चात् नीचे लिखित श्री श्यामा काली "कवच" का पाठ करें-

श्री गणेशाय नमः

कैलाश शिखरासीनं शंकर वरदं शिवम्।
देवी पप्रच्छ सर्वज्ञं देवदेवं महेश्वरम्॥ १॥

[देव्यु वाच]

भगवन देवदेवेशं देवानां मोक्षद प्रभो।
प्रब्रूही मे महाभाग गोप्यं यद्यपि च प्रभो॥ २॥
शत्रूणां येन नाशः स्यादात्मनो रक्षणं भवेत्।
परमैश्वर्य मतुलं लभेद् येन हि तं वद॥ ३॥

[भैरव उवाच]

वक्ष्यामि ते महादेवी सर्वधर्म्म हिताय च।
अद्भुतं कवचं देव्यास्सर्व रक्षाकरं नृणाम्॥ ४॥
सर्वारिष्ट प्रशमनं सर्वोपद्र वनाशनम।
सुखदं-भोगदं चैव वश्याकर्षणम द्भुतम॥ ५॥
शत्रूणां संत्रयकरं सर्वब्याधि निवारणम।
दुःखिनो ज्वरिणश्चैव स्वाभीष्ट प्रहता स्तथा॥ ६॥
भोग-मोक्ष प्रदं चैव कालिका कवचं पठेत्।
ध्यायेत श्यामा काली महामाया त्रिनेत्रां बहुरूपिणमि।
चतुर्भुजां ललज्जिह्वां पूर्ण चन्द्र निभाननाम्॥ ७॥

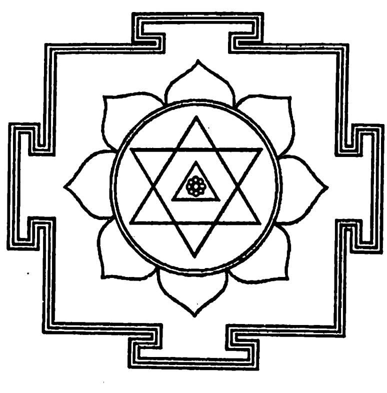
नीलोत्पलदल प्रख्यां शत्रुसंघ विदारिणीम॥ ८॥
नरमुण्डं तथा खड्ंग कमलं च वरं तथा।
बिभ्राणां रक्तवसनां दंष्ट्रया घोर रूपिणीम॥ ९॥
अट्टाट्हास—निरतां सर्वदा च दिगम्बराम्।
शवावासन स्थितां देवीं मुण्ड माला विभूषिताम्॥ १०॥
इति ध्यात्वा महादेवीं पुनस्तु कवचं पठेत्।
ॐ कालिका घोररूपाद्या सर्वकाम प्रदा शुभा॥ ११॥
ह्रीं—ह्रीं स्वरूपिणीं चैव ह्रीं ह्रीं हूं रूपिणी तथा।
सर्वदेव स्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे॥ १२॥
ह्रीं ह्रीं क्षें क्षें स्वरूपा सा सदा शत्रून्विदारयेत।
श्रीं ह्रीं ऐं रूपिणी देवी भवबन्ध विमोचिनी॥ १३॥
हसकल ह्रीं ह्रीं रिपून सा हरतु देवी सर्वदा।
यथा शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुरः॥ १४॥
वैरिनाशाय वन्दे तां कालिकां शंकर प्रियाम।
ब्राह्मणी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहकि॥ १५॥
कौमार्येन्द्री च चामुण्डा खादयन्त मम द्विषः।
सुरेश्वरी घोर रूपा चण्ड—मुण्ड विनाशिनी॥ १६॥

नोट—अब रक्तचन्दन की स्हायी से या लाल स्याही से, अनार की कलम द्वारा भोजपत्र के ऊपर निम्नरचित यंत्र निर्माण करें। निर्मित यंत्र को गुरू कवच यंत्र वाले प्लेट में रख दें। इसके पश्चात् रूद्राक्ष की माला से नीचे लिखित मंत्र का पाठ (जप) आरम्भ करें—

यंत्र साधना हेतु श्यामा महाकाली मंत्र—

"ॐ क्रीं ह्रूं ह्रीं मातेश्वरी प्रगति सफलता देहु नमः।"

[श्री श्यामा काली यंत्र स्वरूप]



21 रात्रि तक लगातार 11 माला जप किया करें। 21 वें रात्रि को जप समाप्त होने के बाद यंत्र की आरती करें। स्वयं निर्मित यंत्र को लाल डोरे में डालकर गले में धारण कर लें। गुरू कवच यंत्र को बहती दरिया में विसर्जित कर दें। आपके सभी मनोरथ पूर्ण हो जायेंगे। इसके बाद किसी अन्य दुःखी मानव को स्वयं शनिवार की रात्रि में यंत्र निर्माण कर एक माला जप पूर्ण कर प्रदान करेंगे तो उन्हें भी समस्त प्रगति व सफलता की प्राप्ति हो जायेगी। यह अत्यन्त ही प्रभावी प्रयोग हैं, जिसका तुरन्त लाभ प्राप्त होता है।

पाठको! "महाकाली उपासना" पर आधारित अति विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने के लिए ***अमित पाकेट बुक्स*** जालंधर सिटी से प्रकाशित हमारी लिखी "काली उपासना" पढ़कर लाभ उठावें।

श्री मंगला काली साधना

श्री मंगला काली सिद्धि से लाभ

इंटरब्यू, परिक्षा में सफलता, नौकरी प्राप्ति, व्यापार में प्रगति व सम्पर्ण सफलताओं की प्राप्ति होती है।

साधना विधि

श्री मंगलाकारी सिद्धि का विधान वास्तव में महाकाली साधना का ही स्वरूप है और यह साधना करने से "आद्या शक्ति" के समस्त स्वरूपों की साधना स्वतः ही हो जाती है। यह नौ दिन की साधना है। आश्विन या चैत्र मास के प्रथम नवरात्री वाले दिन से नवम नवरात्रि के दिन तक में यह साधना सम्पन्न किया जा सकता है।

निर्धारित दिन साधक प्रातः काल स्नानादि से पवित्र होकर (सात बजे के अन्दर) लाल वस्त्र धारण कर, लाल रंग के आसन पर पुर्वभिमुख होकर बैठे। सामने आम लकड़ी के सिंहासन पर लाल वस्त्र बिछाकर महाकाली की तस्वीर लगावे। इसके पश्चात् सिद्ध गुरू से प्राप्त किया-"सिद्ध गुरू कवच यंत्र" कांशे के प्लेट में रखकर माता काली तस्वीर के समक्ष रखें। तत्पश्चात् वैदिक ब्राह्मण द्वारा सम्पूर्ण षोड़शोपचार पूजन [जो महाकाली साधना शीर्षक में लिखा है] सम्पन्न करें, परन्तु इस महासाधना में विनियोग, ऋृष्यादि न्यास, हृद्यादि न्यास निम्न विधि से सम्पन्न करें।

श्री मंगला काली विनियोग

साधको! विनियोग व न्यास करने की विधि श्री महाकाली साधना एवं श्री श्यामा काली साधना में लिखित अनुसार ही प्रयोग करें-

ॐ अस्य श्री मंगला काली मंत्रस्य ब्रह्म ऋषिः, गायत्री छन्दः, मातृका मंगला काली देवता, हेम बीजानि, स्वराः शक्तयः, सर्ग कीलकं श्री मंगला काली न्यासे बिनि योगः।

श्री मंगला काली ऋष्यादि न्यास

शिरसि ॐ ब्रह्मणे ऋषये नमः। मुखे गायत्री छन्दसे नमः। हृदये श्री मंगला काली देवतायै नमः। गुह्ये ॐ व्यञ्जेभ्यो बीजेभ्यो नमः। पादयोः ॐ स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः। सर्वांगे ॐ सर्गाय कीलकाय नमः।

श्री मंगला काली करन्यास

अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः।
इं चं छं जं झं ञं ई तर्जनीभ्यां नमः।
उं टं ठं डं ढं णं ऊँ मध्यमाभ्यां वषट्।
एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः।
ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठाभ्यां वौषट्।
अं यं रं लं वं शं सं हं क्षं त्रं अं अः करपृष्ठाभ्यां फट्।

नोट—साधको! सम्पूर्ण षोड़शोपचार पूजन सम्पन्न होने के बाद नीचे लिखित "मंगला काली स्तुति" हाथ जोड़कर करें। इसके पश्चात् माला जप आरम्भ करें।

श्री मंगला काली स्तुति

ॐ काली कराली च मनोजका च,
सुलोहिता या च सुधूम्र वर्णा।
स्फुलिंगिनी विश्व रूपी च देवीं,
लोलाय माना इति सप्त ह्विा॥
खड़्ग चक्र गदेशु चापं परिघां शूलं भुषिंडी शिरः,
शंखं संदधतीं करैः त्रिनयनां सर्वांग भूषावताम्।
नीलाश्मद्युति मासपांदस शकां सेवै महाकालिकां,
यामस्तौ स्वपितो हरौः कमलजो हंतुं मधुकैटभम्॥
जयंती मंगला काली भद्र काली कपालिनी,
दुर्गा शिवा क्षमा धात्री स्वाहा स्वधानमोस्तुते।
प्रत्यालीढ पदांपिर्त दध्रिस्व हृद घोराट हासापरा,
खड़गेंदी वर कत्रीं खर्पर भुजा हुंकार बीजोद्भवा॥
सर्वानील विशाल पिंगल जटाजूटेक नागैर्युता।
जाड्यंतस्य कपाल कर्त्रृ जगतां हंत्युग्रतारा स्वयम्॥

नोट—अब रूद्राक्ष की माला से 21 माला नीचे लिखित मंत्र का जप करें—

श्री मंगला काली साधना मंत्र

"ॐ क्रीं नमः"

नोट–यह माता मंगला काली का मूल एकाक्षरी अति प्रभावशाली मंत्र है। 21 वें दिन मंत्र जप समाप्त करने के पश्चात ब्राह्मण पंडित के द्वारा 21 माला मंत्र जप करते हुए हवन में आहुति डालें। हवन के पश्चात आरती व विसर्जन कर्म सम्पन्न करें। इस साधना में 21 दिन लगातार 21 माला जप संख्या मंत्र जप करने का विधान है। उपरोक्त विधि सम्पन्न करने के बाद सिद्धि की साधना पूर्ण हो जाती है। यदि साधना करने के बाद आप किसी भी दुखी व्यक्ति को 1 माला मंत्र जप करते हुए जल तैयार कर देंगे और वह 41 दिन तक उस जल का चरणामृत ग्रहण करेगा तो उसके सभी कार्य पूर्ण हो जायेंगे।

श्री मंगला काली यंत्र साधना

श्री मंगला काली यंत्र साधना से लाभ

1. यह महायंत्र सिद्ध कर लेने से साधक सर्वत्र कार्य में अजेय हो जाता है और फिर उसके सामने सभी सफलताएँ चरण चूमती हैं।

2. साधक का व्यक्तित्व अत्यधिक आकर्षक एवं भव्य हो जाता है।

3. साधक के इर्द–गिर्द एक तेजयुक्त आभामंडल निर्मित हो जाता है, जिससे उसके आस–पास के लोग स्वतः उसकी ओर आकर्षित होते हैं और उसकी हर आज्ञा का ना–नुच किए बिना पालन करते हैं।

4. यह दिव्य यंत्र साधना सिद्ध होते ही या यंत्र धारण करते ही व्यकि त की दरिद्रता, रोग, शत्रुभय, ऋृण आदि की स्थिति स्वतः ही नष्ट हो जाती है।

5. व्यक्ति के घर में निरन्तर धन का आगमन होता ही रहता है।

6. नौकरी, इंटरव्यू, परीक्षा में निश्चित सफलता मिलती है।

7. साधक की व्यापार में चमत्कारिक प्रगति होने लगती है, अगर वह नौकरी पेशा वाला हो, तो उसकी पदोन्नति शीघ्र होती है।

8. इस यंत्र साधना के प्रभाव से घर में अगर कोई पहले तांत्रिक प्रयोग (अनिष्टकारी) किया गया हो तो वह नष्ट हो जाता है।

9. साधक की जन्मकुंडली में निर्मित दुर्योग फल हीन हो जाते हैं, अगर दुघर्टना एवं अकाल मृत्यु का योग हो तो वह भी अल्प हो जाता है, एक प्रकार से नष्ट ही हो जाता है।

10. साधक जिस कार्य में हाथ डालता है, उसमें विजय ही प्राप्त करता है।

11. साधक समाज में सम्मानीय एवं पूजनीय हो जाता है।

12. उच्च कोटि के मंत्रीगण एवं अधिकारी भी उसकी बात को मस्तक पर धारण करते हैं।

13. यंत्र धारण कर्त्ता सभी का प्रिय हो जाता है। जीवन में उसे किसी चीज का अभाव नहीं रहता।

14. साधक का पारीवारिक जीवन अत्यन्त सुखी हो जाता है, यदि कोई क्लेश व्याप्त हो तो वह भी समाप्त हो जाता है।

15. साधक की समस्त इच्छाएँ और कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं और वह स्वयं भी आश्चर्य-चकित हो जाता है।

ऊपर बतायी गयी स्थितियां तो मात्र सूर्य को रोशनी दिखाने के समान है। वास्तव में तो वह अपने आप में ही अद्वितीय तेजस्वी युग पुरुष बन जाता है साथ ही साथ वह समस्त ज्ञान-विज्ञान में पारंगत हो वर्तमान पीढ़ी का मार्ग दर्शन करने में सक्षम हो जाता है। उसे दुनियाँ दिव्य पुरूष की संज्ञा से विभूषित कर आदर भाव से देखती है।

यंत्र साधना विधि

इस मंगला काली दिव्य यंत्र की साधना अमावस्या की रात्रि में बारह बजे आरम्भ करें। स्नानादि से पवित्र होकर, दक्षिण मुख आम लकड़ी का सिंहासन स्थापित कर, उस पर लाल वस्त्र बिछाकर माता काली की तस्वीर स्थापित करें। इसके बाद सिद्ध गुरू से प्राप्त किया-"गुरू कवच यंत्र" ताबें के प्लेट में तस्वीर के समक्ष लाल कपड़े में लपेट कर रखें। धूप और शुद्ध घी का दीपक जगावें, इसके पश्चात् कम्बल के आसन पर बैठकर निम्न स्त्रोत द्वारा महाकाली का ध्यान करें-

श्री मंगला काली ध्यान स्त्रोत

[श्री शिव उवाच]

महाकौतूहल स्तोत्रं हृद्‌यारण्यं महोत्तमम।
श्रृणु देवी? महागोप्यं मंगलायाः सुगोपितम्॥
अवाच्चयामपि वक्षयामि तव प्रीत्या प्रकाशितम्।
अन्येभ्यः कुरु गोप्यं च सत्यं च शैलजे।

हिन्दी अनुवाद-भगवान शिव बोले-हे देवी पार्वती! अति गोपनीय से महागोपनीय, चमत्कारी मंगला काली स्तोत्र आज तुम श्रवण करो। आद्या महाशक्ति स्वरूपा मंगला काली ने अब कब इसे गुप्त रखा था। तुम्हारे स्नेह के कारण यह स्तोत्र केवल तुम्हारे लिए ही सुना रहा हूँ। हे देवी! तुम यह स्तोत्र किसी के पास उजागर न करना।

[श्लोक]

पुरा प्रजापतेः शीर्षश्छेदनं कृत वाहनम्।
ब्रह्म हत्या कृतैः पापै भैरवत्यं ममागतम्॥
ब्रह्म हत्या विनाशाय कृतं स्तोत्रं मया प्रिये।
कृत्वा विनाशंक स्तोत्र ब्रह्म हत्या पहारकम्॥

हिन्दी अनुवाद-हे देवी! सृष्टि के पूर्व जब मैने ब्रह्मा का शिर विच्छेद किया था

तो हमें ब्रह्म हत्या का पाप लग गया और मैं भैरव रूप में परिणत हो गया। अतः ब्रह्म हत्या दोष से मुक्त होने हेतु सर्व प्रथम मैने ही किया था। यह स्तोत्र आरम्भ करने से पूर्व साधक सर्वप्रथम आद्या शक्ति मंगला काली का ध्यान करे, फिर सतोत्र का पाठ करे, तो वह समस्त सिद्धि और समस्त ऐश्वयों का मालिक हो जायेगा तथा इस लोक में समस्त सुख भोग कर मोक्ष प्राप्त करेगा।

श्री मंगला काली ध्यान मंत्र

ध्यायेत मंगला काली महामाया त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
चतुर्भुजां ललज्जिहवां पूर्ण चन्द्र निभाननाम्॥
निलोत्पल दल श्यामां शत्रु संघ विदारिणीम्।
निर्भयां रक्त बदनां दंष्ट्राली घोर रूपिणिम्॥
साट्टहासा ननां देवी सर्वदां च दिगम्बरीम्।
शवासन स्थितां काली मुण्डमाला विभूषिताम्॥
नरमुंड तथा खड्गं कमलं च वर तथा।
इति ध्यात्वा मंगला काली ततस्तु कवचं पठेत्॥

हिन्दी अनुवाद–तीन नेत्रों वाली, बहुरूप धारिणी, चतुर्भुजी, चन्द्रमुखी, लपलपाती जिह्वा वाली महामाया मंगला काली का ध्यान करता हूँ। नील कमल दल के समान कृष्ण वर्ण वाली, शत्रु समुदाय की विनाशिनी, नरमुंड धारिणी तथा खड्ग, कमल व मुद्रा धारिणी, निडर, रक्त से सने मुख वाली, बड़े–बड़े दांतों वाली, निरन्तर अट्टहास करने वाली, दिगम्बर स्वरूपिणी, शव के आसन पर विराजमान, मुंड मालाओं से सुशोभित–ऐसी मंगला काली का मैं ध्यान करता हूँ।

[श्लोक][मूल स्तोत्र]

ॐ कालिका घोररूपाद्या सर्वकाम फलप्रदा।
सर्व देव स्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे॥
ह्रीं ह्रीं स्वरूपिणी श्रेष्ठा त्रिषु लोकेषु दुर्लभा।
तव स्नेहान् मयाख्यातं न देयं यस्य कस्यचित्॥
अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि निशामय परात्मिके।
यस्य विज्ञान मात्रेण जीवन मुक्तों भविष्यति॥
नाग यज्ञोपवीतां च चन्द्रार्द्ध कृत शेखराम्।
जटाजूटां च सञ्चिन्त्य महाकाल समीपगाम्॥
एवं न्यासादयः सर्वे ये प्रकुर्वन्ति मानवाः।
प्राप्नुवन्ति सिद्धि मोक्षं सत्यं-सत्यं वरानने॥

काली मंगला काली च कृष्ण रूपा परात्मिका।
मुण्डमाली विशालाक्षी सृष्टि संहार कारिका॥
स्थिति रूपा महामाया योगनिन्द्रा भगात्मिका।
भागसर्पीः पानरता भगोद्योता भगांगजा॥
आद्या सदा नवा घोरा महातेजाः करालिका।
प्रेतवाहा सिद्धि लक्ष्मी अनिरूद्धा सरस्वती॥
एतानि नाम माल्यानि ये पठन्ति दिने—दिने।
तेषां दासस्य द्रासोऽय दासोऽहं सत्यं-सत्यं महेश्वरि।
काली कालहरां देवी कंकाल बीज रूपिणीम।
काक रूपां कलातीतां कालिकां मंगला भजे॥
कुण्डगोल प्रियां देवी स्वयं कुसुमेरताम्।
रतिप्रियां महारौद्री कालिकां प्रणभाम्य हम्॥

हिन्दी अनुवाद—भगवान शिव बोले—हे उमा! शत्रुओं का नाश करने वाली, समस्त कामना पूर्ण करने वाली मंगला काली ह्रीं ह्रीं स्वरूपा, सर्वोत्तमा कठिन प्रयास से ही सुलभ होने वाली हैं। हे पार्वती! उनका यह सर्वोत्तम स्तोत्र तुम्हारे प्रति होने के कारण ही सुना रहा हूँ। हे प्रिय! मंगला काली का ध्यान करने से प्राणी समस्त भव बंधन से मुक्त होकर समस्त कामना प्राप्त कर लेता है, उनका ध्यान इस प्रकार करना चाहिए।

"आद्या मंगला काली सर्पों का जनेऊ धारण कर रखी हैं, शीश पर पूर्णिमा का चन्द्रमा है तथा जटाओं से युक्त "महाकाल" के निकट वह स्थित हैं। जो इस प्रकार ध्यान करता है, वह निश्चित ही सिद्धि, मोक्ष और समस्त कामनावों की प्राप्ति कर लेता है।"

जो उन देवी के निम्न नामों का जपन नित्य ही करता है, मैं भी उसके वशीभूत हो जाता हूं। वो नाम हैं—महाकाली, काली, मंगला काली, दक्षिणा काली, कृष्ण रूपा परात्मिका, विशालाक्षी, सृष्टि संहारिका, स्थिति रूपा, महामाया, योगनिन्द्रा, भगात्मिका, भागसर्पी, पानरता, भगांगजा, भगोद्योता, आद्या सदानवा, घोरा, महातेजा, कुरालिका, प्रेतवाहा, सिद्ध लक्ष्मी. अनिरूद्धा और सरस्वती। हे देवी! मैं स्वयं भी इन्हीं नामों का जप करता हूं। अतः जो प्राणी पवित्र होकर यह स्तोत्र का पाठ कर निम्न तांत्रिक मंत्र का जप करेगा, वह सब कुछ अर्थात् सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर लेगा। यह बातें सत्य—सत्य और कठोर सत्य है।

श्री मंगला काली यंत्र साधना मंत्र

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हूं ह्रीं ह्रीं मंगला कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

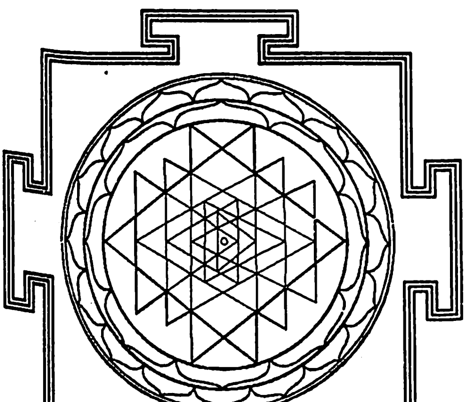
नोट—उपरोक्त मंत्र का जप 41 दिन में एक लाख एकयावन हजार की

संख्या में पूर्ण करें। मंत्र जप रूद्राक्ष की माला से सम्पन्न करें। जप आरम्भ करने से पूर्व व स्तोत्र पाठ के बाद में नीचे लिखित स्वरूप का यंत्र भोजपत्र के ऊपर रक्तचन्दन की स्याही व अनार की कलम से करें। स्वयं निर्मित यंत्र को सिंहासन पर स्थित–गुरू कवच यंत्र वाले प्लेट में चांदी के ताबीज में बंद कर, लाल डोरे डालकर रख दें। इसके बाद जप आरम्भ करें।

जप जिस रात्रि में पूर्ण हो उसके दूसरे दिन की रात्रि में 11 माला मंत्र जप करते हुए हवन में आहुति डालें। तत्पश्चात् आरती व विसर्जन सम्पन्न करें। विसर्जन के पश्चात् स्वयं निर्मित यंत्र को गले में धारण कर लें और गुरू कवच यंत्र को बहती दरिया में विसर्जित कर दें।

इसके पश्चात् किसी भी दुखी व्यक्ति को शविार के दिन यंत्र निर्माण कर, पंचोपचार पूजन कर, एक माला मंत्र जप सम्पन्न कर प्रदान करेंगे तो उनके भी सभी मनोरथ पूर्ण हो जायेंगे। आजमा कर देखें, यह मेरा रिसर्च प्रयोग है, जिससे दुनियाँ के अनेकों लोग लाभ उठा रहे हैं।

[श्री मंगला काली यंत्र स्वरूप]



श्री श्मशान काली साधना

श्मशान काली साधना से लाभ

क्या आप शत्रुभय से छुटकारा पाना चाहते हैं? क्या शत्रु ने आपका जीना दूभर कर दिया है ? क्या शत्रुओं द्वारा आपका नाश हो रहा है, तो कर डालिए अपने दुश्मन का सर्वनाश! जी हाँ, सर्वनाश। आपके दुश्मन का इस महासाधना के द्वारा खानदान व धन दौलत आदि सम्पूर्ण प्रभुता समाप्त हो जायेगी।

श्मशान काली साधना विधि

यह साधना दिवाली की रात में ठीक बारह बजे आरम्भ करें। स्ननादि से पवित्र होकर, आम लकड़ी का सिंहासन दक्षिण मुख स्थापित कर उसपर काला वस्त्र बिछावें। फिर सिंहासन पर माता काली की तस्वीर की स्थापना करें। तस्वीर के सामने सिद्ध गुरू द्वारा प्राप्त–"सिद्ध गुरू कवच यंत्र" तांबे के प्लेट में माता काली तस्वीर के समक्ष रखें। धूप–दीप जगावें। स्वयं काले कम्बल के आसन पर बैठें। इसके बाद वैदिक पंडित द्वारा (महाकाली) श्मशान काली की महाकाली साधना के समान षोड़शोपचार पूजन सम्पन्न करें।

षोड़शोपचार पूजन के बाद "भैरव" के निम्न मंत्रों का अलग–अलग पंचोपचार पूजन करें–

ॐ असितांग भैरवाय नमः, ॐ रूरू भैरवाय नमः,
ॐ चण्ड भैरवाय नमः, ॐ क्रोध भैरवाय नमः,
ॐ उन्मत भैरवाय नमः, ॐ कपालि भैरवाय नमः,
ॐ भीषण भैरवाय नमः, ॐ संहार भैरवाय नमः,

नोट–इस साधना में विनियोग, ऋृष्यादि न्यास व करन्यास–महाकाली साधना में वर्णित मंत्रों द्वारा ही सम्पन्न करें।

विनियोग और न्यास के पश्चात् श्मशान काली षोड़शोपचार पूजन, फिर भैरव के ऊपर लिखित रूपों का पूजन, तत्पश्चात् श्मशान काली के निम्न रूपों का पंचोपचार पूजन करें–

जया, विजया, अपराजिता, नित्या, कपालिनी, कुल्ला, कुरू कुल्ला, विलासिनी, दोग्धी, अघोरा, उग्रा, उग्र प्रभा, दीप्ता, नीचा, घना, बलाकिका, माहेश्वरी, चामुंडा, महाभैरवी, सिंह भैरवी, धूम्र भैरवी, भीम भैरवी।

नोट–इसके पश्चात् उनके आयुधों की "पंचोपचार" पूजन करें–

ॐ बज्राय नमः. ॐ गदायै नमः, ॐ शक्त्ये नमः, ॐ पाशाय नमः, ॐ त्रिशूलाय नमः, ॐ चक्राय नमः।

नोट–उपरोक्त सभी पूजन "क्लश" पे सम्पन्न करें। पूजन सम्पन्न के बाद "श्मशान काली कवच" का पाठ करें।

[श्मशान काली कवच]

[श्लोक]

ॐ कालिका घोर रूपा सर्व काम प्रदा शुभा।
सर्वदेव स्तुता देवी शत्रु नाशं करोतु मे॥
ॐ ह्रीं ह्रीं रूपिणीं चैव ह्रां ह्रीं ह्रां रूपिणी तथा।
ह्रां ह्रीं क्षौं क्षों स्वरूपा सा सदा शत्रून बिदारयेत॥

हिन्दी अनुवाद—हे महाविकराल भयावना रूप वाली, ऐश्वर्य प्रदान करने वाली, देवताओं द्वारा पूजे जाने वाली श्मशान काली भगवती! आप मेरे शत्रुवों का सर्वनाश कर दें। ॐ ह्रीं ह्रां ह्रीं ह्रां रूपिणी वह्रां ह्रीं क्षौं क्षों स्वरूप वाली श्मशान काली माँ।

आप मेरे अशुभ चिंतकों का मूल नष्ट कर दें।

[श्लोक]

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं रूपिणी देवी भबन्ध विमोचिनी।
हूं रूपिणी महाकाली रक्षा स्मान् सर्वदा।।
यथा शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भस्य महासुरः।
वैरि नाशाय बन्दे तां कालिकां शंकर प्रियाम।
ब्राह्मणी शैवी वैष्णवी च वाराही नार सिंहिका।
कौमार्यैन्द्री च चामुण्डा खदन्तु मम विद्विषः॥
सुरेश्वरी घोर रूपा चण्ड मुण्ड विनाशिनी।
मुण्डमाला वृतांगी च सर्वतः पातु मां सदा॥
ह्रीं ह्रीं ह्रीं कालिके घोर दंष्ट्रेव रुधिर प्रिये।
रुधिरापूर्ण वक्त्रे च रुधिरेणा वृतस्तानि।।

हिन्दी अनुवाद—श्रीं ह्रीं ऐं बीज स्वरूपा, सांसारिक बन्धनों को काटने वाली हूं बीजरूपा मातेश्वरी श्मशान काली! आप हमारी सदैव रक्षा करें। हे भगवती! जैसे आपने शुम्भ-निशुम्भ दैत्यों का सर्वनाश किया, वैसे ही मेरे शत्रुवों का भी नाश करें। ब्राह्मणी, वैष्णवी, शैवी, नारसिंही, वाराही, ऐन्द्री, कौमारी व चामुण्डा रूप में आप ही एक हैं। आप मेरे शत्रुओं का भक्षण करें। हे सुरेश्वरी, घोर रूपा, चण्ड-मुण्ड का नाश करने वाली, मुण्डमाला धारिणी भगवती, आप विपदाओं से मेरी रक्षा करें। ह्रीं ह्रीं स्वरूपा हे मैया श्मशान काली, भयंकर दाढ़ों व मुख वाली, रक्तपान करने वाली हे भगवती! आप मेरे शत्रुओं का विनाश करें।

नोट—अब निम्नलिखित मंत्र का जप रूद्राक्ष की माला से आरम्भ करें-

श्मशान काली साधना मंत्र

"ॐ ह्रीं ह्रीं श्मशान कालिकाये मदिय शत्रून समर्पयामि स्वाहा।"

नोट—उपरोक्त मंत्र का जप प्रथम रात्रि 21 माला जप करें। दूसरी रात्रि से-धूप-दीप जगाकर, "श्मशान काली कवच" का पाठ कर पुनः जप 21 माला सम्पन्न करें और 21 माला मंत्र जप नित्य रात्रि दो लाख मंत्र जप सम्पन्न होने तक करते रहें। मंत्र जप सम्पन्न होने के पश्चात् माता श्मशान काली को शत्रु के रूप में कुष्माण्ड [कोहडे अथवा कोढ़ला, जिसका पैठा बनता है, की बलि प्रदान करें]

श्मशान काली को शत्रु के रूप में कुष्माण्ड बलि देने का विधान

कुष्माण्ड (कोहड़े, जिसका पैठा बनाया जाता है) डंडी लगा हुआ पवित्र जल से धोकर, उसपर सिन्दूर का पांच तिलक लगावें। इसके पश्चात् कफन के रूप में सफेद वस्त्र उसपर ढंक दें। यह कार्य सिंहासन के सामने केले के पत्ते पर करें। कुष्माण्ड पर वस्त्र ढकने के बाद दाहिने हाथ की अंजुली में जल, अक्षत, चन्दन, पुष्प, पान का पत्ता, सुपारी, काले तिल, बिल्वपत्र एवं द्रव्य लेकर निम्न मंत्र द्वारा बलि का संकल्प करें। संकल्प मंत्र समाप्त होने पर हाथ की वस्तुएँ माता काली सिंहासन पर समर्पित कर दें-

बलिदान सकल्प मंत्र

देश कालौ सङ्कीर्त्य मम्, स कुटुम्बस्य सपरिवारस्य सर्वारिष्ट शन्ति सर्वाभिष्टं सिद्धि कल्पोक्त शत्रु मृत्यु प्रीत्यर्थं काली साधना, मंत्र जप, हवन, कुष्माण्ड बलिदान करिष्ये।

अब हाथ जोड़र बलिदान प्रार्थना करें-

पशुस्त्वं बलिरूपेण मम भाग्य द्वस्थितः।
प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम्॥
चण्डिका प्रीति दानेन दातुरापद् विनाशनम्।
चामुण्डा बलि रूपाय बले? तुभ्यं नमोस्तुते॥
यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा।
अतस्त्वां घातयाग्यध यस्माद्यज्ञे मतोवधः॥

नोट-इसके पश्चात् जल,अक्षत, चन्दन, बिल्वपत्र, पुष्प से खड़ग की पूजा पंचोपचार विधि से करें।

खड़ग-पूजन मंत्र

"ॐ खड़गाय नमः"

नोट-खड़ग पूजन के बाद दाहिने हाथ में खड़ग उठाकर वीरासन मुद्रा में निम्न मंत्र का 5 बार पाठ करें।

"ॐ ह्रीं ह्रीं खड़ग आं हुं फट्"

इसके पश्चात् निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए कुण्माण्ड को काट डालें-

"ॐ काली-काली श्मशान काली रुधिरेणाप्यायताम्"।

नोट-इसके बाद आधा कुष्माण्डा का भाग माता काली के सिंहासन पर समर्पित करें और आधे भाग का पाँच टुकड़े बनाकर एक-एक टुकड़ा उठाकर कलश पे निम्न मंत्र पढ़ते हुए समर्पित करें-

पूतानायै बलिभागं निवेदयामि।
चरक्यै बलिभागं निवेदयामि।
विदार्यै बलिभागं निवेदयामि।
पापराक्षस्यै बलिभागं निवेदयामि।

नोट–इसके पश्चात् आम की लकड़ी पर ''श्मशान काली साधना यंत्र'' का 11 माला जप करते हुए हवन सामग्री द्वारा आहुति डालें। आरती करें, तत्पश्चात् साधना विसर्जन करें। यह साधना सम्पन्न होते ही आपके शत्रु का सर्वनाश आरम्भ हो जायेगा और कुछ दिनों के बाद उसकी मृत्यु हो जायेगी। परन्तु सावधान! शुंभ निशुंभ या चण्ड–मुण्ड के समान समाज के अति दुर्जन शत्रु के लिए ही यह प्रयोग करें।

शत्रु विनाशक श्मशान काली यंत्र साधना सावधानी

साधको ! इस यंत्र का प्रयोग किसी सभ्य और अच्छे इन्सान पर नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह यंत्र बहुत ही खतरनाक यंत्र है। यह यंत्र सिद्ध कर जिसके घर–आंगन में दबा दिया जाता है या यंत्र को धोकर, धोया जल शत्रु के घर में फेंक दिया जाता है तो उसके घर में रोग, शोक, लड़ाई–झगड़े आरम्भ हो जाता है और कुछ ही दिनों में शत्रु की मृत्यु भी हो जाती है, उसका सर्वनाश हो जाता है।

यंत्र साधना विधि–जिस अमावस्या तिथि को शनिवार दिवस हो, उस रात्रि में गंगा किनारे के नीचे वर्णित काली यंत्र सादे कागज़ पर श्मशान के कोयले से निर्माण करें। निर्मित यंत्र को अपने आगे रखकर उसपर महाकाली का ध्यान करें निम्न मंत्र का 11 माला जप करें–

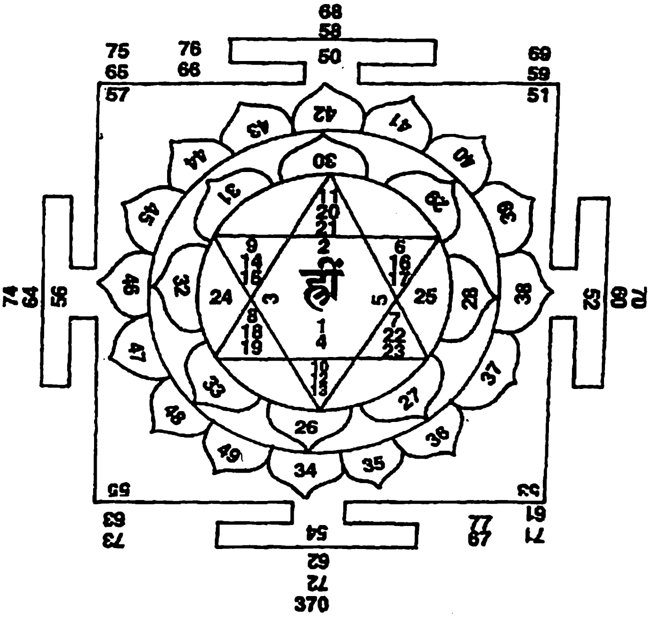
जप हेतु मंत्र

ॐ जय-जय किरि किरि किरी किटि किटि कुट कुट कट्ट कट्ट मर्दय मर्दय मोहय मोहय मृत्यु देहि मम शत्रु ध्वंशय भक्षय–भक्षय त्रोटय-त्रोटय यातुनि धाणि चामुण्डे सर्वजनाब्राज्ञो राज पुरूषाण योषा रिपून मम वश्यान कुरू कुरू तनु तनु धान्य धनमश्वान गजान भतनादि दिव्य कामिनीः पुत्र–पोत्राण शत्रु भक्ष-भक्ष क्षां क्षीं क्षें क्षौं क्षः स्वाहा।

नोट–11 माला जप सम्पन्न करने के बाद यंत्र लेकर घर चले आवें और दूसरी रात्रि के घर–आंगन या घर के छत पर फेंक दें या जमीन में दवा दें तो आपके शत्रु का सर्वनाश हो जायेगा।

यह साधना मात्र एक रात्रि की है, परन्तु यह यंत्र साधना करने से पूर्व गुरू द्वारा प्राप्त–''सिद्ध कवच यंत्र'' काले डोरे के साथ गले में धारण करना आवश्यक है, अन्यथा आप अपना प्राण गंवा बैठेंगे।

[श्मशान काली यंत्र]



श्री दक्षिणा काली साधना

दक्षिणा काली साधना क्यों करें ?

अनिष्ट नवग्रहों की शांति हेतु श्री दक्षिणा काली की साधना करें। मातेश्वरी दक्षिणा काली महाकाली के ही स्वरूप हैं। महाकाली ने ही ग्रहों को मानव या किसी भी जीव को प्रभावित करने हेतु ड्युटी लगाई हैं, सभी ग्रह उनके अधीन हैं। जिनके अधीन सभी ग्रह हों, उन्हें माहेश्वरी की साधना यदि साधक कर ले तो ग्रहों की अनिष्ठता बाल भी बांका नहीं कर सकती।

हमारे ऋषियों ने हजारों वर्ष पहले ही इस बात की पुष्टि कर दी थी, जो विज्ञान अभी हाल में ही कह पाया है, कि ग्रहों का पूर्ण प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है और उन्हीं के अनुसार ही व्यक्ति की जीवन में शुभ और अशुभ घटनावों का प्रादुर्भाव होता है।

उन्होंने कहा है कि कोई भी ग्रह जो व्यक्ति के लिए जन्म समय पर अनुकूल पड़े हों, तो वे अच्छा फल देते हैं, परन्तु जो ग्रह समय-समय में प्रतिकूल होते हैं, वे ग्रह ही बाधक या क्रुर संज्ञक कहलाते हैं, और अधिकतर ये ग्रह ही अपनी महादशा

या अन्तर्दशा में व्यक्ति को विभिन्न बाधाओं और परेशानियों के बीच में गुजारते हैं। हालांकि जितना प्रतिकूल ग्रह होगा, उतने ही अनुपात में व्यक्ति को बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।

फिर ऋषि–महर्षियों ने निम्न बाधाएँ ग्रहों के कोप के कारण या उनके प्रतिकूल महादशा के दौरान उत्पन्न हुई बताई है–

1. व्यक्ति का स्वास्थय निरन्तर खराब रहता है, उसका वजन कम हो जाता है, भूख नहीं लगती और उसे विभिन्न रोग आ घेरते हैं। कई प्रकार की चिकित्सा होने पर भी उसे लाभ नहीं होता है।

2. उसे व्यापार में हानि ही हानि झेलनी पड़ती है। धन के श्रोतों में कमी आ जाती है, कमाई से अधिक खर्च होने लगता है और कई बार तो दिवालिया की स्थिति बन जाती है।

3. शत्रुवों का प्रभाव बहुत बढ़ जाता है एवं वे उसपर बहुत हावी हो जाते हैं, वह भयभीत हो उनसे बचता फिरता है, पर वे उसका पीछा नहीं छोड़ते और कई बात तो उसके सम्पूर्ण परिवार का ही शत्रु सर्वनाश कर देते हैं।

4. व्यक्ति का पारीवारिक जीवन तनाव पूर्ण हो जाता है, उसके बात–बात पर पत्नी से झगड़े होने लगते हैं, कभी--कभार तलाक तक की नौबत आ जाती है, या आत्म–हत्या तक करनी पड़ती है।

5. पुत्र सुख व सन्तान सुख नहीं प्राप्त होता, और अगर बालक हो भी जाता है, तो या तो अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, या चिर रोगी रहता है।

6. उनके बच्चे बड़े होकर उसके कहने में नहीं रहते, मनमानी करने लगते हैं। पुत्र धन का नाश कर देते हैं। शरांब–जुआ आदि की आदत में पड़ते हैं और पुत्रियाँ भी गलत संगत में पड़ जाती हैं।

7. वह जिस किसी भी काम में हाथ डालता है, उसे नुक्सान ही होता है। "कुन्दन भी छूने से मिट्‌टी बन जाए" वाली कहावत उनपर खूब जंचती है।

8. घर में वर्षों तक कोई मंगल समाचार या मंगलोत्सव नहीं होता, वह घर खंडहर के समान हो जाता है, और उस व्यक्ति को समाज में भी अपकीर्ति, अपयश, हानि उलझनों और उलाहनों का सामना करना पड़ता है।

9. विभिन्न प्रकार की दुर्घटनाएँ एवं अकाल मृत्यु का उसके घर में एक प्रकार से स्थायित्व हो जाता है, कब कौन सी दुर्घटनाएँ हो जायेंगी, इसी आशंका में वह बेचारा डरा–डरा रहता है। अपने प्रियों को खोकर जीवन उसे बोझ समान लगने लगता है।

10. उसका सांसारिक जीवन तो नष्ट होता ही है, साध ही साथ आध्यात्मिक रूचि भी समाप्त हो जाती हैं एवं वह सामान्य जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य हो जाता है।

इस उपरोक्त बाधाओं में से अगर कोई एक या अनेक बाधाएँ आपके ऊपर हों तो यह "ग्रह दोष बाधा या क्रुर ग्रह के ही प्रभाव का लक्षण है।" ऐसे में फिर व्यक्ति इन बाधाओं से बचने के लिए क्या करें ? किस विधि से ग्रहों के कुप्रभावों को शांत कर उससे शुभ फल प्राप्त करे ?

महर्षियों नें जहां ग्रह बाधा या क्रुर ग्रह की महादशा–अन्तर्दशा में उत्पन्न बाधाओं एवं संकटों के बारे में विवरण दिया है, वहीं उन्होंनें विभिन्न कोटि के प्रयोगों की भी सृष्टि की है, जिनके फलस्वरूप व्यक्ति पूर्ण रूपेण ग्रह एवं बाधा से मुक्त हो सकता है। हमारे शास्त्रों में विभिन्न विधियाँ प्रचलित हैं, परन्तु उन सब में सबसे अधिक पूजनीय एवं प्रभावशाली है–श्री दक्षिणा काली की मंत्र एवं यंत्र साधना।

साधको! दक्षिणा महाकाली कलकत्ता एवं बिहार क्षेत्र के साधकों की प्रमुख अराध्या हैं। इनके विशिष्ठ साधकों में परम पूजनीय स्वामी राम कृष्ण परम हंश का नाम सर्वप्रथम आता है। बताया जाता है कि श्री परमहंश में दक्षिणा काली के प्रति इतनी आस्था थी कि वे दिन–रात उनके ध्यान में ही खोए रहते थे। कालान्तर में परमहंश जी के शिष्य स्वामी विवेका नन्द ने महाकाली की बहुत ही विलक्षण साधना की।

भगवती दक्षिणा काली माता का सबसे उग्र रूप हैं, (इस उग्र रूप का पूर्ण विस्तृत तत्वों की जानकारी हेतु पढ़े–अमित पॉकेट बुक्स जालंधर सिटी से प्रकाशित, हमारी लिखि हुई ग्रन्थ श्री काली उपासना)

यह दक्षिणा काली साधना 40 दिन में सम्पन्न होती है। इसमें किसी प्रकार का अवरोध या विघ्न नहीं होना चाहिए, अन्यथा शारीरिक व मानसिक रूप से हानि होने की संभावना रहती है। वैसे तो माँ परम दयालू व करूणा मयी हैं, परन्तु सिद्धि अनुष्टानों में माता अपने साधक की पूरी परीक्षा लेती हैं। अतः अगर साधक जरा भी भयभीत हो गया तो जान के लाले पड़ जाते हैं, इसलिए साधक को चाहिए कि वह किसी मंत्रज्ञाता, विद्वान पंडित अथवा योग्य, गुरु की मदद से ही यह साधना का विचार करें। यदि यह साधना पत्नी के साथ करें तो अति उत्तम रहता है, ऐसे में मां काली की कृपा शीघ्र प्राप्त होती है और मातेश्वरी का साधक को ''दिव्य दर्शन'' भी प्राप्त होता है। सम्पूर्ण साधना काल में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें।

यह महासाधना महाकाली मंदिर अथवा घर में भी सम्पन्न कर सकते हैं। घर के एकान्त कमरे में दक्षिण मुख महाकाली का सिंहासन (आम लकड़ी से बना) स्थापित करें। आसन के ऊपर काला वस्त्र बिछा कर माता की तस्वीर की स्थापना करें। तस्वीर के समक्ष तांबे के प्लेट में–सिद्ध गुरू द्वारा प्राप्त–''गुरू कवच यंत्र'' लाल वस्त्र में लपेट कर रखें। काला वस्त्र धारण कर उत्तराभिमुख होकर काले कम्बल के आसन पर बैठें। आसन के नीचे श्मशान भूमि से लायी चिता की राख काले कपड़े में बांधकर रखें। सुगन्धित अगरबत्ती व देशी घी का चौमुखी दीपक जगावें। इसके पश्चात् योग्य वैदिक पंडित द्वारा–महाकाली साधना के मुताबिक ''षोड़शोपचार पूजन'' सम्पन्न करें।

''महाकाली साधना'' में जो विनियोग, न्यास व ध्यान लिखे गये हैं, उनके स्थान पर निम्न विनियोग, न्यास व ध्यान स्तोत्र सम्पन्न करें।

श्री दक्षिणा काली विनियोग

ॐ अस्य श्री दक्षिणा काली साधना महाकाल ऋषिः गायत्री छन्दः, श्री दक्षिणा कालिका देवता, हलो बीजानि, स्वशः शक्त्यः, अव्यक्तं कीलकं, श्री दक्षिण कालिका देवता प्रसाद सिद्धयर्थ तत्त कामना सिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

श्री सदाशिव ऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे।
श्री दक्षिण कालिका देवतायै नमः हृदि।
सर्वसिद्ध साधने कीलक न्यासे।
पाठ विनियो नमः अंजली।

हृदयादि न्यास

ॐ ऐं हृद्याय नमः, ॐ शिरसे स्वाहा।
ॐ श्री शिखायै वषट्, ॐ क्लीं कवचाय हूं।
ॐ कालिके नेत्रयाय वौषट्, ॐ ऐं हीं श्रीं क्लीं
कालिके ऐं हीं श्रीं क्लीं अस्त्राय फट्।

नोट—षोड़शोपचार पूजन समाप्त होने के बाद श्री दक्षिणा काली स्तोत्र का पाठ करें।

श्री दक्षिणा काली स्तोत्र

(श्लोक)

ॐ अचिन्त्या मिताकार शक्ति स्वरूपा,
प्रतिव्यक्त्य धिष्ठान सत्वैक मूर्तिः।
गुणातीत निर्द्धन्द्ध बौधेक गम्या,
त्वमेका पर ब्रह्म रूपेण सिद्धा॥ १॥

हिन्दी अनुवाद—हे माँ दक्षिणा काली आपके प्रभाव व स्वरूप की महिमा गाने की सामर्थ्य किसी में भी नहीं है। आप सांसारिक जीवों में सत्व गुण रूप से विराजती हैं व ब्रह्म रूप से ही आपकी सिद्धि की जा सकती है।

(श्लोक)

अगोत्रा कृतित्वा दनैकान्ति कत्वा,
दलक्ष्या गमत्वा दशेषा करत्वाम्।
प्रपंचाल सत्वा दना रम्भ कत्वात,
त्वमेका पर ब्रह्म रूपेण सिद्धाः॥ २॥

असाधारण त्वाद सम्बन्ध कत्वाद,
भिन्ना श्रयत्वा दनाकार कृत्वात।
अविद्यात्मक त्वा दनाद्यन्त कत्वात्,
त्वमेका पर ब्रह्म रूपेण सिद्धाः ॥ ३ ॥

हिन्दी अनुवाद—हे मातेश्वरी दक्षिणा काली ! आप निराकर और चंचल हैं। परब्रह्म रूप होते हुए भी आप सृष्टि में व्यक्त अव्यक्त रूप से विद्यमान रहती हैं। आपको सीमावद्ध करके कोई सिद्धि करना चाहे तो यह असम्भव है। हे माँ ! आप सृष्टि के सभी पदार्थों में व्याप्त होकर भी उनमें लिप्त नहीं होती। आप आकार रहित, नाश रहित, आदि कारण अविद्या तथा ब्रह्मरूपिणी हैं॥ २–३ ॥

(श्लोक)

यदानैव धाता न विष्णु न रूद्रो,
न काली न वा पंच भूतानि नाशा।
तदाकारिणी भूत सत्वैक मूर्तिस्व,
त्वमेका पर ब्रह्म रूपेण सिद्धाः ॥ ४ ॥
न मीमांसका नैव कालादि तर्का,
न साख्यां न योगा न वेदान्त वेदाः,
न देवा विदुस्ते रिनाकार भवं,
त्वमेका पर ब्रह्म रूपेण सिद्धाः ॥ ५ ॥

हिन्दी अनुवाद—हे मातेश्वरी दक्षिणा काली ! आप तब भी विद्यमान थी, जब ब्रह्मा, विष्णु, शिव नहीं थे और न कोई सृष्टि के लक्षण थे। आप की सिद्धि ब्रह्म रूप से ही सम्भव है। हे सबका मंगल ही मंगल करने वाली समस्त ग्रह अनिष्टों को नाश करने वाली माता ! ब्रह्मरूपा होने के कारण आपकी महिमा का बखान मीमांसक, वेद शास्त्र आदि कोई भी करने में असमर्थ है।

(श्लोक)

न ते नाम गोत्रे न ते जन्म मृत्यु,
न ते धाम चेष्टे न ते दुःख सौख्ये।
न ते मित्र शत्रु न ते बंध मोक्षो,
त्वमेका पर ब्रह्म रूपेण सिद्धाः ॥ ६ ॥
न बाला न च त्वं वयस्कां न वृद्धाः,
न च स्त्री न षष्ठः पुवान्नैव च त्वम्।
न च त्वं सुरो ना असुरो ना नरोवा,
त्वमेका पर ब्रह्म रूपेण-सिद्धाः ॥ ७ ॥

हिन्दी अनुवाद—हे परमेश्वरि ! आप नाम, गोत्र, जन्म, गृह, मृत्यु, दुःख, सुख, मित्र, शत्रु, भुक्ति, मुक्ति से रहित ब्रह्म स्वरूपा हैं। हे जगदम्बा ! आपकी न

तो आयु है, न ही आप दे–अदेव, मानव देहधारी हैं। अतः आपकी सिद्धि ब्रह्मरूप से ही सम्भव है।

(श्लोक)

जले शीतल त्वं शुचौ दाह कत्वं,
विद्यौ निर्मलत्वं, रवौ ताप कत्वम्।
तबैताम्बिके यस्य कश्यानि शक्ति,
त्वमेका पर ब्रह्मा रूपेण-सिद्धा॥ ८॥
पपौक्ष्वैऽमुखं पुरा यन्मेशाः,
पुनः सहरत्न यन्त काले जगच्य।
तदैव प्रसादान्न च तस्य शक्त्यां,
त्वमेका परब्रह्म रूपेण सिद्धा॥ ९॥

हिन्दी अनुवाद–हे जगतारिणी अम्बिका जी ! आप जल, अग्नि, व अन्य जगत के पदार्थों की शक्ति स्वरूपा जननी हैं। आप ही साक्षात परब्रह्म हैं। हे आद्या काली! पूर्व समय में भगवान रूद्र ने विषपान व सृष्टि का संहार आपकी प्रसन्नता के लिए ही किया था। हे ब्रह्मस्वरूपा भगवती, वह सब भी आपकी ही महिमा का प्रताप था।

(श्लोक)

कराला कृतीन्या नयानि श्री जयन्ती,
भजन्ति करास्त्रावि बाहुल्य मित्थम्।
जगत पालनाया सुराया वधायः,
त्वमेका पर ब्रह्म रूपेण सिद्धा॥ १०॥
खन्ति शिवा भिर्वहन्ति कपालं,
जयन्ती सुरारीन् वधन्ति प्रसन्नता।
नरन्ति पतन्ति चलन्ति हसन्ति,
त्वमेका पर ब्रह्म रूपेण सिद्धाः॥ ११॥

हिन्दी अनुवाद–हे अम्बिके! आप सृष्टि के पालन व दैत्यों के संहार हेतु ही कर–कमलो में आयुध आदि धारण करती हैं। हे भयानक विकराल महादेवी! आप ही ब्रह्म स्वरूपिणी हैं। हे अर्द्धनारीश्वर महाकाली चण्डिका माँ ! आप दानवों का संहार करते समय हाथ में कपाल धारण किए रहती है और उस काल में हंसती, गिरती, मुस्कुराती रहती हैं, अर्थात् सर्वनाश स्वरूपिणी हो जाती हैं। हे भवानी ! आपकी सिद्धि ब्रह्म रूप से ही की जा सकती है।

(श्लोक)

आपादापि वातथिकं धावसि त्वं,
श्रुतिभ्यां विहीनापि शब्दं श्रृणोपि।
अनासापि जिघ्रस्य नेत्रापि पश्य,
स्वजिह्वापि नाना रसा स्वाद विज्ञा॥ १२॥

यथा बिम्ब मेकं रवे रम्ब मस्थ,
प्रतिच्छाया यावदे कोद केषु।
समुद भाषते नेक रूपं यथावत्,
त्वमेका परब्रह्म रूपेण सिद्धाः॥ १३॥

हिन्दी अनुवाद—हे रणचण्डी माँ ! पाद विहीन होने पर भी आपकी चालगति तेज है, कान न होने पर भी श्रवण शक्ति तीव्र है, नाक न होने पर भी घ्रान शक्ति तेज है, नेत्रहीन होने पर भी सर्वदृष्टा हैं तथा जिह्वा न होने पर भी आप सभी रसों का रसास्वादन करती हैं। हे भगवती ! आप जैसे अनेक रूपों में वैसे ही दृष्टि गोचर होती हैं, जैसे सूर्य किरणें जलाशयों में प्रतिबिंबित होती हैं।

(श्लोक)

यथा भ्राम चित्वा मृद चक्र मध्ये,
कुलाली विधत्ते शराव घटं च।
महामोह यन्त्रेषु भूतान्य शेषान्,
तथा मानुषा स्त्वं सृज्यादि सर्गे॥ १४॥
यथा रंग रज्चे कर्दृष्टी स्वकस्मान्नृणां,
रूप दर्वी कराम्बु भ्रमः स्यात।
जगत यत्र तत्तन्मये तद्वदेव त्वमेकैव,
तत्तन्नि तत्तो-समस्यतम्॥ १५॥

हिन्दी अनुवाद—हे भगवती ! आप सृष्टि की रचना के समय पंच—तन्मात्राओं रूपी मिट्टी को मोह यंत्र रूपी चाक में घुमाकर मानव देह का निर्माण करती हैं। आपकी यह क्रिया कुम्हार की क्रिया के समान है। हे दक्षिणा काली माँ ! सभी भाषित पदार्थों का क्षय होने पर केवल आप ही शेष बचती हैं। जिस प्रकार रांगे में चांदी का, रज्जू में नाग का, सूर्य किरणों में जल का भ्रम होता है, उसी प्रकार सृष्टि के प्रत्येक वस्तु में आपका ही भ्रम समाया है।

(श्लोक)

महाज्योति एकार सिंहासन वत्,
त्वकीयान् सुरान वाह यस्युग्र मूर्ति।
अवष्टम्य पद्भ्यां शिवं भैरव च,
स्थिता तेन मध्ये भवत्येन मुख्या॥ १६॥
कुयोगासेन योग मुद्रा भिनीतिः,
कुयोस्त्रा सापो तस्या वालाननं च।
जगन्मात रादृक मस्मद्धि धैंदेवि गम्या,
कभंकार तवा पूर्व लीला॥ १७॥

हिन्दी अनुवाद—हे माहेश्वरी ! देवताओं को ज्योर्तिमय सिंहासन आप ही

प्रदान करती हैं , तथा आप ही उग्र रूप धारण कर भैरव रूप शिव को अपने पैरों के नीचे दबाकर शोभायमान होती हैं। हे माँ ! आप कटे हुए मुण्ड धारण किए रहती हैं तथा कुयोगासन (शव पर, मुर्दे पर) आरुढ़ रहती हैं। आपकी यह सब लीला अपरम्पार है।

(श्लोक)

महाघोर कालान ज्वाल ज्वाला
ह्रित्यात्यन्त वासा महाट्टहास।
जटा भार काला महामुण्ड माला,
विशाला त्वमीहा महाध्याय शम्बा॥ १८॥
तपो नैव कुर्वन वपुः साधयामिम्,
ब्रजन्नापि तीर्थ पदे खञ्जयामि।
पठनापि वेदान च न याप यामि,
त्वदं घ्रिद्धयं मंगलं साधयामि॥ १९॥

हिन्दी अनुवाद–हे कलकत्ते में निवास करने वाली, जहाँगीर पुर बैसी में निवास करने वाली दक्षिणा काली माँ! आप विकराल काला नल की शिखा के बीच भयंकर हास करती, जटाधारी, कृष्ण वर्ण वाली व मुण्ड माला धारण किए "शिव" पर आरूढ़ हैं। मैं आपके इसी स्वरूप का स्मरण करता हूँ। हे दक्षिणा काली माँ ! तपस्या, तीर्थ, वेदपाठ आदि क्रियावों में मेरी रूचि नहीं है, मेरी इच्छा तो आपके चरण कमलों की सेवा करने की है।

नोट–स्तोत्र पाठ के बाद माता दक्षिणा काली को प्रणाम करें, इसके पश्चात् रूद्राक्ष की माला से नीचे लिखित मंत्र का 21 माला जप सम्पन्न करें।

श्री दक्षिणा काली साधना मंत्र

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिण कालिके
क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं नमः स्वाहा।

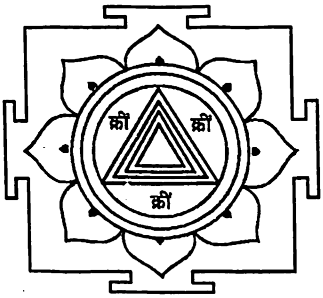
नोट–जप समाप्त होने के बाद आरती करें। इसके पश्चात् वैदिक पंडित को भोजन कराकर, दक्षिणा से संतुष्ट कर विदा करें। संध्या के समय भी 21 माला जप सम्पन्न करें। इस प्रकार प्रथम दिन का पूजन सम्पन्न करें। दूसरे दिन से माता की पंचोपचार पूजन कर स्तोत्र पाठ कर जप आरम्भ करें। अर्थात शाम–सुबह 42 माला जप 40 दिन लगातार सम्पन्न करें। अन्तिम दिन 21 माला मंत्र जप करते हुए, हवन सामग्री से हवन कुंड में आम की लकड़ी जलाकर आहुतियाँ डालें। आरती कर्म करके पूजन विसर्जन करें। अन्तिम दिन भी वैदिक पंडित को बुलवा कर पूजन, हवन कर्म सम्पन्न करावें। और 5 ब्राह्मण तथा 11 कुंवारी कन्यावों को मीठा भोजन कराकर दक्षिणा आदि से संतुष्ट कर विदा करें।

इसके पश्चात् गुरू यंत्र को बहती दरिया में विसर्जित कर दें। यह साधना सम्पन्न करने के पश्चात् आपमें दिव्य शक्तियाँ निवास करने लगेंगी, और आप एक महान चमत्कारी पुरूष बन जायेंगे।

श्री दक्षिणा काली यंत्र साधना

साधको ! जो लाभ दक्षिणा काली मंत्र साधना से होती है, वही लाभ इनके यंत्र साधना से भी प्राप्त होती है।

[श्री दक्षिणा काली यंत्र स्वरूप]



यंत्र साधना विधि–श्री दक्षिणा काली यंत्र की साधना दिवाली की रात्रि बारह बजे आरम्भ करें। दक्षिणा काली मंत्र साधना के समान ही माता का सिंहासन, तस्वीर, सिद्ध गुरू कवच यंत्र की स्थापना करें। षोड़शोपचार पूजन करें, तत्पश्चात् निम्नलिखित ध्यान करें–

[ध्यान मंत्र]

शवारूढ़ा महाभीमां घोर दंष्ट्रा हसन्मुखीम।
चतुर्भुजां खग मुंड वराभय करां शिवाम॥
मुण्ड माला धरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बराम्।
एवं संचिंतयेत कालीं श्मशानालय वासिनीम्॥

नोट–इस यंत्र साधना में विनियोग, ऋष्यादि न्यास, हृद्यादि न्यास दक्षिण काली साधना के अनुकूल ही सम्पन्न करें। षोड़शोपचार पूजन व ध्यान के बाद अष्टगंध की स्याही और कुशा जड़ की कलम से सादे कागज पर यंत्र निर्माण करें। निर्मित यंत्र को "गुरू कवच यंत्र" वाले प्लेट में रख दें। तत्पश्चात् निम्न मंत्र का जप 61 दिन में दो लाख जप संख्या सम्पन्न करें–

जप हेतु मंत्र

"ॐ ह्रीं काली महाकाली किलि-किलि फट् स्वाहा"।

नोट–अन्तिम दिन जप समाप्त होने के पश्चात् 11 माला उपरोक्त मंत्र का जप करते हुए हवन करें। हवन के बाद आरती व विसर्जन पूजन सम्पन्न करें। तत्पश्चात् गुरू कवच यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें। स्वयं निर्मित यंत्र लाल डोरे में डालकर गले में धारण कर लें। इसके पश्चात् शनिवार के दिन यंत्र निर्माण कर, पंचोपचार पूजन कर, 5 माला मंत्र जप कर–ताबीज जिसे भी प्रदान करेंगे, वह समस्त कामनाओं से परिपूर्ण हो जायेगा।

यह महायंत्र सिद्ध किया हुआ पंडित वाई. एन. झा के कार्यालय से प्राप्त कर लाभान्वित हो सकते हैं। पाठकों! महाकाली के ओष्ठों से रक्त प्रवाहित होने का रहस्य, बाहर निकली दंत पंक्ति और लपलपाती जिह्वा का रहस्य क्या है ? इसे जानने हेतु अमित पाकेट बुक्स जालंधर सिटी से हमारी लिखी हुई पुस्तक–"महाकाली उपासना" पढ़कर ज्ञान प्राप्त करें।

श्री गुह्या काली साधना

साधको! मातेश्वरी गुह्या काली की साधना महाकाली साधना विधि अनुसार ही सम्पन्न करें। इस साधना में केवल मंत्र व ध्यान वन्दना का अन्तर है-

श्री गुह्या काली ध्यान

महामेघ प्रभां देवी कृष्णवस्त्रो सिधारिणीम।
ललिज्जह्वां घोरद्रंष्टां कोट राक्षी हसन्मुखीम॥ १॥
नागहार लतो पेतां चंद्रार्घ कृत शेखराम्।
द्यां लिखन्ति जटामेकां लेलिमन्हानासवं पिवम्॥ २॥
नाग यज्ञोपवी तांङ्गी नागशैय्या निषेदुषीम्।
पञ्चासन्मुण्ड संयुक्तं वनमाला महोदरीम॥ ३॥
सहस्त्र फन संयुक्त मन्नतं शिरसोपरि।
चतुर्दिक्षु नागफणा चेष्टितां गुह्याकालिकाम्॥ ४॥
तक्षक सर्पराजेन् वाम कङ्कण भूषिताम्।
अनन्त नागराजेन कृत दक्षिण कंकनम्॥ ५॥
नागेन रसनाहार कल्पितां रत्ननूपुराम्।
वामे शिव स्वरूपं तत्कल्पितं वत्स रूपकम्॥ ६॥
द्विभुजां चिन्तयेद्येवी नाग-यज्ञोपवितिनीम्।
नरदेह समावद्ध कुण्डल श्रुति मण्डिताम्॥ ७॥
प्रसन्नवदनां सौम्यां नवरत्न विभूषिताम्।
नारदाद्यै मुनि गणैः सेवितां शिव मोहनीम्॥ ८॥
अट्टहासं महाभीमां साधकाभिष्ट दायिनीम्॥ ९॥

हिन्दी अनुवाद-देवी के देह का वर्ण मेघ जैसा काला है। ये काला वस्त्र तथा तलवार धारण किए हुए हैं। उनकी जीभ भीषण है। उनकी दोनों आँखें धसी हुई है। उनके मुख पर अपूर्व मुस्कान है। उनके गले में सर्पों की माला है, मस्तक पर अर्द्ध चन्द्र है। मस्तक की जटावों में से एक जटा आकाश गामिनी है। वे रक्तपान कर रही हैं। वे सापों की ही यज्ञोपवीत पहने हैं तथा नाग शैय्या पर स्थित हैं। उनके गले में पचास मुण्डों से युक्त बनमाला पड़ी है। उनका पेट दीर्घकाय है और सिर पर सहस्त्र फण धारी अनन्त नागराज विराजित हैं। वे चारों ओर नागफणों से षेष्ठित हैं। वे सांपराज तक्षक को वाम कंण तथा अनन्त सांपों को दक्षिण कंकन के रूप में पहने हुए हैं। उनकी करधनी भी सांपों से बनी हुई हैं। वे रत्नों से जड़ा नूपुर पहनी हैं। उनके बाएं अंग में शिव स्वरूप कल्पित वत्स (बालक) है।

श्री गुह्या काली साधना मंत्र

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं गुह्या कालिके क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं।"

4



महाकाली की सहायिका शक्ति यक्षिणी साधनाएँ

यक्षिणी कौन हैं और इनकी साधना क्यों करें ?

साधको ! यक्षिणियाँ माता महाकाली की सहायिका शक्ति हैं, जो सृष्टि व प्रलय कार्य में उनका साथ निभाती हैं। इनकी साधना सरल है, परिणाम स्वरूप साधक आसानी से यह साधना सम्पन्न करने में सक्षम होता है। इनकी साधना करने से साधक को सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति, वायु-गमन, दूर दृष्टि, तथा देश-विदेश की कोई भी सूचना, कोई वस्तुओं आदि को सूचना आदि तुरन्त प्राप्त होती हैं। साधना सम्पन्न होने पर ये साधक को साक्षात दर्शन भी देती हैं। इनकी सिद्धि प्राप्त होने पर साधक की समस्त अभिलाषाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

मुख्य यक्षिणियों के नाम

पाठको ! मातेश्वरी महाकाली की सहायिका शक्ति यक्षिणियाँ तो अनेक हैं, परन्तु उनमें से 36 यक्षिणियाँ मुख्य हैं, जिसका नाम निम्न प्रकार हैं–

1. विचित्रा, 2. विभ्रमा, 3. भीषणा, 4. जनरंजिका, 5. विशाला, 6. मदना, 7. घंटकर्णी, 8. कालकर्णी, 9. महामाया, 10. महेन्द्रिका, 11. शंखिनी, 12. चंद्रिका, 13. श्मशानी, 14. वट, 15. मेखला, 16. विकला, 17. लक्ष्मी, 18. कामिनी, 19. शतपत्रिका, 20. सुलोचना, 21. शोभना, 22. कपाली, 23. विलासिनी, 24. नटी, 25. बगमेश्वरी, 26. स्वर्णरेखा, 27. सु सुन्दरी, 28. मनोहरा, 29. प्रमोदा, 30. रागिणी, 31. नखकोशिका, 32. मालिनी, 33. पद्मिनी, 34. स्वर्णवती, 35. सुखवती 36–रतिप्रिया।

यक्षिणी साधना विधि

साधको! यक्षिणियाँ अनेक हैं और विभिन्न स्थानों पर इनकी साधना करने का उल्लेख शास्त्रों में प्राप्त होता है।

महानिर्वाण तंत्र शास्त्र के अनुसार

[शिव उवाच]

श्रृणु सिद्धं महायोगिन्यक्षिणी मंत्र साधनम्।
यस्यं साधन मात्रेण नृणां सर्वे मनोरथाः॥
आषाढ़ी पूर्णिमायां च कृत्वा क्षौरादिकाः क्रियाः।
सितेज्य योरमोदये तु साधयेद्यक्षिणी नरः॥
प्रतिपद्दिन मारभ्य श्रावणेन्दु बलान्विते।
मास मात्रं प्रयोगं तु निर्विघ्ने समाचरेत्॥

हिन्दी अनुवाद–भगवान महाकाल शिव बोले हे सिद्ध योगियो! अब मैं आप सब को यक्षिणी साधना की विधि बतताला हूँ, जिसे करने से मानव को समस्त कार्यों में सिद्धि वे सफलता प्राप्त होती हैं। यह साधना प्रारम्भ करने वाले साधक को आषाढ़ मास की पूर्णिमा को सिर का मुण्डन, दाढ़ी मूंछ का मुण्डन एवं नख कटवाना चाहिए। श्रावण मास की प्रतिपदा (शुक्लपक्ष) से श्रावण पूर्णिमा तक की रात्रि में अर्थात् एक मास तक निर्विघ्न साधना पूर्ण करनी चाहिए।

[श्लोक]

निर्जने बिल्ववृक्षस्य मूले कुर्याच्छि वार्चनम्।
षोड़शोपचार कैस्तु रुद्रपाठ समन्बितम्॥
गुरु कवच धारंण त्रयम्बक मंत्रस्य जपं पंचसट्त्रकम्।
द्विवसे—द्विवसे कृत्वा कुबेरस्य य पूजनम्॥

हिन्दी अनुवाद–यक्षिणी साधना आरम्भ करने से पूर्व एकान्त स्थान में बिल्ववृक्ष की मूल (जड़) के पास बैठकर शिव की अर्थात् हमारी ''षोड़शोपचार पूजन'' करे [यह षोड़शोपचार पूजन किसी वैदिक ''महाकाली साधना'' शीर्षक में वर्णित है, उसी विधि के अनुसार सम्पन्न करें। उस विधि में जहाँ पूजन वस्तु समर्पित करते समय महाकाली का नाम है, उस जगह उन नाम के साथ भगवान शिव के नाम का भी उच्चारण करें] साधना आरम्भ करने से पूर्व गुरू द्वारा प्राप्त ''सिद्ध गुरु कवच यंत्र'' पहले गले में धारण करें, इसके पश्चात् षोड़शोपचार पूजन करें। पूजन के पश्चात्–निम्न मंत्र का 5 हजार जप करें।

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनम्।
उर्व्वारुक मिव वन्धनान्मृत्यो मुक्षीय मामृतात्॥

षोड़शोपचार पूजन के अन्तर्गत ''महाकाली साधना'' विधि शीर्षक में वर्णित

भगवान विष्णु एवं पंचदेवता का पूजन (पंचोपचार पूजन) के अनुसार प्रधान यक्ष श्री कुबेर का पूजन करें। उक्त पूजन में जहाँ-जहाँ "विष्णवे नमः" लिखा है, उस स्थान पर "श्री कुबेराय नमः" उच्चारण करें।

(नोट-भगवान शिव का षोड़शोपचार पूजन एवं कुबेर पूजन हेतु अमित पाकेट बुक्स से प्रकाशित हमारी लिखी हुई "शिव उपासना" पुस्तक का अध्ययन कर आसानी से स्वयं ही पूजन सम्पन्न कर सकते हैं) नित्य ही श्री कुबेर का पंचोपचार पूजन करने के पश्चात् ही मंत्र जप आरम्भ करें। श्री कुबेर का निम्न श्लोक द्वारा ध्यान करें।

श्री कुबेर ध्यान मंत्र

यक्षराज नमस्तुभ्यं शंकरप्रिय बांधव।
एकां में वरागां नित्यं यक्षिणीं कुरु ते नमः॥
इति मंत्र कुबेरस्य जपेदष्टोत्तरं शतम्।
ब्रह्मचर्येन मौनेन हविष्यासि भवेद्दिवा॥

भावार्थ-"हे भगवान त्रिलोकी नाथ शिव के बंधु, महाकाली की सहायिका आपको नमस्कार है। कृप्या आप एक यक्षिणी को मेरे अधीन करें।"

उपरोक्त मंत्र का जप नित्य ही 108 बार करके ही यक्षिणी साधना जप किया करें। जप करने के बाद "हविष्यान्न" अर्थात् हवन में आहुति डालने वाली वस्तुओं का भोजन करें, जैसे-मीठा चावल, तिल के लड्डू, गाय का दही, नारियल, गुड़ आदि।

समस्त ऐश्वर्यों की प्राप्ति हेतु श्री महायक्षिणी साधना

शिव उवाच

[श्लोक]

ॐ क्लीं ऐं श्रीं महायक्षिण्यै सर्वेश्वर्य प्रदात्र्यैनमः।
इति मंत्रस्य च जपं सहस्त्रय समन्वितम्।
रात्रेस्तु मध्यमे यामे विनिन्द्रो मित भोजनः॥
बिल्व वृक्ष समारूह्यं जपेनमंत्र मिमं सदा।
कुर्याद्बिल्व समारूढो मास मात्रम तंद्रितः॥
मध्यममिष बलिं तत्र कल्पयेत संस्कृतं पुरः।
नाना रूप धरा तत्रागमिष्यति च यक्षिणी॥
ता दृष्टवा न भयं कुर्याज्ज पेत्संसक्त मानसः।

यश्मिन्दिनं बलिं भुक्त्वा वरं दातुं समर्थयेत॥
तदा वाराञ्चै वृणु यात्तां रत्तान्चै मनसेप्सि तान।
चेत्प्रसन्ना यक्षिणी स्यात्सर्वं दद्यान्न संशयः॥

भावार्थ—भगवान शिव बोले—हे योगियों! साधक रात्रि के समय शैय्या त्याग कर, अल्प भोजन ग्रहण कर, बिल्प पत्र की मूल में कम्बल के आसन में बैठकर, भगवान शिव अर्थात् मेरा और कुबेर का पूजन कर—

ॐ ह्रीं क्लीं ऐं श्रीं महायक्षिण्यैः सर्वेश्वर्य प्रदात्र्यै नमः

मंत्र का एक महीने तक नित्य 1000 (एक हजार) बार जप करे तो महायक्षिणी प्रसन्न होकर प्रकट हो जाती हैं। वे अनेक रूप में आती हैं। उनके भयानक रूप को देखकर भयभीत न होते हुए लगातार जप करते रहना चाहिए। ऐसा करते रहने से महायक्षिणी बलि मांगती हैं। बलि कोहड़े फल (पैठा) की देनी चाहिए और भोजन के रूप में मिठाईंयाँ प्रदान करनी चाहिए। जब महायक्षिणी साधक को वर मांगने को कहे तो इच्छित वस्तुएं मांग लेनी चाहिए। प्रसन्न होकर महायक्षिणी साधक को सब कुछ प्रदान कर देती है॥

[श्लोक]

अशक्तस्तु द्विजैः कुर्य्यात्प्रयोगं सुरपुजितम्।
सहाया नथवा वा गृह्य ब्राह्मणैः साधयेत व्रतम॥
तिस्त्रः कुमारिका भोज्याः परमान्नेन नित्यशः।
सिद्धे धनादिके चैव सदा सत्कर्म चाचरेत्।
कुर्कमणि व्यवस्चेत्स्या त्सिद्धि र्गच्छति नान्यथा॥

भावार्थ—साधक यदि स्वयं साधना न कर सके तो वैदिक पंड़ित से यह साधना सम्पन्न करा सकता है। साधक जब साधना प्राप्त कर ले तो नित्य ही तीन कुमारी कन्यावों को मीठा भोजन करावे। यह कराने से महायक्षिणी उसके घर में धन का भंडार भर देती हैं। साधक उस धन को अच्छे कार्यों में उपयोग करें, नहीं तो सिद्धि का फल बिल्कुल क्षीण हो जाता है।

बारह व्यक्तियों का दिव्य भोजन व वस्त्राभूषण नित्य ही प्राप्त कराने वाली श्री "कनका वती यक्षिणी साधना"

[श्लोक]

शिव उवाच—श्रृणु सिद्धं।

"ॐ ह्रीं कनका वती मैथुन प्रिये स्वाहा।"
मंत्रस्य वटमूल तलं गत्वा बलि च दापयेत।
एकसहस्त्र मंत्रान् जपेत् एवं सप्तदिन कुर्यात॥
अष्टम रात्रौ सा सर्वालकार युता आगच्छति।

साधकस्य भार्या—भवति॥

द्वादश जनानां वस्त्रालंकार भोजनादि ददाति।

भावार्थ—भगवान शिव बोले—हे सिद्ध ऋषियो! "ॐ ह्रीं कनका वती मैथुन प्रिये स्वाहा" मंत्र का 1000 बार जप नित्य ही लगातार सात रात्रि तक, वट वृक्ष के जड़ में बैठकर, पवित्र मन से जो साधक करता है और बलि प्रदान करता है, ऐसे साधक पर आठवें रात्रि में कनकावती यक्षिणी दिव्य शोभायमान होकर साधक की पत्नी के रूप में आती हैं और साधक को जीवन भर नित्य ही बारह व्यक्तियों का दिव्य भोजन व वस्त्राभूषण प्रदान करती रहती है।

दीर्घायु होने, साधना में सफलता पाने तथा अदृश्य होने हेतु "श्री मदना यक्षिणी साधना"

[श्लोक]

शिव उवाच, श्रृणु मुनिगण।
"ॐ ऐं मदने मदन विद्रावणे अंनंग,
संगमे देहि-देहि क्रीं क्रीं स्वाहा।"
मन्त्रस्य लक्षसंख्यं जपेन्मंत्रं राजद्वारे शुचिः स्थिरः।
सक्षीरैर्मालती पुष्पे घृत होमो—दशांशतः॥
मदनां यक्षिणी सिद्धा गुटिकां संप्रयच्छति।
तथा मुख्य स्थया दृश्य स्थिर स्थायी भवेन्नरः॥

भावार्थ—भगवान भोलेनाथ बोले कि हे सिद्ध ऋषियो! जो साधक—"ॐ ऐं मदने मदन विद्रा वणे अनंगं संगमे देहि—देहि क्रीं क्रीं स्वाहा" मंत्र का जप पवित्रापूर्वक एक लाख बार करता है, और जप पूर्ण होने पर चमेली के फूल, दूध व गाय के घी से दशांश हवन करता है, ऐसे साधक को श्री मदना यक्षिणी प्रसन्न होकर "गुटिका" [मंत्र साधना की गोली] प्रदान करती हैं। उसे मुख में रखने से साधक अदृश्य हो जाता है और अनन्त काल तक जीवित रहता है।

अमृत प्राप्त करने हेतु - "चंद्रिका यक्षिणी साधना"

[श्लोक]

भगवान शिव उवाच, श्रृणु सिद्धं
शुक्लपक्षेः जपत्तावद्यासत्सं दृश्यते विधुः।
प्रतिपत्पूर्व पूर्णान्तं नवलक्ष मिदं जपेत्॥
अमृंत चंद्रिका दत्तं पीत्वा जीवोऽमरो भवेत्।
"मंत्र ॐ ह्रीं चंद्रिके हंसः क्रीं क्लीं स्वाहा॥"

भावार्थ–भगवान शिव बोले–हे सिद्धगणों सुनो! जो साधक शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से पूर्णिमा की रात्रि तक में "ॐ ह्रीं चंद्रिके के हंसः क्रीं क्लीं स्वाहा" मंत्र का जप नौ लाख की संख्या में पूर्ण करता है, उस साधक पर प्रसन्न हो कर श्री चंद्रिका यक्षिणी ने अमृत से भरा पात्र प्रदान करती हैं, जिसे पीकर साधक 'अमर' हो जाता है।

"दिव्य रसायन" प्राप्त कराने वाली "श्री लक्ष्मी यक्षिणी साधना"

[श्लोक]

श्री महाकाल उवाच, श्रृणु सिद्धं।
"ॐ ऐं लक्ष्मी श्रीं कमलधारिणीं कलहंसि स्वाहा।"
स्वगृहे संस्थितो रक्तैः करवीर प्रसूनकैः।
लक्ष्मार्वत येन् मन्त्रेण होमं कुर्याद्दशांशतः।
होमे कृते भवेत्सिद्धा लक्ष्मीनाम्नो च यक्षिणी॥
रसे रसायनं दिव्यं विधानं च प्रयच्छति।

हिन्दी अनुवाद–श्री महाकाल शिव बोले–हे सिद्ध गण ! जो साधक मंत्र-"ॐ ऐं लक्ष्मीं श्रीं कमलधारिणीं कलहंसी स्वाहा"–मंत्र का जप अपने निवास गृह में ही एक लाख संख्या में पूर्ण कर, तथा जप मंत्र का दशांश हवन करता है, उन पर श्री लक्ष्मी यक्षिणी प्रसन्न हो जाती हैं। प्रसन्न होकर वे साधक को "दिव्य रसायन" प्रदान करती हैं। देवी लक्ष्मी यक्षिणी की पूजा लाल कनेर के पुष्पों से करनी चाहिए।

समस्त उपभोग सामग्री प्रदान कराने वाली श्री शोभना यक्षिणी साधना

[श्लोक]

शिव परमेश्वर उवाच– श्रृणु ऋषिगण।
"ॐ अशोक पल्लवाकार करतले शोभनी श्रीं क्षः स्वाहा"
मंत्रस्य रक्त मलांवरो मंत्रं चतुर्दशादिने जपेत।
ततः सिद्धाः भवेद्देवी शोभना भोग दायिनी।

हिन्दी अनुवाद–परमेश्वर भगवान त्रिनेत्र शिव बोले–हे ऋषिगणों! जो साधक लाल वस्त्र चतुर्दशी की रात्रि में धारण कर, लाल माला से [मूंगा की माल] शोभना यक्षिणी का मंत्र शिवालय में बैठकर, एक महीने में 5 लाख मंत्र का जप करता है, उसके समक्ष शोभना यक्षिणी प्रसन्न हो प्रकट होकर समस्त मनोकामना पूर्ति का वरदान देती हैं। मंत्र इस प्रकार हैं–

"ॐ अशोक पल्लवा कार करतले शोभनीं श्रीं क्षः स्वाहा।"

असाध्य रोग से मुक्ति हेतु-दिव्य महारसायन प्राप्त कराने वाली श्री "विशाला यक्षिणी साधना"

[श्लोक]

श्री शिव उवाच, श्रृणु ऋृषिगणः।
मंत्रं—"ॐ ऐं विशाले त्रां त्रीं क्लीं स्वाहा॥"
चिंचावृक्ष तले लक्षं मंत्रमावर्त येच्छुचिः।
शतपुष्पोद्द् भवैः पुष्पैः सघृते होम माचरेत्॥
विशाला चं ततस्तुष्टा दत्ते दिव्यं महा रसायनम्॥

हिन्दी अनुवाद–भगवान शिव ने कहा– हे मुनिगण! जो साधक "ॐ ऐं विशाले त्रां त्री क्लीं स्वाहा"–मंत्र का जप इमली वृक्ष के नीचे बैठकर [रात्रि काल, प्रारम्भ रात्रि से 30 वें रात्रि तक में] सम्पन्न करता है। जप के बाद इमली या सौंफ के पुष्पों को घी में मिलाकर दशांश हवन करता है, उनपर विशाल यक्षिणी प्रसन्न हो प्रकट होकर "दिव्य महारसायन" प्रदान करती हैं, जिसे पीकर असाध्य रोगी स्वस्थ हो जाता है।

दिव्य द्रव्य, वस्त्र व दिव्य वैभव प्रदान करने वाली श्री सुर सुन्दरी यक्षिणी साधना

[श्लोक]

श्री महेश्वर उवाच, श्रृणु सिद्धः।
"ॐ ह्रीं आगच्छ सुर-सुन्दरी स्वाहा॥"
मंत्रस्य पवित्र गृहं गत्वा पूजनं कृत्वा गुग्गुल
धूंप दत्तवा त्रिसंध्यं पूजयेत्रि-सहस्त्रं
नित्यं जपेत् मासा मध्यन्तरे॥
आगतायै चंदनो दकेनार्यो देयः।
मातृ भगिनी भार्य्या कृत्यं करोति॥
यदा माता भवति सिद्ध द्रव्याणि ददाति।
यदि भगिनी भवति तदा दिव्यं वस्त्रं ददाति॥

यदि भार्या भवति तर्हि सर्वेश्वर्य सर्वेषां परिपूरयेत।
वर्जये दन्या स्त्रियां सह शयनम अन्यथा विनश्येति॥

हिन्दी अनुवाद–श्री महेश्वर त्रिनेत्र महादेव बोले–हे सिद्ध गणों, सुनो! जो साधक पवित्र स्थान में बैठकर, एक मास की रात्रि में नित्य तीन हजार बार जप करता है, उनपर प्रसन्न होकर "सुर सुन्दरी यक्षिणी" प्रकट होती हैं। मंत्र इस प्रकार है–"ॐ ह्रीं आगच्छ सुर सुन्दरी स्वाहा।" साधक के समक्ष जब सुर–सुन्दरी यक्षिणी प्रकट हों तो उन्हें चन्दन युक्त जल से अर्घ्य प्रदान करना चाहिए। ये यक्षिणी तीन स्वरूपों में से एक स्वरूप में प्रकट होती है।

यदि माता के रूप में प्रकट होती है तो "दिव्य द्रव्य" प्रदान करती है। बहन के रूप में प्रकट होने पर दिव्य वस्त्र, स्त्री के रूप में प्रकट होने पर द्विय मनोभिलाषा पूर्ण करती है। जब यक्षिणी पत्नी रूप में साधक के पास रहे तो साधक को अन्य स्त्री के साथ सम्भोग नहीं करना चाहिए, ऐसा करने पर साधक की मृत्यु हो जाती है।

सौ स्वर्ण मुद्राएँ नित्य प्राप्त कराने वाली श्री मनोहरी यक्षिणी साधना

[श्लोक]

प्रलयंकर शिव उवाच–श्रृणु मुनिगणः।
"मंत्र–ॐ आगच्छन्तु मनोहरि स्वाहा॥"
नदी संगमे गत्वा चंदनेन मंडलं कृत्वा अगरू धूपं
दत्त्वा मासोपरि आगतां पूजयेत। यदा आगच्छन्ति तथा चंदनेनार्घे
देयः। पुष्प फलैरेक चित्ते नार्चनं कर्त्तव्यम्। अर्द्धरात्रे नियतमा गच्छति।
आगतायां सत्या मार्ज्ञं देहि सुवर्ण शतं
च प्रतिदिनं ददाति।

हिन्दी अनुवाद–भगवान प्रलयंकर महादेव बोले हे मुनिगण सुनिये! जो साधक नदी के किनारे पर जाकर, चंदन का घेरा बनाकर, अगर की धूप जलाकर–"ॐ आगच्छन्तु मनोहरी स्वाहा" मंत्र का जप लगातार एक महीने की रात्रि में 3 लाख जप पूर्ण करता है, उन पर प्रसन्न होकर मनोहरी यक्षिणी प्रकट हो जाती हैं। जब वो प्रकट हो तो साधक उन्हें चन्दन की अर्घ्य अर्थात् चन्दन मिश्रित जल से अर्घ्य प्रदान कर, उनका पंचोपचार पूजन करे और पुष्प माला तथा फल आदि भेंट करें। इस प्रकार उनकी पूजा करने पर मनोहरी यक्षिणी ने साधक को जीवन भर नित्य ही 100 स्वर्ण मुद्राएँ प्रदान करती रहती है।

दिव्य अलंकार नित्य प्राप्त कराने वाली "श्री कामेश्वरी यक्षिणी साधना"

श्री शम्भु उवाच, श्रृणु ज्ञाणी मुनियः।
"मंत्र—ॐ आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा।"
भोजपत्रे गोरोचनने प्रतिमां विलिख्यतां देवी
पूजयेत शय्यामारूह्य एकाकी सहस्त्रं जपेत्।
मासान्तं व पूजयेत घृत दीपो देयः पश्चान्मौनि
भूतवा पूजयेत। ततो अद्धरात्रे नियतमागच्छति।
साधकस्य भार्या भवति। प्रतिदिनं शयने
द्व्यालंकरान परित्यज्य गच्छति। पर स्त्री परिवर्जनीया इति॥

हिन्दी अनुवाद—भगवान शिव बोले— हे सिद्ध ऋषियो! इस साधना में साधक भोजपत्र पर गोलोचन की स्याही और अनार की कलम से देवी कामेश्वरी का (स्त्री चित्र) चित्र बनावें, तत्पश्चात् उनका पंचोपचार पूजन करें। फिर शय्या पर बैठकर मंत्र—"ॐ आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा" मंत्र का 1000 संख्या जप एक महीने की रात्रि तक लगातार करें। घी का दिए जलाकर मौन रहकर पूजन व जप करें, तो अन्तिम जप की रात्रि में देवी कामेश्वरी साधक के समक्ष उपस्थित होकर दिव्य अलंकार प्रदान करती हैं। यह साधना के बाद साधक अन्य स्त्री से सम्पर्क छोड़ दे या भूल से भी न करें।

नोट—साधको! निम्न लिखित यक्षिणीयों की साधनाएँ भी महानिर्वाण तंत्र शास्त्र अर्थात् अति प्राचीन तंत्र शास्त्र से ही वर्णित हैं, जिसका स्थाना भाव के कारण मात्र हिन्दी अनुवाद रूपों का वर्णन दे रहा हूँ, जो शब्दसः संस्कृत श्लोक का ही अनुवाद है। साधक इन साधनावों को सम्पन्न कर पूर्ण लाभान्वित हो सकते हैं।

श्री सुलोचना यक्षिणी सिद्धि विधि एवं मंत्र

साधना विधि—बहती दरिया के तट पर बैठकर, नीचे लिखित मंत्र का 3 लाख जप एक महीने की रात्रि में सम्पन्न कर, अन्तिम दिन मंत्र का दशांश भाग मंत्र जपते हुए हवन में आहुति डालें। जप आरम्भ करने से पहले महाकाली का "षोड़शोपचार" पूजन करें। उपरोक्त विधि से जप करने पर साधक पर प्रसन्न होकर श्री सुलोचना यक्षिणी ने विचित्र खड़ाऊ (पादुका) प्रदान करती हैं, जिसे पहन कर साधक मनोवेग से समस्त भूमण्डल का भ्रमण कर सकता है।

साधना मंत्र

"ॐ क्लीं सुलोचनादि देवी स्वाहा।"

मनचाही वस्तु तुरंत प्राप्त करने हेतु श्री धूम्रा यक्षिणी सिद्धि साधना व मंत्र

साधना विधि—अन्य यक्षिणी साधनावों से यह साधना विधि में कुछ अन्तर हैं। साधक यह साधना कार्तिक कृष्णपक्ष त्र्योदशी से आरम्भ करे और शुक्ल प्रतिप्रदा को साधना की पूर्णा हुति करे। इस दौरान निम्नलिखित मंत्र का नित्य ही एक हजार बार जप करें। अन्तिम दिन 11 माला मंत्र जप करते हुए हवन में आहुत डाले। उपरोक्त विधि से साधना सम्पन्न करने वाले साधक को श्री धूम्रा यक्षिणी पूजा सामग्री, फल, फूल, मेवा, दिव्य भोजन आदि इच्छा करते ही तुरन्त प्रदान करती है।

साधना मंत्र—

ॐ नमो धरणीन्द्रे पद्मावती आगच्छागच्छ कार्य कुरु-कुरु, जहां भेजूं वहां जाओ, जो मंगाऊं आन देवो न आन देवो तो श्री पार्श्वनाथ की आन सत्यमेव कुरु-कुरु स्वाहा।

नोट—यह साधना बिल्व वृक्ष के नीचे एकान्त स्थान में करें।

अदृश्य होकर समस्त पृथ्वी का विचरण कराने वाली श्मशानी यक्षिणी साधना, विधि और मंत्र

साधना विधि—यह साधना आश्विनी मास के प्रथम नव से दिवाली की रात्रि तक करने का विधान है। साधक महाकाली मंदिर में रात्रि 10 बजे यह साधना आरम्भ करें और 5 बजे प्रातः काल तक जप करें। इस अवधि में चार लाख मंत्र जप सम्पन्न करें। तत्पश्चात् एक लाख मंत्र द्वारा हवन में आहुति डाले तो श्मशान यक्षिणी प्रकट होकर साधक को दिव्य वस्त्र प्रदान करती हैं, जिसे धारण कर साधक अदृश्य होकर सम्पूर्ण पृथ्वी का भ्रमण मनोवेग से कर सकता है। ऐसे साधक को सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्राप्त हो जाता है, परन्तु यह साधना निर्वस्त्र होकर करनी चाहिए।

"ॐ हूं ह्रीं स्फूं श्मशान वासिनी श्मशाने स्वाहा।"

पर्वत एंव वृक्ष को हवा में उड़ाने वाली "महामाया यक्षिणी साधना" विधि एवं मंत्र

श्मशानी देवी की विधि पूर्वक महाकाली मंदिर में [षोड़शोपचार विधि] पूजन सम्पन्न करें तथा दशांश हवन करें। मंत्र जप मौन होकर करें। उपरोक्त विधि द्वारा साधना सम्पन्न करने पर महामया यक्षिणी प्रकट होकर साधक को एक

अद्भुत रसायन प्रदान करती हैं, जिसे ग्रहण कर साधक चिरंजिवी हो जाता तथा वृक्ष तथा पर्वतों को निम्न मंत्र द्वारा हवा में उड़ाने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

साधना हेतु मंत्र

ॐ महाभये हुं फट स्वाहा।

नोट–''किङ्किणी तंत्र'' में कहा गया है कि इस मंत्र का जप यदि साधक मनुष्य मुंडों की माला धारण कर एक लाख जप पूर्ण करे तो वह साधक मृत व्यक्ति को जी!वित कर देने की शक्ति भी प्राप्त कर लेता है।

पाताल में स्थित खजानों का पता लगाने व निकालने हेतु - ''महेन्द्रिका यक्षिणी साधना''

साधना मंत्र

ॐ ऐं क्लीं ऐन्द्रि माहेन्द्रि कुल कुल चुलु चुलु हंस स्वाहा।

साधना विधि–आकाश में जब इन्द्र धनुष दिखाई पड़े तो उस समय निर्गुण्डी वृक्ष के जड़ के पास बैठकर उपरोक्त मंत्र का विधि पूर्वक जप आरम्भ करें। तत्पश्चात् लगातार एक महीने में एक लाख जप पूर्ण करें। इसके माहेन्द्रि यक्षिणी साधक को पाताल की सिद्धिया प्रदान करती हैं और साधक पाताल में स्थित खजानों को देख सकता है एवं प्राप्त भी कर सकता है। इस साधना को ''पाताल भैरवी'' साधना के नाम से भी जाना जाता है। यह महाशक्तिशाली यक्षिणी हैं और इनकी साधना अभूत पूर्व साधना हैं।

मानव को स्तम्भित करने वाली ''कालकर्णी यत्रिणी साधना''

साधना मंत्र–

ॐ ऐं पुरं क्षोभय क्षोभय भगवती गम्भीर स्वक्लें स्वाहा।

साधना विधि–आषाढ़ी पूर्णिमा के दूसरे दिन अर्थात् श्रावण कृष्ण पक्ष प्रतिपदा को यह साधना आरम्भ कर श्रावणी पूर्णिमा को समाप्त की जाती है। जातक इमली वृक्ष के नीचे बैठकर, षोड़शोपचार पूजन सम्पन्न कर उपरोक्त मंत्र का एक लाख जप परिपूर्ण करें। जप समाप्त होने के बाद मरूआ की समिधावों पर, घी और धतूरे के बीज से उसमें शहद मिलाकर मंत्र संख्या को दशांश आहुति डाले। इससे प्रसन्न होकर भगवती यक्षिणी साधक के आवाहन पर साधक की इच्छानुसार मानव को स्तम्भित कर देती हैं तथा साधक को सुखी रखती है। ध्यान रखिये, ये यक्षिणी विविध प्रकार के आश्चर्य भी प्रकट करती है।

यक्षिणियों को प्रकट होने के लिए मज़बूर करने वाला अमोध मंत्र व मुद्राएँ

साधको ! साधना मंत्र की संख्या पूर्ण होने पर भी यदि यक्षिणी प्रकट नहीं हो रही हैं तो नीचे लिखित मंत्र मुद्रावों का प्रयोग करें। इस प्रयोग से देवी यक्षिणी को प्रकट होने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

निम्न मंत्र का जप क्रोधित होकर और जोर-जोर से कीजिए-

ॐ कह कह "अमुक" यक्षिणी ह्रीं यः हूं फट्।

नोट-उपरोक्त मंत्र का जप निम्न मुद्रा बनाकर करें-दोनों मुट्ठी बांधकर दोनों कनिष्ठाओं से उसे वेष्टित करें, और तर्जनी फैलाकर मोड़ लें। यह "क्रोधांकुश" मुद्रा है। इस मुद्रा में क्रोधित होकर उपरोक्त मंत्र जप करने से तुरंत ही यक्षिणी प्रकट हो जाती है।

5



श्री महाकाली की रणक्षेत्र शक्तियाँ विभिन्न योगिनी सिद्धि खण्ड

नोट–साधको! यहाँ मैं "योगिनी" साधनावों की जानकारी दे रहा हूँ। ये साधना "प्राचीन डामर तंत्र " में वर्णित है। ये योगिनियाँ प्रलय काल में रणक्षेत्र में, या दुष्टों के संहार हेतु युद्ध क्षेत्र में महाकाली का साथ निभाती हैं और दुष्ट दानवों के रक्त को पीती हैं, यहाँ तक कि दुष्ट असुरों के हाड़–मांस भी चबा कर चट कर जाती हैं। डामर तंत्र में वर्णित इन साधनावों का मूल संस्कृत श्लोक सहित "हिन्दी अनुवाद" रूप साधकों की साधना हेतु वर्णन कर रहा हूँ। परन्तु याद रहे, यक्षिणी की साधना हो या योगिनी की साधनाएँ, बिना सिद्ध गुरू की आज्ञा लिए और बिना "सिद्ध गुरू कवच यंत्र" धारण किये यदि साधना आरम्भ करेंगे तो प्राण से हाथ धोने पड़ जायेंगे।

जब भगवान शिव ने "उन्मत्त भैरव" का रूप धारण किए तो उनकी महाशक्ति उन्मत्त भैरवी ने उनसे पूछी–

[श्लोक]

उन्मत्त भैरवी ऊवाच–
भूतेश? परमेशान? खीन्द्वग्नि विलोचनः।
यदि तुष्टोऽसि देवेश। योगिनी साधनं वदः ॥

हिन्दी अनुवाद–भगवती उन्मत्त भैरवी बोली–हे भूत नाथ महादेव! हे परमेश्वर! यदि मेरी सेवा से आप मुझपर प्रसन्न हैं तो "योगिनी साधना" के बारे में बतलाने की दया करें।

[श्लोक]

महाकाल उन्मत्त भैरवोवाच–
अथातः संप्रवक्ष्यामि योगिनी साधनोत्तमम्।
सवार्थ साधनं नाम देहिनां सर्व सिद्धिम्॥
अति गुह्या महाविद्या देवानामपि दुर्लभा।

यासामभ्यर्चनं कृत्वा यक्षेसो भुवनाधिपः ॥
तामामाद्यां प्रवक्ष्यामि सुराणां सुंदरि प्रिये।
यास्यास्चाभ्य र्चनेनैव राजत्वं लभते नरः ॥

हिन्दी अनुवाद–भगवान महाकाल उन्मत्त भैरव बोले–हे देवि भैरवी! "योगिनी साधना" अत्यन्त गोपनीय व दुर्लभ साधना है। इस साधना से समस्त सिद्धियाँ साधक की मुट्ठी में समा कर रह जाती हैं, अतः यह साधना देवों की दुर्लभ है। इसी महासाधना से "यक्षेश्वर" तीनों लोकों के स्वामी हुए। इस साधना से साधक को राजत्व राजा पद प्राप्त होता है।

श्री सुर सुन्दरी योगिनी साधना

[प्राचीन डामर तंत्र से उद्धृत]

[श्लोक]

महाकाल भैरवोवाच, श्रृणु देवि भैरवी—
प्रातः समुत्थाय कृत्वा स्नानादिकं शुभम।
प्रासादं च समासाद्य कुर्यादाचमनं ततः ॥
प्रणवांते सहस्त्रारं हुं फट् दिग्बंधनं चरेत्।
प्राणायामं ततः कुर्यानमूलमंत्रेण मंत्रवित ॥
षडंगं मायय कुर्यात पद्मष्ट दलं लिखेत्।
तस्मिन पद्मे तथा मंत्री जीवन्यासं समाचरेत ॥

हिन्दी अनुवाद–प्रातःकाल में स्नानादि से निवृत्त होकर साधक "ह्रीं" बीज मंत्र से आचमन करें। तत्पश्चात् "सहस्त्रचार हुं फट्" मंत्र से चारों दिशाओं का बंधन करे, फिर मूल मंत्र "ह्रीं" से "प्राणायाम" करें, तत्पश्चात् "षडंगन्यास" कर "ह्रीं" मंत्र से अष्टदल कमल की रचना करें। [अष्टदल कमल की रचना आम लकड़ी पर सिहांसन पर सफेद वस्त्र बिछाकर लाल अर्थात् रक्तचन्दन की स्याही व अनार की कलम से करें,] अष्टदल कमल की रचना होने के बाद उसमें सुर–सुन्दरी देवी का षोड़शोपचार पूजन करें, तत्पश्चात् देवी का ध्यान करना चाहिए। साधक देवी का ध्यान निम्न रूप में करे–"हे देवी ! आप पूनम के चांद के समान दिव्य कांति वाली, विचित्र वस्त्र धारिणी, स्थूल एवं उन्मत्त स्तनों वाली हैं। आप सर्वज्ञाता और अभय दात्री हैं।"

[श्लोक]

प्रणवांते भुवनेशि? आगच्छ सुर–सुन्दरी।
वह्नेर्जाया जपेन्मंत्रं त्रिसंध्यं च दिने-दिने।
सहस्त्रैक प्रमाणेन, ध्यात्वा देवीं सदा बुधः ॥
मासांत दिवसं प्राप्त बलिपूजां सुशोभनाम्।

कृत्वा च प्रजपेन्मंत्रं निशीथे सुर—सुन्दरी॥
सुदृढ़ साधकं ज्ञात्वाऽऽयाति सा साधकालये।
सुप्रेम्ना साधकाग्रे, सा सदा स्मेरमुखी ततः॥
दृष्टवा देवीं साधकेंद्रो दद्यात पाद्यादिक शुभम्।
सचंदनं सुमनसो दत्त्वा भिलषितं वदेत्॥
मातरं भगिनीं वाथ भार्यां वा भक्ति भावतः॥
यदि माता तदा वित्तं द्रव्यं च सुमनोहरम्॥
नृरपतित्वं प्राथितं यत्तद्दाति दिने-दिने।
पुत्रवत पालयेल्लोके सत्यं-सत्यं सुनिश्चतम्॥
स्वसा ददाति द्रव्यं च दिव्यं वस्त्रं तथैव च्।
दिव्यां कन्यां समानीय नाग कन्यां दिने—दिने॥
यद्यद् भूतं वर्तमानं भविष्यच्चैव किं पुनः।
तत् सर्वं साधकेन्द्राय निवेदयति निश्चितम्॥
यद्यत प्राथयते सर्वं सा ददाति दिने—दिने।
मातृवत् पालयेल्लोके कामना भिर्मनोगतेः॥
भार्या वा यदि सा देवी साधकस्य मनोहरा।
राजेन्द्रः सर्वराजानां संसारे साधकोत्तमः॥
स्वर्गे लोके च पाताले गतिः सर्वत्र निश्चिता।
यद्यद्दाति सा देवी कथितुं चैव शक्यते॥
तथा सार्द्धं च संभोगं करोति साधकोत्तमः।
अन्य स्त्री गमनं त्याज्य मन्यथा नश्यति ध्रुवम्॥

हिन्दी अनुवाद—इस महासाधना में साधक को एक महीने तक "त्रिकाल संध्या" करनी पड़ती हैं। तीनों संध्यावों में [प्रातः दोपहर और शायंकाल] नित्य ही—"आगच्छ सुर सुन्दरी स्वाहा" मंत्र का एक—एक हजार जप सम्पन्न करना चाहिए। अन्तिम दिन जप संख्या समाप्त होने पर देवी साधक को सामने जब प्रकट हों तो साधक चन्दन मिश्रित जल से उन्हें अर्घ्य प्रदान करे तथा उनको चरणों पर पुष्प अर्पण करें। तत्पश्चात् भगवती जब उन्हें वर मांगने को कहे तो साधक माता, बहन या भार्य शब्द से उन्हें सम्बोधित करें। यदि साधक माता रूप में सम्बोधित करता है तो देवी उन्हें अपार द्रव्य, राज्य तथा सम्पूर्ण इच्छित वस्तुएँ प्रदान कर पुत्र के समान पालन करती रहती हैं। बहन का सम्बोधन करने पर भांति—भांति के रत्न, स्वर्ण, दिव्य कन्या, दिव्य वस्त्र प्रदान करती तथा नित्य प्रति कालों की बातों की जानकारी देती है। साधक यदि भगवती को भार्या रूप में सम्बोधित करता है तो राजपद प्रदान करती तथा इच्छा करने पर स्वर्ग व पाताल का विचरण भी कराती है। साधक यदि इस देवी को भार्या रूप में ग्रहण करें तो किसी अन्य नारी से सहवास न करें, अन्यथा साधक का सर्वनाश कर देती है।

दस स्वर्ण मुद्राएँ नित्य प्रदान कराने वाली मनोहरा योगिनी साधना

[प्राचीन डामर तंत्र से प्राप्त]

[श्लोक]

महाकाल भैरवोवाच, श्रृणु भगवति भैरवी।
ततोऽन्यत् साधनं वक्ष्ये निर्मित ब्रह्मण पुरा।
नदी तीरं समासाद्य कुर्यात् स्नानादिकं ततः॥
पूर्ववत् सकलं कार्यं चंदनैर्मंडल लिखेत्।
स्वं मंत्रं तत्र संलिख्या वाह्य ध्यानेन्म नोहराम्॥
कुरंगनेत्रां शरविन्दु वक्त्रां विंबाधरां चंदन गंध लिप्ताम्
चीचां शुकां पीन कुचां मनोज्ञां श्यामा सदा कामदुदां विचित्राम्॥
एवं ध्यात्वा यजेद्देवी मुगरू धूप दीप कैः।
गंध पुष्पं रसं चैव ताम्बूलादीशंच मूलतः॥
तारं माया आगच्छ मनोहरे वह्नि वल्लभे।
कृत्वा युतं प्रतिदिनं जपेन्मंत्रं प्रसन्न धीः॥
मासांत दिवशं प्राप्य कुर्वाच्च जप मुत्तमम्।
आनिशीथं जपेन्मंत्रं ज्ञात्वा च साधक दृढम्।
गत्वा च साधना भ्यासे सुप्रसन्ना मनोहरा।
वरं वरय शीघ्र त्वं यत्ते मनसि वर्तते॥
साधकेन्द्रोऽपि तां भक्त्या पाद्याधैर चर्येन्मुद्रा।
प्राणायामं षडंगं च मायया च समाचरेत्॥
सद्यो बलिं दत्वा पूजयेद्य समाहितः।
चंदनोदक पुष्पेण फलेन च मनोहरा॥
ततोऽर्चिता प्रसन्न सा पुष्णाति प्रार्थितं च यत्।
स्वर्ण शतं साधकाय सा ददाति दिने—दिने॥
सावशेषं व्ययं कुर्यात स्थिते तत्र न दास्यति।
अन्यस्त्री गमनं तस्य न भवेत सत्यभीरितम्॥
अब्याहत गातिस्तस्य भवतीति न संशयः॥
इति ते कथिता विद्या सुगोप्या च सुरासुरैः॥
तब स्नेहेन भक्त्या च वक्ष्येऽहं पमेश्वरिः॥

हिन्दी अनुवाद–श्री महाकाल भैरव [भगवान शिव] बोले–हे भैरवी सुनिए! यह मनोहरा योगिनी की साधना है, जो ब्रह्मा जी ने मुझसे बताएं हैं। साधक नदी के किनारे पर स्नानादि से पवित्र होकर चन्दन का घेरा बनाएँ। फिर उस घेरे में चन्दन से ही–"ह्रीं आगच्छ मनोहरे स्वाहा" मंत्र लिखे और उसपर षोड़शोपचार पूजन कर उक्त मंत्र का ही नित्य एक मास तक (10000) दस हजार बार मंत्र जपन करें। मंत्र जप आरम्भ से पहले भगवती का ध्यान इस प्रकार करें–"हे देवी! आपके नेत्र हिरणी के समान हैं और आप पीले परिधान धारण करती हैं। स्तन पुष्ट वर्ण श्याम है। आप साधक की समस्त इच्छाएँ पूर्ण करती हैं।" इस साधना में अगर का धूप जलावे और दीप से "निराजन" करें। महीने के अंतिम दिन साधक की साधना पर भगवती प्रकट होकर वर देने को तैयार होती है। साधक को जब वर मांगने को कहे तो साधक सर्वप्रथम उन्हें चन्दन युक्त जल से उनके चरण को धोए, फिर "ह्रीं" मूल मंत्र द्वारा "प्राणायामं" व "षडंगं न्यास" विधि सम्पन्न कर, उनके समक्ष अपने अन्दर के समस्त अवगुणों के रूप में "कोहड़े की बलि" प्रदान करें। तत्पश्चात् उनके चरणों पे पंचोपचार पूजन करें। तब देवी प्रसन्न होकर साधक को इच्छित वर प्रदान करने के साथ–साथ जीवन–भर साधक को 10 स्वर्ण मुद्राएँ प्रदान नित्य ही करती रहती हैं। साधक यह स्वर्ण मुद्राएँ स्वयं कार्य में तथा धर्म कार्य में नित्य ही खर्च रहे, अन्यथा देवी स्वर्ण मुद्राएँ देना बंद कर देती हैं। साधना काल में साधक नारी के साथ सहवास भूल से भी न करें। हे देवी भैरवी! यह अति गुप्त विद्या है, जो सिर्फ केवल आपसे ही कही है।

योगिनी लोक का सैर कराने वाली, विविध द्रव्य व भोग्य पदार्थ प्रदान कराने वाली "विद्या योगिनी साधना"

[श्लोक]

ततो वक्ष्ये योगिनी विद्यां श्रृणुष्वै कमनाः प्रिये।
गत्वा वटतलं देवीं पूजयेत् साधकोत्तमः॥
प्राणायांम षडंगं च माययाथ् समाचरेत्।
सद्यो बलिं दत्त्वा पूजयेत्तां समाहितः॥
अर्घ्य मुच्छिष्ट रक्तेन दद्यातस्मै दिने–दिने।
प्रचंड वदनां गौरीं पक्वषिवां धरां प्रियाम्॥
रक्ताम्बर धरां वामां सर्वकाम प्रदां शुभाम्।
एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रम युतं साधकोत्तमः॥
सप्तदिनं समभ्यचर्य चाष्टमे दिवसेर्चयेत्।
कायेन मनसा वाचा पूजयेद्य दिने दिने॥

तारं मायां तथा कूर्चं रक्षा कर्मणि तद्बहिः।
आगच्छ कनकांते च बहिः स्वाहा महामनुः॥
आनिशीथं जपेन्मंत्रं बलिं दत्त्वा मनोहरम्।
साधकेन्द्र दृढं मत्वा प्रयाति साधकालये॥
साधकेन्द्रोऽपि तां दृष्ट्वां दद्यादर्घ्यादिकं ततः।
ततः सपरिवारेण भार्या स्यात्, काम भोजनैः॥
वस्त्रभूषादिकं दत्त्वा याति सा निज मंदिरम्।
एवं भार्या भवेन्नित्यं साधका ज्ञान रूपतः॥
आत्म भार्या परित्यज्य भजेत्तां च विचक्षणः॥

हिन्दी अनुवाद–महादेव उन्मत्त भैरव बोले–हे भवानी! अब मैं विद्या योगिनी साधना की विधि आपको बतला रहा हूँ। इस महायोगिनी की साधना करने वाले साधक वट वृक्ष के नीचे बैठकर ''ह्रीं'' मंत्र से प्राणायम, षडंग न्यास कर, देवी की विधि पूर्वक सात दिन तक पूजन करें तथा नित्य ही अपने अन्दर के दुर्गुणों की बलि कोहड़े फल द्वारा दे तथा नित्य ही 10 हजार उपरोक्त ''ह्रीं'' मंत्र का जप करें। जप आरम्भ से पूर्व देवी का ध्यान निम्न प्रकार करें–

''हे देवी! आपका मुखमण्डल विकराल है, आप गौर वर्ण, अधर बिंब फल के समान तथा लाल परिधान धारण करती और साधक की समस्त कामना पूरी करती हैं।'' नित्य ही पूजन के बाद अपने शरीर के रक्त से माँ को अर्घ्य प्रदान करें। आठवें दिन फिर बलि प्रदान कर जप करें तो देवी साधक के समक्ष उपस्थित हो जाती/हैं। उपस्थित होने पर साधक देवी की पूजा अर्चना करे तो देवी साधक की भार्या बनकर उसे योगिनी लोक का सैर कराती हैं तथा समस्त भोग्य पदार्थ प्रदान करती हैं। यह साधना सम्पन्न होने पर साधक अपनी पत्नी से वासना करना बिल्कुल छोड़ दे।

100 स्वर्ण मुद्राएँ नित्य प्राप्त कराने वाली ह्रीं गंधानुरागिणी योगिनी साधना

[श्लोक]

महायोगिनी प्रवक्ष्यामि सावधाना वधारया।
कुंकुमेन समालिख्य भूर्जपत्रे स्त्रियं मुदा॥
ततोऽष्टदल मालिख्य कुर्यान् न्यासादिकं प्रिये।
जीवन्यासं ततः कृत्वा ध्यायेतत्र प्रसन्नधीः॥
शुद्ध स्फटिक संकाशं नाना रत्न विभूषिताम्।
मंजीर हार केचुर रत्न कंडल मंडिताम्।

एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रं सहस्त्रं तू दिने दिने।
प्रतिपत्तथि मारभ्य पूजयेत् कुसुमादिभिः॥
धूप दीप विधानैश्च त्रिसंध्यं पूजयेन्मुदा।
पूर्णिमा प्राप्त गंधाद्यैः पूजयते साधकोत्तमः॥
घृत दीवं तथा धूपं नैवेद्य च मनोहरम्।
रात्रौ च दिवसे जाप कुर्याद्य सुसमाहितः॥
प्रभात समये याति साधकस्यांतिक ध्रुवम्।
प्रसन्न वदना भूत्वा तोषयेद्रति भोजनैः॥
देव दानव गंधर्व विद्या धृ-ग्यक्ष रक्षसाम्।
कन्याभि रत्नभूषाभिः साधकेन्द्र मुहुर्मुहुः॥
चर्व्यचोष्यादिकं सर्वं ध्रुवं द्रव्यं ददाति सा।
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले यद्वस्तु विद्यते प्रिये॥
आनीय दीयते सापि साधका ज्ञानु रूपतः।
स्वर्ण शतं समादाय सा ददाति दिने दिने॥
साधकाय वरं दत्त्वा याति सा निज मंदिरम्।
तस्या वर प्रदानेन चिरंजीवि निरामयः॥
सर्वज्ञः सुन्दरः श्रीमान् सर्वेशो भवति ध्रुवम्।
प्रभ वेत सर्वपूज्यश्च साधकेन्द्रो दिने दिने।
तारं मायां च गंधानुरागिणी मैथुन प्रिये।
वह्ने भार्या मनुः प्रोक्तः सर्वसिद्धि प्रदायकः॥
एषा मधुमती तुल्या सर्वसिद्धि प्रदा प्रिये।
गुह्याद गुह्यतरा विद्या तव स्नेहात् प्रकाशिता॥

हिन्दी अनुवाद—हे भवानी भैरवी! अब मैं ह्रीं गंधनुरागिणी योगिनी की साधना विधि आपको बता रहे हैं। इस महासाधना में साधक सर्वप्रथम भोजपत्र पर कुंकुम से नारी की आकृति बनावे, फिर उसके चारों तरफ अष्टदल कमल बनाकर न्यायासिद विधि सम्पन्न कर, उस नारी की आकृति में ''गंधानुरागिणी'' देवी की ''षोड़शोपचार विधि'' से प्राण प्रतिष्ठा करें।

इसके पश्चात् निम्न स्वरूप में उनका ध्यान करें—''हे देवी! आपकी देह की कान्ति शुद्ध स्फटिक के समान हैं और आप विभिन्न रत्न भूषणों से विभूषित हैं।'' तत्पश्चात् नित्य एक महीने तक (1000) एक हजार बार निम्न मंत्र का जप करें—

''ॐ ह्रीं गंधानुरागिणी मैथुन प्रिये स्वाहा।''

यह जप रात और दिन दोनों समय एक—एक हजार की संख्या में करें। पूर्णिमा के दिन घी का दीपक जलाकार पुनः षोड़शोपचरा पूजन करें। ऐसा करने से देवी

साधक पर प्रसन्न हो प्रकट होकर साधक को दिव्य भोज्य पदार्थ, रति क्रिया से संतुष्ट कर दिव्य कन्या लाकर देती हैं और नित्य ही एक सौ स्वर्ण मुद्राएँ भी प्रदान करती हैं। हे प्रिये! यह साधना समस्त सिद्धियाँ भी प्रदान करती हैं। यह साधना अति गोपनीय है, इसको मैंने केवल तुम्हारे प्रति स्नेह के कारण ही प्रकट किया है।

नाग कन्या सहित सौ स्वर्ण मुद्राएँ प्रदान कराने वाली तथा तीनों लोकों की बात बताने वाली "नटिनी साधना"

[श्लोक]

महाकाल उन्मत्त भैरेवोवाच, श्रृणु भगवति भैरवी।
ततो वक्ष्ये दिव्य नटिनी विश्वामित्रेण धीमता।
ज्ञात्वा या साधिता विद्यावला चातिबला प्रिये॥
प्राणवांते महामाया नटिनी पावक प्रिया।
माहविद्येह कथिता गोपनीया प्रयत्नतः॥
अशोकस्य तटं गत्वा स्नानं विधिवदाचरेत्।
मूलं मंत्रेण सकलं कुर्याच्च सुसमाहितः॥
त्रैलोक्य मोहिनिं गौरीं विचित्र वर धारिणीम्।
विचित्रा लंकृतां रम्यां नर्त्तकी वेश धारिणीम्॥
एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रं सहस्त्रं च दिने दिने।
बलिपहारैः संपूज्य धूप दीपौ निवेदयेत्॥
गंधं चंदन तांबूलं दद्यात्तस्यै सदा बुधः।
मासमे कंतु तां भक्त्या पूजयेत् साधकोत्तमः॥
मासांत दिवसं प्राप्त कुर्याच्च पूजनं महत्।
अर्द्धरात्रौ साधकं मत्वा याति सा साधकालयम्।
विद्याभिः सकलाभिश्च किंचत् स्मेरमुखी ततः॥
वरं वरय शीघ्रं त्वं यत्ते मनसि वर्त्तते।
तच्छ्रुत्वा साधक श्रेष्ठो भावयेन्मनसा धिया॥
मातरं भगिनीं वापि भार्यां वा प्रति भावतः।
कृत्वा संतोषयेद् भक्त्या नदिनी तत्करोत्यकलम्॥
माता स्याद् यदि सा देवी पुत्रवत् पालयेन्मुदा।
अन्नाद्यैरूप हारैश्च ददाति काम भोजनम्॥

स्वर्ण शतं सदा तस्मै सा ददाति ध्रुवं प्रिये।
यद्यत वांछित तत् सर्वं ददाति नात्र संशयः॥

हिन्दी अनुवाद–भगवान उन्मत्त भैरव बोले–हे देवी भैरवी! अब मैं आपको "नटिनी योगिनी" साधना विधि बता रहा हूँ, जिसकी साधना "महर्षि विश्वामित्र" ने भी की थी। साधक अशोक वृक्ष के नीचे बैठकर रात्रि के समय लगातार एक महीने तक नटिनी देवी के मंत्र का जप (1000) एक हजार नित्य सम्पन्न करें। जप करने से पूर्व नित्य ही देवी योगिनी की विधि पूर्वक पूजन भी करें। पूजन के बाद नटिनी योगिनी का ध्यान इस प्रकार करें–"हे नटिनी भवानी! आप मनोहारी हैं, आपका वर्ण गौर है तथा आपकी विचित्र वेश–भूषा है और भांति–भांति के आभूषणों से शुसोभित हैं।" एक महीना जप पूर्ण होने के दूसरे महीने की पहली रात्रि में पुनः जप आरम्भ करने से नटिनी योगिनी साधक के समक्ष प्रकट हो जाती हैं, और वर मांगने को कहती हैं। उस समय साधक उन्हें माता, बहन या पत्नी से सम्बोधित करें।

माता सम्बोधन करने से दिव्य भोजनादि देकर पुत्र के समान पोषण करती हैं। बहन सम्बोधित करने पर नागराज की कन्या लाकर देती हैं तथा तीनों कालों की बात बताती हैं। पत्नी रूप में अपार धन और एक सौ स्वर्ण मुद्राएँ नित्य प्रदान करती हैं।

स्वर्ग का अवलोकन कराने वाली पद्मिनी योगिनी साधना

(श्लोक)

महाकाल भैरवौवाच, श्रृणु भवगवति भैरवी।
ततोऽन्यत् साधनां वक्ष्ये स्वगृहे शिव सन्निधौ।
वेदाद्यां भुवनेशी चेहागच्छ पद्मिनी ततः॥
पावकश्‌ च महामंत्रः पूर्ववत् सकलं गतः।
मंडल चंदनैः कृत्वा मूलमंत्र लिखेत्ततः॥
पद्मननां श्यामवार्णां पीनोत्तुंग पयोधराम्।
कोमलांगी स्मरेन्मुखी रक्तोत पलदले क्षणाम्॥
एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रं सहस्त्रं च दिने दिने।
मासातें पूर्णिमा प्राप्य विधिवत् पूजयेन्मुदा॥
आनिशीर्थं जपं कुर्याद्दढा भ्यासेन साधकः।
सर्वत्र कुशलं दृष्ट्वा याति सा साधकालयम्॥
भूत्वा भार्या साधकं हितोषयोद्धि विधैरपि।

भोग्य द्रव्यै भूषणाद्यैः पद्मिनी सा दिने दिने॥
पतिवत् पालयेल्लोके नित्यं स्वर्गे च सर्वदा।
त्यक्त्वं भार्या भजेत्तं च साधकेन्द्रः सदा प्रियः॥

हिन्दी अनुवाद–महाकाल भैरव बोले–हे भैरवी! पद्मिनी भवानी (योगिनी) की साधना शिव मंदिर में अथवा अपने गृह के पूजा स्थल पर ही सिंहासन स्थापित कर, उस पर पद्मिनी देवी की पंचोपचार पूजन करे, फिर एक मास तक नित्य ही–''ॐ ह्रीं आगच्छ पद्मिनी स्वाहा'' मंत्र का 1000 एक हजार जप करें। जप से पूर्व यह ध्यान करे–हे देवी! आप कमल पर विराजित हैं, आप श्याम वर्ण हैं तथा स्तन स्थूल एवं उन्नत हैं। शरीर कोमल, हंसमुख और नेत्र कमल के समान लाल हैं। उपरोक्त विधि से उपासना करने पर ''भवानी पद्मिनी'' प्रकट हो साधक को समस्त उपभोग की वस्तुएँ प्रदान करती है तथा साधक की जब इच्छा होती है तो उसके स्वर्ग का अवलोकन कराती है। साधना मिलने के पश्चात् पत्नी के साथ सहवास न करें अन्यथा साधक का सर्वनाश हो जाता है।

6



भगवान शिव द्वारा वर्णित विभिन्न चमत्कारिक 'तंत्र प्रयोग'

[सिद्धि की आवश्यकता नहीं] [प्राचीन दत्तात्रेय तंत्र में वर्णित]

शत्रु मारण प्रयोग तंत्र

[शिव उवाच]

श्रृणु "दत्तात्रेय" महायोगिनी सर्वयोग विशारद्।
तंत्र विद्यां महागुह्यां देवनामपि दुर्लभाम्॥
तवाग्रे कथ्यते देव तंत्रविद्या शिरोमणिः।
गुप्तयाद् गुप्त्या महागुप्त्या शुप्त्या गुप्त्या पुनः पुनः॥
गुरू भक्ताय दातब्या नाभक्ताय कदाचन।
मम भक्त्ये कामनसे दृढ़चित्त युताय च॥
शिरो द्धास्सुतं द्धानं द्धातन्त्र कल्पकम्।
यस्मै कस्मै च दातव्यं नान्यथा मम भाषितम्॥

हिन्दी अनुवाद–त्रिनेत्र धारी भगवान शिव बोले हे "महायोगी दत्तात्रेय"! हे योगश्रेष्ठ ! "तंत्र विद्या" महागुप्त होने के कारण देवों को भी दुर्लभ है। मैं आज तुम्हें वह तंत्र विद्या का ज्ञान दे रहा हूं, जो महागुप्त होने के कारण गुप्त ही रखना चाहिए। जो साधक गुरूभक्त हो, जिसने "गुरू कवच यंत्र" धारण किया हो, उसे ही इस रहस्यमयी विद्या का ज्ञान देना चाहिए, परन्तु जो मेरी भक्ति न करता हो उसे इस विद्या का ज्ञान भूल से भी न दे। जरूरत पड़ने पर अपना शीश या पुत्र का शीश भले ही प्रदान कर दे, लेकिन अश्रद्धावान मानव को इस विद्या का ज्ञान कदापि नहीं देना चाहिए।

[श्लोक]

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि दत्तात्रेय तथा श्रृणु।
कलौ सिद्ध महामंत्रों विना कीलेन कथ्यते॥
न तिथिर्न न नक्षत्र नियमो नास्ति वासरः।
न व्रतं नियमो होमः कालबल विवर्जितम्॥
केवलं तंत्र मात्रेण औषधिः सिद्धि रूपिणी।
यस्य साधना मात्रेण क्षणात्सिद्धिश्य जायते॥

हिन्दी अनुवाद–हे सिद्ध योगी दत्तात्रेय! अब मैं घोर कलियुग में भी सिद्धि व सफलता दिलाने वाले तंत्र का प्रयोग बतला रहा हूँ, जो "कीलित" नहीं है। इन तंत्रों की साधना में तिथि, नक्षत्र, दिवस, उपवास, हवन, बंधन एवं कालादि के विचार की कोई जरूरत नहीं होती। यह वमहाऔषधि समान सिद्धि प्राणी क्षण भर में ही प्राप्त कर लेता है।

[शिव उवाच]

अथाग्रे संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं मारणाभिधम्।
सद्यः सिद्धिकरं नृणां श्रृणुष्वावहितो मुने॥
मारणं च वृथा कार्य यस्य कस्य कदाचन।
प्राणांत संकटे जाते कर्तव्यं भूति मिच्छता॥
ब्रह्मात्मानं तु विततं दृष्टवा विज्ञान चक्षुसा।
सर्वत्र मारणं कार्य मन्यथा दोष भाग्य भवेत्॥
तस्माद्रक्ष्यंः सदात्मा हि मरणं च क्वाचिच्चरेत।
कर्तव्यं मारणं चेस्त्यात्तदा कृत्यं समाचरेत्।

हिन्दी अनुवाद–भगवान शिव बोले–हे मुने! अब मैं मनुष्यों को शिघ्राति शीघ्र सिद्धि प्रदान करने वाले "मारण तंत्र" का ज्ञान दे रहा हूँ, एकाग्रचित होकर सुनो। इस महविद्या का प्रयोग बिना उद्देश्य कभी न करें। जब स्वयं के प्राणों पर संकट उपस्थित हो, तभी स्वंय की रक्षा हेतु इस महातंत्र का मनुष्य उपयोग करें। यह महातंत्र का प्रयोग इस प्रकार करना चाहिए।

1. (प्रथम मारण प्रयोग तंत्र श्लोक)

कृकलाया वसातैलं यस्यांगे बिदु मात्रतः।
निक्षिपेण म्रियति शत्रुर्यदि रक्षित शंकरः॥

हिन्दी अनुवाद–हे दत्तात्रेय! "गिरगिट" की चर्बी का तेल शत्रु के शरीर पर एक बूंद भी छिड़क दिया जाये तो शत्रु की मृत्यु अवश्य हो जाती है, उसे स्वयं मैं (शिव) भी रक्षा नहीं करते।

भगवान शिव द्वारा वर्णित पाँच "मोहन तंत्र प्रयोग"
(सिद्धि की आवश्यकता नहीं) (प्राचीन दत्तात्रेय तंत्र से उद्धत)

1. (प्रथम मोहन प्रयोग तंत्र श्लोक)

भगवन् शिव उवाच, श्रृणु मुनि दत्ताक्षेयः।
अथाः संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं मोहनाभिद्यम्।
सद्यः सिद्धिकरं मृणां श्रृणु योगीन्द्र यत्नतः॥

हिन्दी अनुवाद—भगवान शिव बोले—हे योगिनिष्ठ दत्तात्रेय जी!अब मैं "मोहनी मंत्र" का ज्ञान दे रहा हूँ इसके श्रवण मात्र से ही मानव सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

(श्लोक)

गृहीत्वा मूल ताम्बूलं तिलकं लोक मोहनम्।
सिदूंर कुंकुम चैव गोरोचन समन्वितम्॥
धात्री रसेन संपिष्टं तिलकं लोक मोहनम्।

हिन्दी अनुवाद— 1. पान की जड़ को पीसकर, उसका तिलक धारण करने से मानव किसी को भी मोहित कर सकता है।

2. केशर, सिंदुर, गोरोचन तीनों का आंवले के रस में पीसकर तिलक धारण करने से सर्वजन मोहित हो जाता है।

(द्वितीय मोहन प्रयोग तंत्र श्लोक)

श्वेत दुर्वा गृहीत्वा तु हरितालं च पेषयेत्।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः॥

हिन्दी अनुवाद—श्वेत दूर्वा अर्थात् सफेद दूर्व को हरताल के साथ पीसकर जो साधक उसका तिलक करता है, तीनों लोक उसके वश में हो जाता है।

(तृतीया मोहन प्रयोग तंत्र श्लोक)

तुलसी बीच चूर्णस्य सहदेब्या रसने च।
रवौ यस्तिलकं कुर्यान्मोहयेत्सकलं जगत्॥
हरतालं चाश्वगंधा पेषयेत्कदली रसैः।
गोरोचनेन संयुक्तं तिलकं लोक मोहनम्॥

हिन्दी अनुवाद—जो मानव रविवार के दिन तुलसी के बीजों का चूर्ण सहदेवी के रस में मिलाकर तिलक लगाता है, वह समस्त सृष्टि को मोहित कर लेता है।

इसी प्रकार अष्टगंध, गोरोचन, हरताल तीनों को केले वृक्ष के अर्क (रस) में पीसकर तिलक लगाने से मानव सभी को वश में कर लेता है।

(चतुर्थ मोहन प्रयोग तंत्र श्लोक)

भृंगराजे अपामार्गो लाजा च सहदेविका।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः॥

हिन्दी अनुवाद–जो मानव भांगरा, अपमार्ग (चिर चीरी) लाजवंती एवं सहदेवी को पीसकर, उसका तिलक लगाता है वह तीनों लोकों को वश में कर लेता है।

(पंचम मोहन प्रयोग तंत्र श्लोक)

श्वेतार्क मूल मादाय श्वेत चंदन संयुतम्।
अनेन लेपयेद्देहे मोहनं सर्वतो जगत॥
विजयापत्र मादाय श्वेतसर्षप संयुतम्।
अनेन लेपयेद्देहे मोहनं सर्वतो जगत्॥

हिन्दी अनुवाद–सफेद आक की जड़ को सफदे चन्दन के साथ पीसकर, उसका लेप शरीर में लेपन करने से मानव सृष्टि के समस्त जीवों को वश में कर लेता है। इसी प्रकार भांग को सफेद सरसों के साथ पीसकर, उसका शरीर पर लेपन करते रहने से जग मोहित हो जाता है।

भगवान शिव द्वारा वर्णित वशीकरण प्रयोग

(श्लोक)

भगवान शिव उवाच, श्रृणु योगी दत्तात्रेयः।
अथाग्र संप्रवक्ष्यामि वशीकरण मुत्तमम्।
यत्प्रयोग द्वशं यांति नरा नार्यश्च सर्वशः॥

हिन्दी अनुवाद–भगवान शिव बोले–हे योगी दत्तात्रेय! अब मैं आपको "वशीकरण तंत्र" का ज्ञान देता हूँ। जिससे सभी को वश में किया जा सकता है।

(श्लोक)

गृहीतवौ दुंबरं मूलं ललाटे तिलकं चरेत्।
प्रियो भवति सर्वेषां दृष्ट मात्रो न संशयः॥

हिन्दी अनुवाद–जो मानव गूलर की जड़ को पीसकर तिलक लगाता है, वह सभी को प्रिय हो जाता है और पान में गूलर जड़ का चूर्ण जिसे भी खिला दिया जाए तो वह खिलाने वाले के वश में हो जाता है।

(द्वितीय वशीकरण प्रयोग तंत्र श्लोक)

करपाद नखानां च भस्मं तांबूल पत्रके)
रविवारे प्रदातब्यं वशीकरणं अद्भुतम्॥

हिन्दी अनुवाद–जो मानव रविवार के दिन अपने दोनों हाथ व दोनों पैरों के

नाखूनों को काटकर, जला कर भस्म तैयार कर किसी स्त्री को पान या किसी वस्तु में खिला दिया जाय तो वह स्त्री खिलाने वाले के वश में हो जाती है।

(तृतीया वशीकरण तंत्र प्रयोग श्लोक)

जिह्वा मलं दंतमलं नासा कर्ण मलं तथा।
तांबूलेन प्रदातव्यं वशीकरणं अद्भुतम्॥

हिन्दी अनुवाद–जो मानव अपनी जिह्वा, दांत, नाक व कान के मैल को पान की बीड़ा में डालकर (सभी को जलाकर भस्म तैयार कर) किसी स्त्री को खिलाने से वह खिलाने वाले के वश में हो जाती है।

(चतुर्थ वशीकरण प्रयोग तंत्र श्लोक)

ब्रह्मदंडी वचा कुष्ठ चूर्ण ताम्बूल मध्यतः।
दापयेद्यं रवौ वारे स वश्यो वर्तते सदा॥

हिन्दी अनुवाद–हे मुने ! ब्रह्मदंडी, वच और कूट का चूर्ण रविवार के दिन तैयार कर, रविवार को ही पान के मध्य में रखकर किसी को खिलाने से, वह खिलाने वाले के वश में हो जाता है।

(पंचम वशीकरम प्रयोग तंत्र श्लोक)

बिल्वपंत्र च संग्राह्यां मातुलुंगुं तथैव च।
आजा दुग्धेन तिलकं सर्वलोक वशं करम्॥

हिन्दी अनुवाद–बिजौरा नींबू (बड़े आकार का नीबूं) के रस में बिल्वपंत्र को पीसकर, बकरी के दूध में मिलाकर, मस्तक पर तिलक धारण करने से साधक किसी को भी वश में कर सकता है।

नोट

साधको ! इस महाकाली सिद्धि पवित्र ग्रन्थ को यहीं विराम देता हूँ। महाकाली के "दस महाविद्या" साधना विधि की अलग पुस्तक "दस महाविद्या सिद्धि" नामक पुस्तक अमित पाकेट बुक्स जालंधर सिटी से अलग ही प्रकाशित हुई है। "दस महाविद्या सिद्धि" अति चमत्कारिक और सरल सिद्धियाँ है, जिससे दुनियाँ के अनेकों साधक लाभान्वित हो रहे हैं।

साधको के लाभ हेतु "प्राचीन दत्तात्रेय तंत्र" ग्रन्थ बहुत खोज के बाद प्राप्त हुआ है, जिसमें ऋषि–मुनियों, देवि देवताओं द्वारा साधना की मूल विधि व मंत्र "संस्कृत भाषा" में वर्णित है। साधकों के लाभार्थ संर्स्कत सहित मूल "हिन्दी अनुवाद" रूप दिया है। जो "दत्तात्रेय तंत्र" के नाम से प्रकाशित होगा। यह महान मूल प्राचीन दत्तात्रेय तंत्र के प्रकाशन का सौभाग्य की अमित पाकेट बुक्स को ही प्राप्त हुआ है। वर्तमान में देवि–देवताओं की उपासना साधना की पुस्तकें प्रकाशित कर संसार को लाभान्वित करने का श्रेय भी अमित पाकेट बुक्स को ही ज़ाता है।

हिन्दी अनुवाद–हे मुने ! ब्रह्मदंडी, वच और कूट का चूर्ण रविवार के दिन तैयार कर, रविवार को ही पान के मध्य में रखकर किसी को खिलाने से, वह खिलाने वाले के वश में हो जाता है।

(पंचम वशीकरम प्रयोग तंत्र श्लोक)

बिल्वपंत्र च संग्राह्यां मातुलुंगुं तथैव च।
आजा दुग्धेन तिलकं सर्वलोक वशं करम्॥

हिन्दी अनुवाद–बिजौरा नींबू (बड़े आकार का नीबूं) के रस में बिल्वपत्र को पीसकर, बकरी के दूध में मिलाकर, मस्तक पर तिलक धारण करने से साधक किसी को भी वश में कर सकता है।

नोट

साधको ! इस महाकाली सिद्धि पवित्र ग्रन्थ को यहीं विराम देता हूँ। महाकाली के "दस महाविद्या" साधना विधि की अलग पुस्तक "दस महाविद्या सिद्धि" नामक पुस्तक अमित पाकेट बुक्स जालंधर सिटी से अलग ही प्रकाशित हुई है। "दस महाविद्या सिद्धि" अति चमत्कारिक और सरल सिद्धियाँ है, जिससे दुनियाँ के अनेकों साधक लाभान्वित हो रहे हैं।

साधको के लाभ हेतु "प्राचीन दत्तात्रेय तंत्र" ग्रन्थ बहुत खोज के बाद प्राप्त हुआ है, जिसमें ऋषि–मुनियों, देवि देवताओं द्वारा साधना की मूल विधि व मंत्र "संस्कृत भाषा" में वर्णित है। साधकों के लाभार्थ संस्र्कत सहित मूल "हिन्दी अनुवाद" रूप दिया है। जो "दत्तात्रेय तंत्र" के नाम से प्रकाशित होगा। यह महान मूल प्राचीन दत्तात्रेय तंत्र के प्रकाशन का सौभाग्य की अमित पाकेट बुक्स को ही प्राप्त हुआ है। वर्तमान में देवि–देवताओं की उपासना साधना की पुस्तकें प्रकाशित कर संसार को लाभान्वित करने का श्रेय भी अमित पाकेट बुक्स को ही जाता है।

साधको ! सावधान ! कोई भी साधना जो इस पुस्तक में वर्णित है, वह साधना गुरू की आज्ञा के बिना या "सिद्धि गुरू कवच यंत्र" धारण किए बिना कदापि न करें। ऐसा करने पर होने वाले नुक्सान का जिम्मेदार स्वयं आप होंगे। "सिद्ध गुरू कवच यंत्र" या किसी भी प्रकार का सिद्ध यंत्र आप मेरे (लेखक के) कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

आप साधना में सफलता प्राप्त करें, इन्ही शुभ कामनाओं के साथ

तांत्रिक, ज्योतिष वाचस्पति
लेखक
"वाई. एन. झा. तूफान"
फोन नं० : 0181–490311
जालन्धर शहर (पंजाब)

विश्व प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य एवम्
धार्मिक पुस्तकों के लेखक
पण्डित वाई० एन० झा० 'तूफान'



अमित पाकेट बुक्स की कुछ अनमोल पुस्तकें

शिव उपासना	50.00	रामायण (1100 पृष्ट) बड़ी	350.00
गणेश उपासना	50.00	रामयण (1000 पृष्ट) बड़ी	250.00
शनि उपासना	50.00	रामयण (1136 पृष्ट) छोटी	150.00
हनुमान उपासना	50.00	सुख सागर बड़ी	250.00
सूर्य उपासना	50.00	सुख सागर छोटी	120.00
सरस्वती उपासना	50.00	शिव पुराण बड़ा	250.00
महालक्ष्मी उपासना	50.00	शिव पुराण छोटा	120.00
विष्णु उपासना	50.00	विष्णु पुराण बड़ा	150.00
गायत्री उपासना	50.00	विष्णु पुराण छोटा	80.00
नव दुर्गा पाठ	50.00	अमित राशीफल नए साल का	25.00
लाल किताब	85.00	सुन्दर कांड भाषा टीका	30.00
लाल किताब के टोटके	85.00	सम्पूर्ण व्रत और त्यौहार	50.00
विप्तीनाशक टोटके	50.00	मनु स्मृति	50.00
स्वप्न ज्योतिषफल	50.00	धन कमाने के 400 तरीके	50.00
ज्योतिष शास्त्र	40.00	निरोगी जीवन	100.00
जंत्र मंत्र तंत्र द्वारा भाग्य	50.00	आयुर्वेदिक घरेलू इलाज	50.00
जन्म कुण्डली और उपाय	70.00	जड़ी बूटियों द्वारा रोगोपचार	50.00
महा इन्द्रजाल 900 पेज	150.00	धन प्रदायक साधनाएं	50.00
वृहद महा इन्द्रजाल 1400 पेज	250.00	रत्न ज्योतिषफल	50.00

AMIT POCKET BOOKS
APB

अमित पाकेट बुक्स